जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

दिसम्बर २०१७ प्रथम पक्ष पृष्ठः ५२, मूल्य ७.०० रुपये

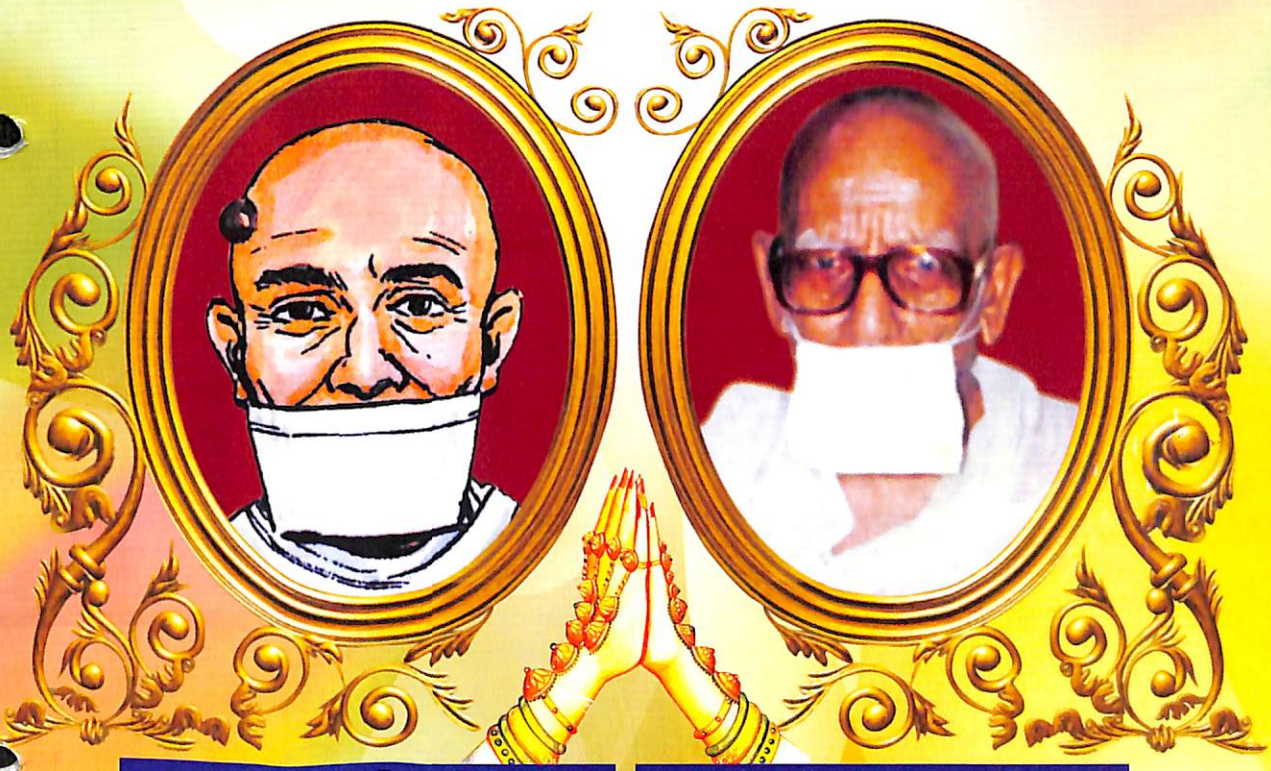

पू. तपस्वी श्री वेणीचन्द्र जी म.सा.
पुण्य स्मृति दिवस 17 दिसम्बर 2017

पू.प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी म.सा.
पुण्य स्मृति दिवस 22 दिसम्बर 2017

ध्यान साधना योग में प्रतिपल थे तल्लीन ।
अष्टकर्म क्षय कर लिए स्वयं बने स्वाधीन ॥
घोर तपस्वी वेणीचन्द्र जी जैसे गुरु अम्बेश
दिग दिगन्त में यश ध्वज फहरा हो गए मुक्ति प्रवीण॥

जय महावीर ! जय आत्म आनन्द देवेन्द्र शिव ! जय गुरु मरुधर केसरी ! जय गुरु गणेश ! जय गुरु केवल ! जय गुरु विजय ! जय गुरु पुष्कर !

पावन पुण्य स्मरण

स्व. श्री मोहनलालजी मुथा

(तात्कालीन अध्यक्ष-जैन कान्फ्रेंस, कर्नाटक)
(सुपुत्रः स्व. श्री सिरेमलजी मुथा)
अरिहंत शरण : 09.12.2012

स्व. श्री तरुणकुमार मुथा

(सुपौत्र : स्व. श्री मोहनलालजी मुथा)
सुपुत्र : महावीरचंद मुथा
अरिहंत शरण : 12.12.2004

स्नेह और सद्भाव आपका जीवन भर हमें याद रहेंगे। आदर्श आपके जीवन के, हमारा जीवन पथ प्रशस्त करेंगे।

सेठ स्व. श्री मोहनलालजी सा मुथा ने अपने अंतिम समय तक श्री अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक प्रांत के अध्यक्ष पद एवं श्री चिकपेट संघ एवं शांतिनगर संघ के अध्यक्ष पद पर रहते हुएअपनी अमूल्य सेवाएं समाज को प्रदान की । आप ने भगवान महावीर जैन कॉलेज, जैन इंटरनेशनल स्कूल एवं अन्य धार्मिक संस्थाओं में संस्थापक सदस्य एवं ट्रस्टी के रूप में अपनी कर्मठता एवं मार्गदर्शन से समाज को लाभान्वित करते हुए नई दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

श्रद्धासुमन अर्पणकर्ता

धर्मपत्नी : मैनाबाई पुत्र-पुत्रवधुः कल्पना-महावीरचंद, उषा-राजेशकुमार
पुत्री-जवांई : सूर्या-सुरेन्द्रजी गेलडा, चेन्नई, ललिता-श्रीकांतजी छल्लाणी, सिकन्द्राबाद
पौत्री-जवांईः रानू-शुभजी, कीर्ति-वैभवजी पारेख, अहमदाबाद
पौत्रीः सुमन पौत्रः शंखेश दौहित्रः धीर दोहित्रीः कियारा, आर्याना
सूरजमल, प्रकाशचंद, नथमल, महावीरचंद, राजेशकुमार, महेन्द्रकुमार, सुनीलकुमार
सुरेशकुमार, शंखेश एवं समस्त मुथा परिजन बेंगलूरु (मरुधर में बगडी नगर)

निवास : एस. मोहनलाल महावीरचंद राजेशकुमार मुथा
आशीर्वाद, नं, 51, बसप्पा रोड, शांतिनागर, बेंगलूरु - 560 027 फोन : 22291616
मो. 98450 43111, 93412 11953

सिंघी परिवार, बेंगलूरु/गुड़ियातम * गेलड़ा परिवार, चेन्नई * छल्लाणी परिवार, सिकंद्राबाद * सुराणा परिवार, सिकंद्राबाद
* छल्लाणी परिवार के.जी.एफ.(जेतारण), *बनर्जी परिवार, रांची /बेंगलूरु * पारेख परिवार, अहमदाबाद

प्रतिष्ठान

- ❖ Uusha Enterprises, Bengaluru/Chennai
- ❖ Uusha Communications, Bengaluru/Chennai
- ❖ Uusha Trading Co., Shantinagar, Bengaluru-27
- ❖ Sankhesh Global Pvt.Ltd
- ❖ Sankhesh Parshwa Udyog Pvt.Ltd (Aurangabad)
- C MORE, S.P. Road Cross, Bengaluru-2
- ❖ Mohan Plaza, Chickpet, Bengaluru - 53
- ❖ Mutha Manor, K.H. Road, B'luru - 27

ADVT

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

श्रमणसंघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः।
स्थानकवासिजैनानां कॉन्फ्रेंसनामविश्रुता, समाजोत्थानकार्येषु संस्थेयमस्ति तत्परा।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वर्ष-60 अंक-23 दिसम्बर 2017 प्रथम पक्ष 07-08 दिसम्बर मूल्य एक प्रति 7 रुपये

प्रधान सम्पादक
अशोककुमार एन. पगारिया जैन
सम्पादन सहयोगी
शेर सिंह जैन
बालचंद खरवड़ जैन

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
नई दिल्ली
जैन भवन
12, शहीद भगत सिंह मार्ग
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
दूरभाषः 011 - 23363729, 23365420
फैक्स : 011 - 23344380
E - mail
aissjc1906@gmail.com
Website
www.jainconference.org

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता	
12 वर्ष	रु. 1000/-

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	श्री अशोककुमार एन. पगारिया जैन	07
अध्यक्षीय उद्‌गार	श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन	09
धर्म साधना का ...	आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म.	10
दिव्य तपोधनी गुरुदेव ...	पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म. 'नीरज'	11
स्वप्न शास्त्र : ...	पू. श्री प्रमोदकुंवर जी म.	14
किसान का आत्मविश्वास	पू. श्री युगल निधि-कृपा जी म.	16
सम्भल कर चलें ...	श्री अविनाश चोरड़िया जैन	18
संघीय उन्नति हेतु ...	श्री चंदनमल चोरड़िया जैन	20
जीवन की अंतिम मुस्कान ..	श्री भंवरलाल डी. बोहरा जैन	22
ज्ञान सिन्धु ...	श्री औंकार सिंह सिरोया जैन	24
सहयोग बिना सुझाव ...	श्री महेन्द्र बोकरिया जैन	26
मशीनों से घिरा बचपन ...	श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू'	27
श्रीसंघ में महासती ...	सौ. रूचिरा सुराणा जैन	28
मिथ्या आडंबर से ...	श्री अतुल जैन	29
काला नमक है ...	डॉ. तेजेन्द्र कुमार	31
श्रमण संस्कृति के महान ...	डॉ. रतनलाल मारु जैन	32
जीवन का आत्म मंथन	श्री मांगीलाल वीरवाल जैन	33
महान कलाकार कौन?	श्री हुकमचंद जैन 'मेघ'	34
ध्यानाग्नि सर्व कर्माणि ...	डॉ. लक्ष्मीचंद जैन	36
संयम-सेवा साधना ...	श्री देवीलाल हींगड़ जैन	37
बोतलों से खूब बूझ रही ...	सम्पादकीय विभाग	39
समाचार प्रकाश		40
शोक समाचार		48

सम्पादक एवं जैन कॉन्फ्रेंस का लेखक के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। कृपया मौलिक विचार ही प्रेषित करें। किसी लेखक या पुस्तक से ली गई सामग्री का आभार अवश्य प्रकट करें। लेख एक पृष्ठ तक सीमित रखें तथा अपना नाम, पता एवं मोबाईल नंबर अवश्य लिखें। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान, आगम अतिधन्वा,
आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज
युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज

उपाध्याय मण्डलः
- श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
- श्री मूलचंद जी महाराज
- श्री रमेश मुनि जी महाराज
- श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
- श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
- श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

प्रवर्तक मण्डलः
- श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
- श्री रमेश मुनि जी महाराज
- श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
- श्री सुमन मुनि जी महाराज
- श्री रतन मुनि जी महाराज
- श्री मदन मुनि जी महाराज
- श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'
- डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज

महामंत्री - श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

मंत्री मण्डलः
- श्री शिरीष मुनि जी महाराज (शिवाचार्य मुख्य सचिव)
- श्री आशीष मुनि जी महाराज
- श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

सलाहकार मण्डलः
- श्री सुमतिप्रकाश मुनि जी महाराज
- श्री सहज मुनि जी महाराज
- श्री सुकन मुनि जी महाराज
- श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
- श्री तारक ऋषि जी महाराज
- श्री रमणीक मुनि जी महाराज
- श्री दिनेश मुनि जी महाराज
- श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
- श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डलः
- श्री ज्ञानप्रभा जी महाराज
- श्री चंदना जी महाराज
- श्री सुधा जी महाराज
- श्री सुप्रभा जी महाराज
- श्री सरिता जी महाराज

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

विश्वस्त मण्डल (2011-2017)

1. श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर - चेयरमैन
2. श्री कांतिलाल जैन, मुंबई - सदस्य
3. श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन, पाली - सदस्य
4. श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद - सदस्य
5. श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी जैन, बैंगलोर - सदस्य
6. श्री शेर सिंह जैन, दिल्ली - सदस्य
7. श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर - सदस्य
8. श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नासिक - सदस्य
9. श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई - सदस्य
10. श्री रमेश चंद जैन (काहनी), दिल्ली - सदस्य

पदेन सदस्य -

11. श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली - पदेन सदस्य
12. श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई - पदेन सदस्य
13. श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
14. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
15. डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे - पदेन सदस्य

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

	एस.टी.डी.	दूरभाष कार्यालय	दूरभाष निवास	मोबाइल	फैक्स
राष्ट्रीय अध्यक्ष :				09423962818	
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	0253	2461546, 2465569	2460026, 2461546	09423963100	2461546
निवर्तमान अध्यक्ष :					
श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	0731	401157, 4011111		09303232777	4011110
चेयरमैन विश्वस्त मण्डल :					
श्री केसरीमल वुरड़ जैन, बैंगलोर	080	25475895, 25478567	25475901, 25475695	09844152853	41250211
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण :					
श्री जे. डी. जैन, गाजियाबाद	0120	2706100	2750100	09810006462	
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	02932	280898,280899	222125,325125	09829025729	222125
श्री सुवालाल वाफना जैन, धुले	02562	232033, 233133	235544, 235555	09422296155	
प्रमुख मार्गदर्शक :					
श्री कान्तिलाल एच. जैन, मुंवई	022	26398752	26352434	09821033225	26356983
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली	011	43573099,43573499		09313813899	23346899
श्री रामकुमार जैन, लुधियाना	0161	2449493, 2447538	2448714, 4413040	09814002335	2449957
श्री चंदनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर	0731	2540914	2540900	09826022621	
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष :					
श्री विलास लोढा जैन (वरिष्ठ), अहमदनगर				09960666065	
श्री वालचंद खरवड़ जैन, मुंवई	022	29255921, 29250508	25222104	09821668548	29200223
श्री भंवरलाल डी. वोहरा जैन, मोलेला (राज.)				09324556349	
श्री ओंकारसिंह सिरोया जैन, उदयपुर	0294	2414033	2410374, 7023907574	09414167574	
श्री वालासाहेव चोरड़िया जैन, मुंवई	022	26367681	26367381	09324122233	
श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	0240	2337015, 2324811	2480979	09822659910	
श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	0731	460069 4070069		09302103817	2460069
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर	0181	5001111, 5019611		09815184311	
श्री भंवरलाल भण्डारी जैन, हैदराबाद				09440897417	
श्री वी. शांतिलाल पोखरना जैन, वैंगलोर			9845155799	09342535887	
श्री जगदीश चन्द्र जैन, पानीपत	0180	4009181		09896200081	
राष्ट्रीय महामंत्री :					
डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	020	46703433	09422036831	09028736831	
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :					
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	011	43573099, 43573499		09868125710	23346899
राष्ट्रीय मंत्री :					
श्री विमल जैन, अम्वाला		7027131008	09216701008	09466701008	
श्री संजय जैन, 'निशा' लुधियाना	0161	2621237		09417253101	
श्री कंवरलाल सूर्या जैन, भीलवाड़ा	01482	236641	239104	09414113056	
श्री सोहनलाल भण्डारी जैन, नाशिक				09823079708	
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	0253	2599400	2599500	09422246500	
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	011	27372290		09810672111	
श्री विजय डागा जैन, मुंवई	022	28470384	28398165	09821095976	
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुले	02562	278519		09423193447	
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद				09810078214	
श्री आनंद कोठारी जैन, बैंगलोर	080	28538338		09341234176	
श्री प्रसन्नकुमार संचेती जैन, चेन्नई				09035010666	
श्री सागर सांखला जैन, भोसरी				08888090999	

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री **श्री दिनेश एम. सुराणा जैन,** दिल्ली	011	27296131		09310054428	
राष्ट्रीय प्रचार - प्रसार मंत्री : **श्री सुभाष जैन 'लिली',** मंगलदेश (पंजाब) **श्री रिखबलाल सांखला जैन,** मुंबई				09814699393 09820668898	
राष्ट्रीय युवा शाखा : अध्यक्ष- **श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू',** मालेगांव महामंत्री- **श्री रवि मदनलाल लोढ़ा जैन,** औरंगाबाद	0240		2338224	09823955515 09822276008	
राष्ट्रीय महिला शाखा : अध्यक्षा - **श्रीमती रूचिरा ललित सुराणा जैन,** मुंबई महामंत्री - **श्रीमती विनिता राजेन्द्र ओरड़िया जैन,** सूरत			09423966963	09820004079 09426115241	
जीवन प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **संजय बोथरा जैन,** घोटी मंत्री - **श्री लादुलाल बाफना जैन,** मुंबई				09822596781 09833866852	
जीव दया योजना : अध्यक्ष - **श्री प्रकाश सिंघवी जैन,** सूरत मंत्री - **श्री छितरमल रांका जैन,** सूरत				09879550981 08980018801	
मानव सेवा योजना : अध्यक्ष - **श्री महेश डाकोलिया जैन,** इंदौर मंत्री - **श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन,** इन्दौर	0731 0731	2531066 28753681	2970666 2780090, 2785232	07773866000 09425062147	531066
ज्ञान प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **श्री भंवरलाल पगारिया जैन,** बैंगलोर मंत्री - **श्री अशोक कुमार धोका जैन,** बैंगलोर	080 080	22383557 41221890	41223853	09448238429 09844058123	
वैय्यावच्च समिति : अध्यक्ष - **श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक मंत्री - **श्री महावीर नाहर जैन,** वड़गांवशेरी, पुणे	0253	2575799		09422944800 09822285538	

:: सम्माननीय प्रांतीय अध्यक्ष मण्डल ::

श्री आनन्दमल छल्लानी जैन (तमिलनाडु)	मो. : 098410 30035
श्री महावीरचंद अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश)	मो. : 094924 44444
श्री सुरेशचन्द छल्लाणी जैन (कर्नाटक)	मो. : 093412 32573
श्री अतुल जैन (दिल्ली)	मो. : 098110 75336
श्री विनय जैन (हरियाणा)	मो. : 086075 00001
श्री राकेश जैन 'लक्की' (पंजाब)	मो. : 098150 20661
श्री मनमोहन जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098370 67082
श्री विमल तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 098260 62838
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 094220 74172
डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098300 30774
श्री सतीश नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 22138
श्री कांतिलाल बोथरा जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 094223 05755
श्री चन्द्रेश आर. कच्छारा जैन (गुजरात)	मो. : 095958 91111

:: सम्माननीय प्रांतीय महामंत्री मण्डल ::

श्री महावीरचन्द बोहरा जैन (तमिलनाडु)	मो. : 096772 47246
श्री दिलीप कुमार धारीवाल जैन (आन्ध्र प्रदेश)	मो. : 098480 54130
श्री मनोहरलाल लुकड़ जैन (कर्नाटक)	मो. : 098806 28555
श्री जसवंत जैन (दिल्ली)	मो. : 098104 35108
श्री राजेन्द्र जैन (हरियाणा)	मो. : 099963 33388
श्री अरुण जैन (पंजाब)	मो. : 098155 66885
डॉ. रश्मिकांत जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098083 79242
श्री संजय नवलखा जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 094251 01230
श्री बलवंत सिंह हींगड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 098297 85197
श्री आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098302 49151
श्री मनोजकुमार एम. सेटिया जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 21511
श्री रविन्द्र रमनलाल लुकड़ जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 098231 29411
श्री दिनेश संचेती जैन (गुजरात)	मो. : 093769 01329

सम्पादकीय

गत् वर्ष का लेखा-जोखा करते हुए अगले वर्ष का नियोजन करें !

– **डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन,** राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : ashokpagariyaandco@gmail.com

आदरणीय भाईयों तथा बहनों,
सादर जय जिनेन्द्र !

आप सभी स्वस्थ होंगे। आपकी कुशलता वीर प्रभु से चाहते हैं। 2017 साल संपन्न होने जा रहा है और कुछ ही दिनों में हम 2018 में प्रवेश कर रहे हैं।

हमें वर्ष 2017 का हमारा खुद का लेखा-जोखा सामने रखना है, आत्म-चिंतन करना है और 2017 में हमारी ओर से अपने व्यवसाय, व्यापार और कारोबार के साथ मानव सेवा कर देव-गुरु-धर्म की प्रार्थना का, साधना का कितना कार्य हमारी ओर से हुआ है, इसके बारे में हमें अंर्तमुख होकर सोच-विचार करने की आवश्यकता है।

हमारे दैनिक कार्यों में हमने कितने अच्छे कार्य किए, कितने आडंबरपूर्ण कार्यों में भाग लिया, कितनी संघ, समाज की सेवा की इन सारी बातों का क्रेडिट बैलेंस जोड़-घटाकर अपने जीवन का लेखा-जोखा तैयार करें। क्योंकि समाज में सम्मान व्यक्ति का नहीं उसके दान, सेवा, परोपकार से भरे, अच्छे कार्यों का ही होना है।

जिन्दगी न केवल साँसों का खजाना है,
जिन्दगी न केवल आँसुओं को बहाना है ।
जिन्दगी न केवल हँसना और हँसाना है,
जिन्दगी है सिंदूर पूर्व दिशा का,
जिन्दगी में अच्छे-अच्छे काम कर दिखाना है ।।

वहीं हमें हमारी भूलों पर भी नजर डालनी हैं। जो कार्य आत्मा के विरूद्ध हमने किए हैं, उनका पश्चाताप करना हैं। आगामी कलैण्डर वर्ष हमारे दिल के दरवाजे पर दस्तक दे रहा है और नये संकल्प करने हेतु हमें प्रेरित कर रहा है। नये साल के स्वागत के लिये हमें तैयार होना है तो पूरी तैयारी के साथ अगले वर्ष का पूरा नियोजन भी करना है।

आपकी 2017 वर्ष की सभी उपलब्धियाँ और सफलता के लिए मेरी ओर से ढ़ेर सारी बधाईयाँ और हार्दिक अभिनंदन !

विगत दो वर्षों में जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा संघ व समाज के हित में जो भी कार्य किए गए हैं, उन सबका विवरण हमने जैन समाज की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में भी प्रकाशन हेतु भेजा हैं, जोकि प्रकाशित हुआ है तथा जिसे आपने पढ़ा भी होगा। हमारे कार्यों के प्रति आपकी क्या राय है? हमें अवगत कराने की कृपा करें। यदि कहीं हमसे कोई जाने-अनजाने में कोई भूल हो गई हों तो उसे भी हमारी दृष्टि में लाने की कृपा करें, ताकि संस्था के पदाधिकारीगण मिल-बैठकर आपके सुझावों और आपके विचारों से अवगत होकर संस्था के हित में, समाज के हित में रचनात्मक कार्य करने का निर्णय ले सकें।

आपको बताते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि दिनांक 17 दिसम्बर को हमारे सबके श्रद्धेय आचार्य, श्रमण संघ की शान और अपने भक्तों के प्राण पू. श्री आनंदऋषि जी म. की जन्म स्थली चिंचोड़ी गांव में **गुरु आनंद फाउंडेशन द्वारा निर्मित "आनंद तीर्थ" के प्रथम चरण में "आनंद चरण तीर्थ"** आदि प्रकल्पों को लोकार्पित करने का महोत्सव सम्पन्न हो रहा है।

परम पूज्य उपाध्याय प्रवर पू. श्री प्रवीणऋषि जी म. की प्रेरणा से शुरु इस **'आनंद तीर्थ'** के इस भव्य और विशाल का प्रकल्प का निर्माण हो रहा है। यह हमारे समाज के लिए के लिए अत्यंत गौरव की बात है। मैं गुरु आनंद फाउंडेशन के सभी सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ। श्री गुरु आनंद को यह सच्चा अभिवादन एवं श्रद्धांजली हैं।

आप सभी इस समपर्ण समारोह में उपस्थित होकर गुरु आनंद के प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति का प्रकटीकरण करें यही विनम्र प्रार्थना हैं।

दिनांक 1 जनवरी 2018 के नये वर्ष के शुभारंभ के दिन श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की युवा शाखा की ओर से **'महामांगलिक'** के कार्यक्रम का भव्य आयोजन जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री शशिकुमारजी 'पिन्टू' कर्नावट जैन के नेतृत्व में संपन्न हो रहा है। इस समारोह में 40 से ज्यादा साधु-साध्वीजी महाराज उपस्थित रहकर हमें आर्शीवाद प्रदान करेंगे तथा इसी समारोह में महाराष्ट्र के 100 से ज्यादा **'संघपति/अध्यक्ष'** आदि का सम्मान युवा शाखा की ओर से होने वाला है।

महाराष्ट्र प्रवर्तिनी पू. श्री ज्ञानप्रभाजी म. आदि संत-सतियों के नेश्राय में होने वाले इस मंगलमय कार्यक्रम में पधार कर हमें अनुग्रहित करें।

इस पखवाड़े में श्रमण संघ के इतिहास में अपने महान तप से हमारा गौरव बढ़ाने वाले तपस्वीराज पूज्य श्री वेणीचन्द्र जी म., पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. आदि की पुण्य स्मरण तिथियाँ आ रही हैं।

दोनों महापुरुषों के गुण एवम् महान चरित्र की चर्चा हमने प्रस्तुत अंक में की है। साथ ही आपके दोनों महापुरुषों द्वारा दिए गए सामाजिक आध्यात्मिक योगदान की भी चर्चा इस अंक में प्रस्तुत हैं। हमें आशा है कि हमारा यह अंक आपको पूर्व की भांति प्रिय होगा। ✧✧

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

संचालित

ओम जय आनंद डायलेसिस सेंटर

जरूरतमंद रूग्णोंके लिए नाममात्र शुल्क में डायलेसिस करने की सुविधा

स्थल : १६२/३, पंकज सिलेक्शन, पद्मजी पेपर मिल रोड,
नाज ऑटो के बाजू मे, थेरगांव, पुणे-४११०३३.

Mob. 9422036831/ 9822090050/ 9075305959/7028086688

अध्यक्षीय उद्गार

सुनी-सुनाई बातों पर अपने पूज्य संतों के बारें में धारणा न बनाएं

– **मोहनलाल चोपड़ा जैन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : chopdagroup@gmail.com

सम सम्माननीय बन्धुओं, बहनों

सादर जय जिनेन्द्र!

वर्ष अपनी ढ़लान पर है। आने वाले साल की भूमिका भी बन रही है। हमारे व्यापक समाज का व्यापक चिंतन इस समय किस दिशा में जा रहा है, इस पर विचार करने की आवश्यकता है। कुछ दिनों पूर्व कतिपय संतों के संबंध में तथ्यहीन बातों का प्रचार-प्रसार देखने को, सुनने को मिला। हृदय को अत्यंत वेदना हुई। क्योंकि जो हमारे आराध्य हैं, जिनके चरणों में वंदन करके हम धन्य-धन्य होते हैं, उनके बारें में जब कोई अपवादिक बात सुनने को मिलती है तो मन को बड़ा दुःख होता है। लेकिन यहाँ मैं कहना चाहूंगा कि बिना तथ्य को जानें यदि हम अपने महापुरुषों के बारें में कोई भ्रांत धारणा बना लेंगे तो अपना और अपने संघ का ही अहित करेंगे। इसलिए मेरा निवेदन है कि हम बाहरी प्रचार-प्रसार के धोखें में न आकर पहले तथ्यों को समझें, उसके पश्चात ही कोई धारणा बनाएं।

आवश्यक यह भी है कि हम स्वयं सतर्क रहें, सजग रहें, सूचनाओं का आदान-प्रदान हमारे मध्य निरंतर हो और यदि कोई ऐसी बात जो हमारे मन को पीड़ा देने वाली है, वह सुनने में आए तो उसे यथा तथ्य दुरूस्त करने की सामर्थ्य पैदा करें। जब तक ऐसा नहीं होगा हमारे सर्व-साधारण में भ्रांत धारणाओं के आधार पर गलतफहमियाँ पैदा होंगी और हमारी श्रद्धा भी कमजोर होगी। अतः जो भी सुनें, उस पर बिना देखें, जानें, समझें कोई धारणा न बनाएं। चाहे वह टी. वी. पर आए, चाहे अखबार में छपें। जब तक हम सही तथ्यों को न जान लें तब तक एक-दूसरे से चर्चा करके गलत बातों का प्रचार-प्रसार न करें।

इसी निवेदन के साथ मैं पूज्य प्रवर संतों-महासतियाँ जी से विनम्र प्रार्थना करूंगा कि कोई भी बात जो छोटी से छोटी क्यों न हो उस पर ध्यान दें और कोई भी अपवादिक प्रकरण दुःखदायी बनें उसके पहले उसका उपचार करने में स्वयं लगें। अनेक बार ऐसा होता है कि तथ्य कुछ भी नहीं होता, किन्तु अपवादिक प्रचार इतना ज्यादा हो जाता है कि झूठ भी सच दिखाई देने लगता है। अतः हम पहले ही कदम से सत्य को समझें और उसके संबंध में जिन भी अधिकारियों को योग्य समझें उन्हें बताने की कृपा करें।

जैन कॉन्फ्रेंस चतुर्विध संघ का मंच हैं। अतः श्रावक हो या पूजनीय संत-साध्वी जी महाराज जैन कॉन्फ्रेंस के अधिकारियों, जिम्मेदारों को यथा-तथ्य स्थिति को बताकर दुर्घटना से पहले संभालने और भविष्य में ऐसा कोई अपवादिक कार्य न हो उसके लिए सहयोग अवश्य प्राप्त करें। जैन कॉन्फ्रेंस सेवा कार्यों के लिए बनीं हैं। जैन कॉन्फ्रेंस की दृष्टि में हमारे पूज्य संत-साध्वी जी के सम्मान से बढ़कर कोई और चीज नहीं है। अतः जैन कॉन्फ्रेंस से कुछ भी न छिपाते हुए, कॉन्फ्रेंस का सहयोग लें। इसी निवेदन के साथ सादर जय जिनेन्द्र!

✧✧

धर्म साधना का उद्देश्य आत्महित

- युग प्रधान आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म.

आपके सामने वाले व्यक्ति के अंदर जो गुण है वह आपके अंदर नहीं है ऐसा आपको लगे तब उस व्यक्ति के प्रति आप कृतज्ञता ज्ञापित करो। जिस समय कृतज्ञता ज्ञापित करते हो, उसके गुण के कुछ अंश हमारे अंदर आ जाते हैं बाहर हवा बह रही है दरवाजा बंद कर दोगे तब हवा का आना बंद हो जाएगी। फूल की सुगंधि नाक बंद कर लेने से वह आपके अंदर समाहित नहीं होगी। ठीक उसी प्रकार अपने हृदय के दरवाजे खोलो। आज स्थिति यह हो गई है कि अमीर रास्ते से चले जा रहे होते हैं, रास्ते में कोई दुःखी पड़ा रहता है उस पर नजर डालना भी उचित नहीं समझते हैं वो यह सोचने की चेष्टा भी नहीं करते हैं कि उसके अंदर भी कुछ भाव होगा, उनके अंदर भी कुछ अच्छाईयाँ होगी। रामायण के अंदर प्रसंग मिलता है कि भीलणी को कोई पसंद नहीं करता था फिर भी करुणावान थी। रात में जब वह चलती थी तो पांव में कांटे गड जाते थे। स्वयं के दुःख से दूसरों के दुःख को समझने भीलणी रात्रि में ही रास्तों को साफ कर देती थी। आप मुनि सुबह स्नान के लिए निकलते थे तो अहंकार करते थे कि मेरे प्रभाव से रास्ता स्वतः ही साफ हो गया।

वह भगवान श्रीराम की भक्तिन थी। उसने भगवान राम को पुकारा। श्रीराम किसी ऋषि मुनि की कुटिया में न जाकर सीधे भीलणी की कुटिया में गए। वहां उसकी कुटिया में खाने के लिए कुछ भी नहीं था। उसने बेर तोड़े, स्वयं चखकर राम-लक्ष्मण को खिलाती कि कहीं मेरे हाथों से कोई खट्टा बेर राम अथवा लक्ष्मण न खा लें। उसके अंदर भाव अच्छे थे। राम ने प्रेम से खाया, लेकिन लक्ष्मण ने उसे नहीं खाया। जूठा समझकर पीछे फेंक देते थे। जब लक्ष्मण को मेघनाथ से युद्ध के दौरान शक्ति बाण लगा तो वही बेर संजीवनी बूटी के पर्याय में लक्ष्मण को सुंघाए गए जिससे उनके प्राण बच सके। मेरे कहने का मतलब यह है कि महापुरुष वही हो सकता है जिसके अंदर करुणा व्याप्त है। प्रेम का मतलब वस्तु से नहीं, अंतः संबंध अथवा चित्त की गहराई से है। दूसरे के बच्चे को प्रेम करने का अभिप्राय यह नहीं है, उनको भी भोजन खिलाओ। भोजन कराओ या न कराओ, लेकिन दूसरों के बच्चों से प्रेम रखें। माँ अपने बेटे से प्रेम करती है तो दूसरों के बेटों से भी प्रेम कर सकती है प्रेम तो बहती नदी के समान है रास्ते में चाहे जो भी आये सबको शीतल करती है। संसार में जितने भी वृक्ष हैं सबको फल देते हैं गाय सबको समान रूप से दूध देती है फूल सबको सुगंधित करता है तो ऐसे में क्या मनुष्य दूसरों को सुगंध (सुख) नहीं दे सकता है? सूरज, गाय, नदी, पहाड़ झरने सबको समभाव से देखते हैं।

✧✧

जब तक तुम दौड़ने का साहस
नहीं जुटाओगे, तुम्हारे लिए
प्रतिस्पर्धा में जीतना सदा
असंभव रहेगा !!!

सामने मंजिल हो तो रास्ता मत मोड़ना,
जो भी मन में हो वो सपना न तोड़ना।
कदम-कदम पर मिलेगी मुश्किल आपको,
बस सितारे चुन-ने के लिए
कभी जमीन मत छोड़ना।।

आवरण कथा

दिव्य तपोधनी गुरुदेव पूज्य श्री वेणीचंद्र जी म. सा.

- पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म. 'नीरज'

दिव्य तपोधनी परम पूज्य गुरुदेव श्री वेणीचन्द्र जी म. सा. की पुण्यतिथि के पुण्य प्रसंग पर हमें पुण्य पुरुष का स्मरण करना है। पूज्य गुरुदेव श्री वेणीचन्द्र जी म.सा. ने घोर तपस्या करके कर्मरुपी चट्टानों से आत्मा को मुक्त करने का पुरुषार्थ किया था।

गुरुदेवश्री का जन्म वि. सं. 1898 में पहुंना (जिला-चित्तौड़गढ़) में हुआ था। आपके पिता श्री चन्द्रभान जी और माता-कमला देवी थी। आपके जन्म से खिंवेसरा कुल पवित्र बन गया था। बचपन में ही सुसंस्कार संपन्न वेणीचन्द्र ने जब यौवन की दहलीज पर कदम रखा तो परिवारजनों ने उन्हें प्रणय बंधन में बांधने के लिए पहुंना में ही कूकड़ा परिवार की सुशील कन्या के साथ सगाई कर दी, लेकिन इनका तो मार्ग ही अलग था अस्तु शादी के समय से पूर्व वे बिंदोला जीमने के लिए जा रहे थे और भावी पत्नी भी आगे-आगे चल रही थी। अकस्मात् दो बैल लडते हुए आये, वेणीचन्द्र जी ने जब यह दृश्य देखा तो सहसा उच्च स्वर में कहने लगे -**"बहिन! जरा पीछे हट जाना, ये बैल लड़ते हुए आ रहे हैं। बहिन ने पीछे मुड़कर देखा तो अपने भावी पति को देखकर लज्जावश एक तरफ हो गयी। श्री वेणीचन्द्र जी को जब पता चला कि - "जिसे मैंने बहिन कहा वह तो मेरी भावी पत्नी है। अंतर में शुभ भावों का प्रवाह उमड़ चला, जिसे मैंने बहिन! कह दिया उससे मैं शादी नहीं रचा सकता हूँ। जिस समय मेरी सगाई हुई थी। उसी समय मैंने अन्य कन्याओं को बहिन मान लिया तो अब कभी शादी कर ही नहीं सकता।** अंतर में वैराग्य की दीप शिक्षा प्रज्वलित हो उठा। जो कदम भोग की तरफ बढ़ने जा रहे थे वे चरण अब योग की तरफ मुड़ गये। जागरण का एक छोटा सा निमित्त मिला और भाव जाग्रत हो गये।

स्वजनों ने समझाने के अथक प्रयास किये लेकिन वह पुण्यात्मा संयम के पुण्यपथ पर जीवन का रथ बढ़ाने के लिए आतुर हो उठा। **पुद्गलानदी नहीं आत्मानंदी बनने के लिए वेणीचन्द्र जी पहुंच गए पन्ना सम चमकने वाले पूज्य गुरुदेव श्री पन्ना गुरु के चरणों में। सर्वात्मना गुरु चरणों में समर्पित वैराग्यशील वेणीचन्द्र ने 20 वर्ष की उम्र में माण्डलगढ़ की पुण्यधरा पर संयम रत्न को स्वीकार कर लिया।**

संयम साधना को तेजस्वी बनाने के लिए मोक्ष के चतुर्थ पाये **'तप'** को ही जीवन का परम लक्ष्य बनाकर तप की ज्योति को प्रज्जवलित कर लिया। कर्म निर्जरा का सर्वोत्तम साधन तप है, ऐसा मानकर तप-यज्ञ में कर्मों की आहूति देने लगे। तप उनके जीवन का प्राण बन गया। तप बिना साधक आत्मा को निखार नहीं सकता है, कुंदन सम निर्मल नहीं बना सकता है। अतः आपने भी बेले तेले-पचोले की तपः साधना प्रारंभ कर दी। जीवन को ज्योतिर्मय बनाने के लिए पूज्य गुरुदेव ने महान कठिन तप व्रत अंगीकार कर लिया। जीवन के अन्तिम 27 वर्षों में अन्न-जल का भी त्याग कर दिया और यह संकल्प ले लिया कि भविष्य में छाछ की आँच के अलावा कुछ भी ग्रहण नहीं करुंगा, पाँवों विगय का त्याग रखूंगा। दृढ़ संकल्प के धनी ने ऐसा दृढ़व्रत अंगीकार कर लिया। जीवन में कई ऐसे महान् दृढ़ संकल्प, महान् अभिग्रह किये,

जिसमें एक महीने तक, तीन-तीन महीने तक छाछ की आँच भी ग्रहण नहीं की थी। अभिग्रह फलित होने पर ही वे छाछ की आँच लेते थे।

रसेन्द्रिय विजेता पूज्य गुरुदेव की तप साधना वस्तुतः कितनी अद्भुत एवं उच्चतम साधना थी। मन मंदिर में जब-जब भी पूज्य गुरुदेव की निर्मल छवि उभरती है। मन श्रद्धाभिभूत हो जाता है, असीम शान्ति की अनुभूति होती है। मस्तक श्रद्धा से नत हो जाता है।

जब गहन तपस्या हेतु निर्जल अरण्य में जा बिराजे तब कहने वाले कहने लगे कि - गुरुदेव-यह स्थान बड़ा भयकारी एवं डरावना है, यहां दिन में भी व्यक्ति आने से कतराता है, तो रात्रि में यहां कैसे ठहरा जा सकता है? यहाँ तो कदम-कदम पर खतरा है। तब गुरुदेव ने कहा - **"मैं तो अनंत खतरें को खत्म करना चाहता हूँ। मेरे सामने जन्म-मरण का खतरा है, उस खतरें को मिटाने के लिए मैं यहां ध्यान करुंगा। अब खतरों से क्या डरना?**

इधर चार श्रावक जो गुरुदेव के साथ थे। उनमें से दो श्रावक तो डरकर वापिस आ गए। वहां रहे दो श्रावकों में से भी एक श्रावक एक रात रहकर वापिस चला गया। एक श्रावक उनके साथ ही रहा। गुरुदेव ने जिस रात्रि में वहां ध्यान किया उसी रात को वहां रहने वाले यक्ष ने गुरुदेव को उपसर्ग देने प्रारम्भ कर दिए। पांच दिन तक अलग-अलग रुप बनाकर भीषण यातनाएं दी, अनेक उपसर्ग दिये, लेकिन अभयमूर्ति पूज्य गुरुदेव को वह देव तनिक भी विचलित नहीं कर पाया। देव उनकी अडिगता, निर्भिकता देखकर भाव-विभोर हो गया।

■ मेनाल की गहन गुफाओं में भी ध्यान-साधना

इसी प्रकार पूज्य गुरुदेव मैनाल पर्वत की निर्जन, गहन गुफाओं में भी जहाँ हिंसा, पशु, शेर, चीते आदि का भय बना रहता है, ऐसी कंदराओं में ध्यानस्थ रहते थे। आपकी दिव्य आभा से प्रभावित होकर शेर भी चरणों में नत होते थे। आपको प्रदक्षिणा देकर नमन करते थे। मेनाल में भी 12 खम्भे की छतरी जो वर्तमान में रोड़ के किनारे ही स्थित हैं, वहां कई दिनों तक निर्जल रहकर आप ध्यान-साधना करते थे और सिंह उनके सेवक बनकर पर्युपासना करते थे।

अभय की मूर्ति पूज्य गुरुदेव श्री ने इसी प्रकार जावद के पास अठाणा गांव में श्मशान में बनी छतरियों में भी ध्यान साधना की थी।

■ तीन माह और दस दिन तक खड़े रहे थे

दृढ़ संकल्प के धनी, आत्मबली पूज्य गुरुदेव जब बनेड़ा की पुण्यधरा को पावन कर रहे थे उस समय की घटना है।

निरन्तर खड़े रहने के कारण दोनों पैरों पर सूजन आ गई थी। खम्भे की भांति पैर भारी हो चुके थे और सूजन आने के कारण पैरों से पानी बहने लगा था। गुरुदेव की यह स्थिति देखकर राजपरिवार ने निवेदन किया - गुरुदेव ! आपके पैरों से सूजन आ चुकी है और पानी बह रहा है, असह्य वेदना हो रही होगी, अतः आप आज्ञा दीजिए, आपका उपचार कराने के लिए राजवैद्य को लेकर आए।

गुरुदेव ने कहा- राजन् इस नश्वर शरीर का क्या मोह करना? फिर भी आपका अत्यधिक आग्रह है तो मैंने इस शरीर के लिए ही छाछ की आंच रखी है, अतः यदि यह शरीर स्वीकार करता हो तो मैं छाछ का लेप कर सकता हूँ।

अभिग्रह फलित होने के पश्चात् गुरुदेव ने छाछ की आंच से पैरों पर मालिश की और उसी समय सूजन समाप्त हो गई, यह दृश्य देखकर राजपरिवार तो आश्चर्य स्तब्ध रह गया कि गुरुदेव की दिव्य साधना का प्रभाव है। सूजन के लिए तो छाछ जहर है, किन्तु अमृतयोगी गुरुदेव के हाथों में आकर वह भी अमृत बन गयी। उत्कृष्ट तपः साधकों को तपस्या

करते-करते अनेक दिव्य लब्धियां प्राप्त हो जाती है।

■ **मृत्यु का पूर्वाभास**

महापुरुषों को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो जाता है। पूज्य गुरुदेव को भी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। **इसके अलावा पूज्य गुरुदेव का ज्योतिष का भी बहुत अच्छा ज्ञान था, उन्होंने 1965 के साल का वर्षफल निकाला था, "उसमें लिखा था कि यह वर्ष क्रूर है बचणो मुश्किल है।"** जीवन का अन्तिम समय निकट जानकर पूज्य गुरुदेव ने पौष कृष्णा 12 के दिन ही संथारा ग्रहण कर लिया और पूर्ण समाधिभाव के साथ पौष कृष्णा चतुर्दशी के दिन प्रातः 10 बजे नश्वर शरीर का त्याग कर सुरधाम पधार गये। जन-जन के वंदनीय श्रद्धालोक के देता, हृदय के हार पूज्य गुरुदेव के स्वर्गारोही के समाचार बिजली की तरह फैल गये और अन्तिम यात्रा में जन सैलाब उमड़ पड़ा। अपने आराध्य के प्रति सभी सजल नयनों से श्रद्धा सुमनांजली अर्पित कर रहे थे। जयनाद से धरती-नभ गूंजने लगे। अन्तिम यात्रा जब श्मशान में पहुंची तो पूज्य गुरुदेव के वपुरत्न को अग्नि को समर्पित किया गया। धूं-धूं करके चिता जलने लगी पर आश्चर्य परम आश्चर्य संपूर्ण शरीर जलकर राख हो गया, लेकिन चोलपट्टा (अधोवस्त्र) नहीं जला। श्रावकों ने दो तीन बार आग में डाला, किन्तु फिर भी उसका एक तार भी नही जला। सबने सोचा यह सब गुरुदेव की उत्कृष्ट, तपराधना, संयम साधना का अद्भुत प्रभाव है।

आज पुण्यतिथि की पुण्यवेला में हम जिस महापुरुष का स्मरण कर रहे हैं, उनके दिव्य गुण हमारे अंतर में भी प्रकट हो, उनके जीवन के आदर्श हमारे लिए भी प्रेरणा-स्त्रोत बने, यही शुभभावना है।

✧✧

जैन प्रकाशनों का स्वरुप और सामग्री

- लाभ अर्जन या संकीर्ण हितों का ध्यान में रख कर नहीं होता। जैन पत्र पत्रिकाएं विशुद्ध रुप से समाज पर आधारित होती हैं अतः समाज सुधार, धार्मिक आदर्शो का प्रचार, संत साध्वी एवं संघ संस्था की गतिविधियों को लेकर ही मुख सामग्री प्रकाशित होती हैं।
- जैन पत्र पत्रिकाएं मुख्यतः विचार प्रधान होती हैं नैतिक सामाजिक उद्बोधनों से युक्त होती है। इस तरह जैन समाज के पत्र Newspaper कम View paper तथा ज्यादा होते हैं।

जैन पत्रकार एवं पत्रकारिता की विशेषता

- जैन पत्रकारिता वैयक्तिक चरित्र व संयम साधना की आग्रही हैं।
- जैन पत्र पत्रिकाएं सामाजिक संगठन, एकता एवं सांस्कृतिक उत्कर्ष की भावना से प्रकाशन की जाती हैं। जैन पत्रकारिता का लक्ष्य समाज के उद्भव और विकास को जन जन में प्रचारित करना है।

इसलिए जैन पत्र–पत्रिकाओं को आप सबका सहयोग अत्यंत आवश्यक है।

स्वप्न शास्त्रः अतीत और वर्तमान

- साध्वी-रत्ना पू. डॉ. श्री प्रमोदकुंवर जी म.

शास्त्रों में स्वप्नों का वर्णन आता है। तीर्थंकर की माता चौदह स्वप्न देखती है, चक्रवती की माता सात स्वप्न देखती है, वासुदेव की माता तीन स्वप्न देखती है एवं अन्य श्रेष्ठ पुत्रों को जन्म देने वाली माता एक स्वप्न देखती है। श्रेष्ठ पुरुषों की माताएँ शुभ स्वप्न देखती है और उनके परिणाम भी शुभ होते हैं।

स्वप्नों का अपना विधान है। कुल 72 प्रकार के स्वप्न हैं, जिनमें 30 महत्वपूर्ण महास्वप्न होते हैं। मनुष्य जब भी अशुभ स्वप्न देखें, तो उन्हें निष्फल करने की भावना रखें। शुभफल देखें, तो शेष समय जागकर 'लोगस्स' का पाठ करें, इसके अंतर्गत 24 तीर्थंकर की स्तुति है और आरोग्य की मनोकामना है। तीर्थंकर की स्तुति से जीवन में श्रेष्ठ भाव आते हैं, उत्कृष्ट रसायन आता है और वह जागते हुए प्रभु से यह मंगल कामना कर सकता है कि उसे शुभ स्वप्न शुभ फल दें - यह उत्कृष्ट भावना निरंतर मन में जगाएँ और शुभ पुरुषार्थ करें, प्रातः काल उसे स्वप्न का सुफल प्राप्त होगा। वह निरंतर आदर्श की अभिप्सा करें, अंततः उसे जीवन की उत्कृष्ट अभिलाषा पूर्ण होती दिखेगी। मनुष्य के शुभ कर्मों से मनुष्य की वृत्तियाँ परिष्कृत होती है। उसके भावों में परिवर्तन होने लगता है।

माता सबसे बड़ी चित्रकार है, वह जैसा चाहे, पुत्र का निर्माण कर सकती है। उसका कर्म एवं चिंतन संतान का भविष्य निर्धारित करता है। इस तरह माता का चिंतन सर्वोपरिय है। कोई आत्मा जब माता के गर्भ में आती है, उसके कर्म भी उसके साथ आते हैं। गर्भावस्था में प्रभु महावीर को तीन ज्ञान प्राप्त थे। उन्होंने गर्भ में ही जान लिया था कि उनके हलन-चलन से माता को कष्ट होता है और कष्ट न हो, इस शुभ भावना से हिलना डुलना बंद कर दिया था। माता त्रिशलादेवी को चिंता होने लगी कि उसका गर्भस्थ शिशु हिल-डुल नहीं रहा है, उसकी हल-चल न होना माता के दुःख का कारण बन गया और महावीर की आत्मा ने गर्भावस्था में यह संकल्प ले लिया कि जब तक उनके माता-पिता जीवित रहेंगे, उन्हें किसी तरह का कष्ट नहीं देंगे। दीक्षा ग्रहण नहीं करेंगे, घर का परित्याग नहीं करेंगे और 28 वर्ष तक गृहस्थ जीवन में रहे। माता-पिता के देहावसान के पश्चात् दीक्षित हुए। उन्होंने विवाह भी किया, एक पुत्री का जन्म हुआ। माता-पिता का आयुष्य पूर्ण होने पर बड़े भाई नंदीवर्द्धन के लिए उनकी भावना का समादर करते हुए एक वर्ष और गृहस्थ में रहे।

महावीर सुख-संपदा और धन-धान्य से परिपूर्ण थे, उन्हें परिवार और समाज में यश प्राप्त था। वे क्षत्रिय कुल के थे, वीर थे। उन्होंने बाह्य शत्रुओं से लौहा नहीं लिया, अपितु उनके पास जो राज्य सम्पदा और वैभव था, वह भी उन्हें वैराग्य के पथ पर अग्रसर होने से नहीं रोक सका। उनकी आत्मा में अलौकिक प्रकाश को प्रकट होना था और साढ़े बारह वर्ष तक कठोर तप-साधना की, कर्मों का क्षय किया।

महावीर प्रभु की माता-पिता के प्रति अनुरक्ति और स्वयं के प्रति विरक्ति जीवन के ऐसे दो छोर हैं, जिनमें गृहस्थ धर्म की मर्यादा और वीताराग अवस्था का श्रेष्ठतम चिंतन हैं। जहाँ कर्म करना अभिष्ट था, उन्होंने पूर्ण पुरुषार्थ किया और जब वीतरागी बने, मोक्ष पथ के गामी बनें।

महावीर के जीवन को वय के मान से देखे, तो सह तीर्थंकरों में सबसे कम वय के थे, मात्रा 72 वर्ष में अनेक भवों के कर्मों का क्षय कर सिद्ध-बुद्ध हो गए, मुक्ति को प्राप्त हो गए। उन्होंने अल्प समय में जितना अलौकिक ज्ञान का प्रकाश इस जगत को दिया, वह ढ़ाई हजार वर्ष बाद भी संपूर्ण जगत को आलोकित करने वाला है, उसे समग्र चेतना के साथ जीवन में धारण कर लिया जाएँ, तो न राग होगा, न द्वेष होगा, न भय होगा और न शोक होगा।

महावीर ने जो ज्ञान दिया, वह मानव ही नहीं, अपितु सभी प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारी है, संबोधि के सूत्र उसमें समाहित हैं। चंद्र, सूर्य, खगोल, भूगोल, ज्योतिषशास्त्र एवं स्वप्न विज्ञान का अनुपम शास्त्रीय ज्ञान परिपूर्ण है। उसमें समय के मान से निर्देशन की क्षमता है, यद्यपि वह पच्चीस सौ वर्षों में पाण्डुलिपियाँ और ताडपत्रों पर सहजकर रखा गया और निरंतर अभिलेखगारों में रखा रहने से पठनीय नहीं रह गया था पठन-पाठन आम व्यक्ति के लिए सहज नहीं रह गया है।

भगवान महावीर ने छद्मस्थ अवस्था में साढ़े बाहर वर्ष की कठोर साधना की, मात्रा एक घड़ी नींद ली। उसमें दस स्वप्न देखें, जिनका शास्त्रों में उल्लेख आता है। महावीर प्रभु के बाद राजा चन्द्रगुप्त मौर्य चतुर्थ शताब्दी में हुए, उन्होंने सोलह स्वप्न देखें और इन स्वप्नों से भविष्य की, आने वाले समय की कष्ट-आपदाओं का वर्णन विशद रूप से जैन आगामों में किया गया है।

✧✧

गुणों की खान महासती पू. श्री सीताजी महाराज

आपका शुभावतरण कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी (धनतेरस) सन् 1926 में गुजरांवाला (पाकिस्तान) में सुश्रावक श्री कर्मचन्द जी व धर्मनिष्ठा श्रीमती रामप्यारी की रत्नकुक्षी से हुआ। मात्र साढ़े सात वर्ष की अल्पायु में लाहौर में चारित्र चूड़ामणि, जैन धर्मोद्धारिका महासती पू. श्री चंदी जी म. के श्री चरणों में पहुंच गए। साढ़े ग्यारह वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला त्रयोदशी सन् 1938 को दिल्ली में तमोमूर्ति महासती पू. श्री सौभाग्यवती जी म. के पावन सान्निध्य में दीक्षा अंगीकार की।

आपकी शास्त्र-मर्मज्ञता, कुशल अनुशासन और व्यवहार कुशलता से प्रसन्न होकर उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री शांति स्वरूप जी म. ने आपको 'उपप्रवर्तिनी' पद से अलंकृत किया। वर्तमान आचार्य ध्यान योगी पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. ने आपको 'संयम शिरोमणि' के पद से सुशोभित किया। सकल जैन समाज ने उन्हें 'कण्ठ कोकिला' की उपाधि से उपमित किया। गुरुणी श्री जी की 80वीं दीक्षा जयंती के शुभावसर पर वर्तमान प्रवर्तक गुरुदेव पू. श्री सुमन मुनि जी म. ने 'संयम सुमेरू' के पद से अलंकृत किया।

आप श्रीजी के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन के लिए शासनेश प्रभु से मंगलमय शुभाकांक्षा है कि आप यशस्वी एवं चिरायु होकर आत्म कल्याण के साथ-साथ समाज का भी उत्थान करते रहें व आप श्रीजी की कीर्ति कौमुदी चारों दिशाओं में फैले। सेवाभावी पू. श्री ऊषा जी म.एवं डॉ. श्री सुरभि जी म. नौ वर्षों से लगातार गुरुणी जी म. के श्रीचरणों में समर्पित है। गुरुणी श्रीजी 92वें वर्ष में है। आज कल श्रीचन्दा जी जैन सहायक आश्रम कर्त्तारा गली लुधियाना में विराजमान हैं। लगभग मैं भी डेढ़वर्ष से गुरुचरणों में रह रही हूं व कामना करती हूं कि मुझ पर कुछ कृपाकण बरसाएँ। अंत में बस यही चाहती हूं कि:-

"पावन पाक दर्शन जिनके, खुशियों में हम खो जाएं, हम सभी चाहते हैं गुरुणी मैय्या! आयु आपकी सौ से ऊपर हो जाए..."।

- मोणा (मणिप्रभा) गुगलिया, बीकानेर (राजस्थान)

किसान का आत्मविश्वास

- पू. साध्वी श्री युगल निधि-कृपा जी म.

एक किसान एक गांव में मेला देखने के लिए गया। वहाँ विविध प्रकार की चीजें देख लेने के बाद उसे एक चीज बहुत पंसद आई। वह था बकरी का नन्हा सा बच्चा। उसने दुकानदार से उस बकरी के बच्चे की कीमत पूछी, बह बोला सिर्फ पांच रुपये का है। उसने झट से पांच रुपये देकर वह बकरी का बच्चा खरीद लिया।

किसान ने बड़े प्यार से उसे अपने कंधे पर बिठाया और अपने गांव की ओर चल पड़ा। उसी मेले में कुछ एक बदमाश भी शामिल थे। बदमाशों ने देखा कि यह किसान तो बेचारा बहुत ही भोला और बुद्ध है। अच्छा मौका है कि हम सब मिलकर के वह बकरी का बच्चा उससे छीन लेते हैं, परन्तु उससे हम लड़कर नहीं छीन सकते, क्योंकि वह किसान शरीर से अत्यंत मजबूत है। इसके साथ तो होशियारी से काम लेना चाहिए। अतः चार बदमाशों ने मिलकर एक तरकीब खोज ली।

किसान उस बकरी के बच्चे को बड़े उत्साह और उल्लास से लेकर अपने गांव की ओर ले जा रहा था। इतने में सामने से एक बदमाश आया और नमस्कार करते हुए किसान से बोला - अरे! इस कुत्ते के बच्चे को आपने कहाँ पर बिठाया है। बड़ा प्यारा कुत्ता है। यह कहाँ से खरीदा है?

यह सुनकर किसान ने झल्लाकर कहा - अरे! आप कहीं पागल तो नहीं हो गये? यह तो बकरी का बच्चा है। इसे अभी-अभी मैंने खरीदा है।

बदमाश ने कहा - भैया! जैसी तुम्हारी इच्छा वरना है तो ये कुत्ते का बच्चा। इतना कहकर वह आगे निकल गया।

थोड़ी ही देर में किसान को दूसरा बदमाश मिला। वह बड़ी तरकीब से बोला - भैया! राम-राम! इस कुत्ते के बच्चे के इतने क्या लाड़ लड़ा रहे हो? यदि इस प्रकार तुम गांव में पहुंच गये तो तुम्हें लोग पागल समझेंगे। इतना कहकर वह आगे निकल गया। अब किसान को थोड़ी सी शंका पैदा हुई इसलिये उसने बकरी के बच्चे को कंधे से नीचे उतारा और बड़े ध्यान से देखा और फिर मन ही मन बोला - यह तो बकरी का ही बच्चा है।

थोड़ा आगे बढ़ा ही था कि तीसरा बदमाश मिला। उसने किसान को राम-राम करते हुए कहा - बड़ा अच्छा कुत्ता लाये हो। मैं, भी ऐसा ही कुत्ता खरीदना चाहता हूँ कहाँ से तुमने खरीदा है? यह सुनते ही किसान के मन में फिर से शंका पैदा हो गई। अब उसे लगा कि क्या ये बकरी का बच्चा है? जवाब देने की हिम्मत नहीं रही, क्योंकि वह मन ही मन सोचने लगा कि तीन व्यक्ति ने मुझे इस प्रकार टोका है तो जरुर कोई बात है। एक आदमी झूठ बोल सकता है पर अलग-अलग तीन आदमी ने जो मुझे कहा है तो कहीं कुछ जरुर गड़बड़ है। तीन-तीन आदमी की आंखें धोखा नहीं खा सकती।

अब किसान के मन में एक डर सा पैदा हो गया कि मैं, यही भ्रम में तो नहीं हूं? फिर से बकरी के बच्चे को नीचे उतारा। अब वह बकरी का बच्चा उसे भी कुत्ते के बच्चे की भांति दिखाई देने लगा। ऐसी असमंजस की स्थिति में वह आगे चल पड़ा।

इतने में चौथा बदमाश आया और बोला - अरे देहाती! यह क्या गजब किया तुमने इस छोटे से कुत्ते के बच्चे को कंधे पर उठाकर रखा है। आज तक

मैंने किसी किसान को कुत्ते का बच्चा कंधे पर उठाते हुए नहीं देखा है। अच्छा है कि गांव पहुंचने से पहले इसे इस जंगल में ही छोड़ दो वरना हंसी के पात्र बन जाओगे। इतना कहकर वह आगे चल पड़ा।

अब किसान का विश्वास पूरा टूट चुका था। उसमें और आगे चलने की हिम्मत नहीं रही। वह सिर पर हाथ रखकर गहरी सोच में डूब गया कि क्या बात है सब क्यों इसे कुत्ते का बच्चा कह रहे है। जरुर मुझे उस दुकान वाले ने ठगा है वरना रास्ते में मिलने वाले सब झूठ नहीं बोल सकते। चलो, यदि अब भी मैं, संभल जाता हूं तब भी अच्छा रहेगा। वरना गांव तो अब आने ही वाला है। सारे गांव वाले मुझ पर हंसेंगे। मुझे पागल कहेंगे। इससे तो अच्छा है कि यहाँ एकांत भी है इसे यहीं छोड़ देता हूं। सिर्फ पांच रुपये का ही नुकसान होगा, परन्तु इज्जत तो बनी रहेगी।

उसने शीघ्र ही बच्चे को नीचे उतारा और जंगल में छोड़ दिया। लंबे-लंबे कदम भरते हुए वह अपने गांव की ओर चल पड़ा। वे चारों बदमाश बकरी के बच्चे को उठाकर ले गये। वह बड़े खुश थे कि हमारी तरकीब कितनी अच्छी तरह से सफल हुई।

इस कहानी से हमें ज्ञात होता है कि कोई भी असत्य यदि बार-बार दोहराया जाये तो सत्य जैसा प्रतीत होने लगता है फिर सत्य चाहे सामने भी हो तब भी उस पर असत्य का परदा पड़ जाता है। हमारे जीवन में ऐसा बहुत बार होता है कि जब हमारे भीतर आत्म-विश्वास की कमी आ जाती है तब दूसरा जो कुछ कह देता है उसे हम मानने को तैयार हो जाते हैं। अतः जीवन में आत्म-विश्वास को बढ़ाना होगा ताकि हम सभी प्रकार के संशयों से मुक्त हो सकें।

✧✧

प्रेरक प्रसंग ...

आपदाओं में बन्धु ही साथ देता है !

मगध देश में महालय नाम का एक गाँव था, जहाँ कभी सिंह एवम् वसंत नाम के दो भाई अत्यंत स्नेह से रहते थे। दोनों में इतना गहरा प्रेम सबंध था कि दोनों एक-दूसरे के बिना नहीं रह पाते थे, लेकिन जैसा कि कई परिवारों की स्त्रियों का स्वभाव है छोटे भाई की पत्नी बड़े भाई और भाभी की झूठी निन्दा करके पारिवारिक स्नेह को तोड़ने का प्रयास करती थी। बड़े भाई ने कई बार समझाया, लेकिन कुछ दिन तक सब ठीक रहता है। बाद में फिर वही हाल हो जाता है।

एक दिन तो छोटे भाई ने उत्तेजित होकर कह दिया कि आज तो मैं अपना हिस्सा लेकर ही उठूंगा। बड़े भाई ने स्नेहपूर्वक उसे उसका हिस्सा दे दिया, लेकिन कहते हैं ना कि जहां फूट होती है, वहाँ लक्ष्मी नहीं टिकती। हुआ भी यही ! बड़े भाई ने जो सारा धन दिया था, वह कुछ ही दिनों में छोटे भाई ने व्यर्थ के कामों में खर्च कर दिया। वह आलसी और निकम्मा बन गया। एक दिन उसकी अकर्मण्यता के कारण छोटे भाई ने अपने बड़े भाई पर ही घूंसा चला दिया। बड़े भाई ने उसे बचा भी लिया, मगर उसे संसार के रिश्तों से घृणा हो गई। उसने एक मुनि से जाकर दीक्षा ग्रहण कर ली। इधर छोटे भाई ने भी एक तापस के पास जाकर संन्यासी वेष धारण कर लिया।

अंत में बड़ा भाई वसुधर चौदह पूर्व का अध्येता होकर आचार्य पद पर विराजमान हुआ, लेकिन वसंत का जीव सर्प बनकर यहाँ-वहाँ डोलने लगा। कालांतर में दोनों की भेंट हुई, जाति स्मरण ज्ञान के आधार पर पूर्व जन्म के बैर को समाप्त करते हुए उसने अनशन कर लिया और अनशन पूर्ण करके सौधर्म देवलोक में चला गया। दोनों ही सिद्ध गति को प्राप्त हुए, तभी तो कहा जाता है कि द्रव्य और भाव दोनों प्रकार से बन्धु ही आपदा में साथ देता हैं।

✧✧

विहार यात्रा

सम्भल कर चलें, सुरक्षित चले

वाहनों की तेज रफ्तार से टूट रही है सांसे

- **अविनाश चोरड़िया जैन,** राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

गत अंक में मैंने विहार यात्रा के सन्दर्भ में एक निवेदन किया था। **गत आलेख में विहार यात्रा का आध्यात्मिक पक्ष को सामने रखा था।** इस अंक में आज की परिस्थितियों नियमों में लापरवाही संवेदनहीनता, सड़कों की खामियाँ आदि कई अहम् कारणों पर अपनी बात रखते हुए कतिपय निवेदन करना चाहता हूँ।

मैं चाहूँगा कि मार्ग में विहार करते हुए हमारा त्यागीवर्ग यह स्मरण अवश्य रखें कि वर्तमान युग तेज भागमभाग का युग है। सभी एक दूसरे को पीछे छोड़ते हुए अपनी मंजिल पर पहुँचना चाहते है। इस भागमभाग में नियमों की अनदेखी, सड़कों की टूट फूट, अकुशल ड्राइवरों, हेल्परों द्वारा वाहन संचालन मुख्य समस्या है।

कंप्युटरीकरण और नेटवार्किंग के बावजूद आर. टी. ओ. में भ्रष्टाचार अभी भी सरकार के लिए सिरदर्द बना हुआ है। 'वाहन' और 'सारथी' पोर्टल भी इस समस्या का समाधान करने में विफल साबित हुए है। ड्राइविंग लाइसेंस (DL) बनाने की प्रक्रिया के ऑनलाइन होने के बावजूद दलालों का दखल समाप्त नहीं हुआ है। पहले वे कागजों के जरिये काम करते थे अब कंप्यूटर से लोगों को ड्राइविंग टेस्ट में पास करा रहे हैं।।

सड़क सुरक्षा को लेकर केन्द्र सरकार पिछले तीन सालों में काफी काम किया है। न केवल संशोधित मोटर वाहन विधेयक संसद में पेश किया गया है, बल्कि राजमार्गों पर ब्लैक स्पॉट्स की पहचान कर उन्हें दुरुस्त करने का अभियान भी छेड़ा गया है। सड़कों के डिजाइन को पहली मर्तबा सड़क सुरक्षा के साथ जोड़ा गया है। सड़क सुरक्षा पर पांच वर्षों में 11 हजार करोड़ रुपये खर्च करने को सरकार की घोषणा भी उसकी मंशा को दर्शाती है। लेकिन, आरटीओ की भ्रष्टाचार पर अभी नकेल नहीं लग पाई है। इसके कारण DL और RC जारी करने की प्रक्रिया ऑनलाइन होने के बावजूद दलालों की घुसपैठ जारी है। बस इसका स्वरुप बदल गया है। पहले दलाल पैसे लेकर सब कुछ करवाने का ठेका लेते थे। अब वे केवल टेस्ट दिलाने का ठेका लेते हैं।

अब भी देश में अच्छे किस्म के ड्राइविंग ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट खोलने की सरकार की योजना राज्यों की उदासीनता का शिकार हो गई है। हालांकि, सड़क व परिवहन मंत्रालय ने कौशल विकास मंत्रालय के साथ देश में 100 ड्राइवर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट खोलने का समझौता किया है। लेकिन, उसमें अभी समय लगेगा। फिलहाल ज्यादातर वाहन चालक गली-मौहल्लों में खुले डग्गामार ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट्स से की काम चला रहे हैं। जहां तक वाहनों की फिटनेस का सवाल है तो इस मामले में स्थिति और भी ज्यादा दयनीय है। ज्यादातर राज्यों में आर. टी. ओ. के पास अपने टेस्ट ट्रैक तक नहीं हैं। अनेक महत्वपूर्ण राज्यों में भी अभी तक केवल एक-दो टेस्ट ट्रैक बने हैं। बाकी जगहों पर टेस्ट ट्रैक या तो नहीं हैं या बनने की प्रक्रिया में हैं। हालांकि, सरकार ने फिटनेस टेस्ट के नियमों और प्रक्रियाओं का सरलीकरण कर दिया है।

लेकिन, अभी भी फर्जीवाड़ा बंद नहीं हुआ है और ज्यादातर फिटनेस सर्टिफिकेट बगैर समुचित टेस्ट के खानापुरी करके जारी किए जा रहे हैं। कई आर. टी. ओ. के पास फिटनेस जांचों का कोई रिकोर्ड नहीं है।

इन परिस्थितियों में मेरा निवेदन है कि सम्भल कर चले, सुरक्षित चलें। कुछ बातों का स्वयं ही ध्यान रखें कि मार्ग में चलते लम्बी वार्ता न हो। सड़क पर चल रहे वाहनों की गति व बचाव की स्थिति, आगे पीछे चलने की बजाय, साथ-साथ चलना, सजग सावधान चलना ज्यादा जरुरी है।

व्हील चेयर चलाने वाले धकलेने वाले ट्रेंड हो। पढ़े लिखे व सड़क नियमों के जानकर हों। ऊँचाई और ढ़लान पर खतरनाक मोड़ पर पहाड़ी एरिया में सकरे पुल-पुलिया पर, टूटी-फूटी सड़क पर ज्यादा सावधानी अपेक्षित है।

प्राचीन पद्धति का पालन सुरक्षित है : प्राचीन समय में विहार ग्रामानुग्राम होता था, राजपथ या जनपथ पर संत-साध्वी समूह में श्रावक-श्राविका के साथ विहार करते थे। आज तक ऐसा एक भी उदाहरण नहीं है जब समूह में दुर्घटना हुई हो। समूह में संघ और संत का विचरण हो रहा हो तो वाहन स्वयं नियंत्रित हो जाते हैं। समूह में चलने पर श्रावक समाज स्वयं भी व्यवस्था में लग जातें हैं। इस प्रकार श्रावक समाज की भूमिका नगरों, कस्बों, ग्रामों में तो नजर आती मगर मार्ग में तो वही असंग अकेलापन होता है, या मार्ग पर चलने वाले साधु-साध्वी जी ही होते हैं। **यही कारण है कि ईर्या समिति के अन्तर्गत स्पष्ट निर्देश है कि - "प्रासुक मार्ग से दिन में चार हाथ प्रमाण आगे की भूमि देखकर संयमी को विचरण करना चाहिये।"**

श्रमण-श्रमणी को मन्दगति से, उद्वेग रहित होकर, चित्त की आकुलता मिटाकर चलना चाहिये।

मैं आशा करता हूँ समस्त संघ परस्पर सहयोग से विहार को सुखद, निरापद रखने में सफल होगा।

✧✧

जहाँ समता भाव है, वहीं शांति है ...

एक समय एक अध्यात्मरसिक संत के पास एक श्रावक ने जाकर कहा - 'बापजी कोई ऐसा उपाय बताओं कि जिससे हमें सुख-शांति प्राप्त हो जाएं', संत ने कहा - 'भाई तुमने सुख-शांति प्राप्त करने का उपाय पूछा है, मैं हमेशा कहता हूँ कभी अपने आपमें विषम भाव मत आने दो ! जहां संभव है वहां शांति है।'

अब रही बात सुख की 'साधु हो या श्रावक दोनों के लिए आगमों में निर्देश है कि दोनों की शोभा समता से जुड़ने पर ही है। समता नहीं होगी तो सारी साधना निष्फल चली जाएगी। भाई उस ज्ञान, ध्यान, तपस्या का क्या प्रयोजन यदि मन से विषमता नहीं गई ?' इसलिए समभाव के महत्व को जानों और समभावी रहो।

श्रावक ने पुनः पूछा - 'भगवन् यह समभाव कैसे प्राप्त करुं?

गुरुदेव बोले - 'अभी तुमने ठीक प्रश्न पूछा है। जहाँ समभाव की चर्चा सुनने और करने में सरल लगती है, वहीं समभाव को साधना अत्यंत दुष्कर है। प्रत्येक आत्मा शक्तियों से संपन्न है, लेकिन अंतर बाह्य के अंदर यदि समभाव के प्रति जिज्ञासा नहीं है और अनुकूलता, प्रतिकूलता, लाभ-अलाभ, संयोग-वियोग, यश-अपयश, जीवन-मरण जैसे प्रश्नों पर उलझकर कामनाओं से मुक्त ही नहीं हुआ जा रहा तो समभाव कैसे प्राप्त होगा?

समभाव के लिए समभाव में लीन रहना आवश्यक है। अभिप्राय स्पष्ट है कि समभाव के बिना कितनी ही तीर्थ यात्राएं कर लों, तपस्याएं कर लो, लेकिन उनका लाभ कर्म-निर्जरा या कर्म-क्षय के लिए हो पाना असंभव है। मेरी शुभकमना है कि मन-मंदिर में समभाव के दीप हमेशा प्रज्जवलित रहें तो जीवन में सुख और शांति दोनों ही प्राप्त हो जाएगी।

✧✧

संघीय उन्नति हेतु आवश्यक है आत्मानुशासन

- चंदनमल चोरड़िया जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

प्रत्येक संघ प्रेमी, समाज प्रेमी यह इच्छा रखता है कि हमारा संघ सर्वोत्कृष्ठ संघ बने। सर्वोत्कृष्ठ की यह अपेक्षा केवल चाहने मात्र से नहीं हो सकती। यदि हम अपनी दुनिया को बदलना जरुरी समझते हैं तो हमें सर्वप्रथम स्वयं को बदलने से शुरूआत करनी होगी। यह शुरूवात प्रवचनों से नहीं हो सकती केवल आलोचना निंदा से भी नहीं हो सकती। यह तो सामुहिक बदलाव से ही हो सकती है। यहाँ मैं कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहा है कि हम क्या करें कि हम अपने संघ पर गर्व कर सकें।

इसकी प्रथम शर्त है आत्मानुशासन। आत्मानुशासन के लिये आवश्यक नहीं कि हम सभी सांसारिक सुविधाओं को त्याग दें। हमें आत्मानुशासन के लिये संघीय आज्ञाओं समाचारी और संस्थागत नियम कायदों को मानना ही होगा। यदि हम औरों को अनुशासित देखना पसंद करते हैं तो सर्वप्रथम हमें ही इसकी शुरुवात करनी होगी। आत्मानुशासन के बगैर हम किसी भी सिद्धि को प्राप्त नहीं कर सकते। वास्तव में आत्मानुशासन आत्म प्रशिक्षण है जिसका अभ्यास हमें निरंत्तर करना आवश्यक है। यहां केवल दर्शन एवं बौद्धिक ज्ञान को जानने भर से हम संघ की सेवा नहीं कर सकते। संघ की सेवा के लिये हमें दर्शनों के सारभूत नियमों को अपने जीवन में कैसे प्रयोग किया जाये यह जानना करना आवश्यक है।

संघीय उन्नत्ति हेतु अनुशासन की आवश्यकता तो है ही लेकिन अनुशासन को भी कठोरता पूर्वक थोपा नहीं जा सकता। वरन् संघ के अंक के रूप में प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं समर्पित करना होगा। कठोरता के साथ थोपना एवं उसे अनुकरण कराने के लिये प्राचीन नियम कायदों को हवाला देना आज के युग में समीचीन नहीं है।

आत्म परिवर्तन के मार्ग में आत्मानुशासन दोनों के लिये ही आवश्यक है। चाहे वह संन्यासी त्यागी हो, संत-साध्वी हो या श्रावक-श्राविका। श्रावक श्राविकाओं को तो इसीलिय जिनवाणी में पंच महाव्रतों से इतर बारह व्रत निरुपित किये गये हैं। यानि दोनों की भूमिका में परस्परता के साथ-साथ अलग-अलग नियम कायदों को मानना आवश्यक है। क्योंकि संसारी पूज्य प्रवर त्यागात्माओं की तरह संसार को त्यागकर एकाकी जीवन नहीं जी सकते। लेकिन अपने घरों में संस्कार, सेवा और धर्मनिष्ठा को तो बनाये रख सकते हैं। क्योंकि श्रावक और पूज्य संत दोनों ही चर्तुविध संघ में परस्पर पूरक हैं।

भगवान महावीर के संघ को चर्तुविध होने की वजह से ही तीर्थ कहा गया है। तीर्थ कहने का अर्थ ही यह है कि हम एक आज्ञा के अंतर्गत तिरने और तारने की प्रक्रिया में सतत् लगें। हम ऐसे कार्यों को जीवन में प्राथमिकता दें जो हमें जिन आज्ञानुसार जीवन जीने में समर्थ बनाये।

मैं यहां एक बात पर और जोर देना चाहूंगा कि हमारे त्यागी वर्ग ने तो सांसारिक सुखों को त्यागकर अपने आप को धर्म प्रचार संघीय अनुशासन, संघ संवध न, संगठन और मानवता हितैषी कार्यों को लिये स्वयं को समर्पित कर दिया। लेकिन क्या श्रावक समाज का यह कर्त्तव्य नहीं कि इन महान लक्ष्यों को साधने और सफल बनाने हेतु स्वयं भी संतों से भी बढ़कर पुरुषार्थ करें। जैसे आप मानव हैं। आपको अपनी मानवीय गरिमाओं का ईमानदारी से पालन करना, मूल्यों के प्रति

समर्पित रहना और समय आने पर यथाशक्ति दान सेवा एवं समर्पण भाव से स्वयं को प्रस्तुत करना। जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक संघ की उन्नति का स्वप्न साकार नही हो सकता।

उदाहरण के लिये यदि आप एक चिकित्सक हैं, एक आरोग्यकर्त्ता हैं तो अनेक जन जो रोगी हैं, पीड़ित हैं आपके ऊपर आवश्यकता से अधिक निर्भर हो जाते हैं ऐसे में यदि आप अपने चिकित्सीय कर्त्तव्य का पालन नहीं करेंगे तो आप में और रोगी में क्या फर्क रह जायेगा? इसका अर्थ ही यह है कि हम अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपना जीवन निर्वाह करें। यही आत्मानुशासन है।

कोई हमें कहे, बताये, टोंके और यदि हम गलत मार्ग पर हैं तो हमें चेताए। ऐसे में हमें बुरा क्यों मानना चाहिए। हमारे भले के लिये कहा जा रहा है तो हमें सहज स्वीकार करना ही चाहिए। एक महात्मा उपदेश देते हुये यदि हमारे दुर्गुणों को समाप्त करने के लिये प्रेरणा प्रदान करता है तो, प्रत्याख्यान करता है तो में सहज ही स्वयं को समर्पित करना चाहिए। आत्मानुशासन के लिये ना केवल आदेश आवश्यक है आज्ञापालन भी आवश्यक है। जब सामुहिक रूप से हम कर्त्तव्य पालन करेंगें तो स्वयं को आत्मानुशासित होंगे ही अपने संघ को भी, अपने समाज को भी गौरव प्रदान करने में सफल होंगे। ✧✧

हम बदलेंगे

युग बदलेगा

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय युवा शाखा के तत्वावधान में

नासिक जिल्हा स्थानकवासी जैन समाज, जैन महासंघ द्वारा

सोमवार, 01 जनवरी 2018 को

पंडित रत्न उप-प्रवर्तक परम पूज्य श्री प्रमोद मुनि जी म. सा. आदि ठाणा एवम् गोडल सम्प्रदाय के उवसग्गहरं स्तोत्र साधक राष्ट्रसंत परम पूज्य श्री नम्र मुनि जी म. आदि ठाणा, युवा केसरी, संस्कार मंच प्रणेता परम पूज्य श्री सिद्धार्थ मुनि जी म. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में

महामांगलिक का आयोजन

सभी श्रद्धालु युवा समाजसेवी एवम् धर्मनिष्ठ श्राविका बहनें सादर आमंत्रित हैं।

:: निवेदक, आयोजक, संयोजक ::

शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू', रवि लोढ़ा जैन, नवीन मुणोत जैन, गणेश सांखला जैन चेतन बरड़िया जैन, आदेश खिंवसरा जैन

जीवन की अंतिम मुस्कान को संजोने वाले संत पू. प्रवर्तक गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. सा.

- भंवरलाल डी. बोहरा जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

पू. प्रवर्तक गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. सा. के पुण्य स्मृति दिवस पर आपके महान जीवन की कई विलक्षण विशेषताएँ भी स्मरण में आती है। आप श्री जब जीवन के संध्याकाल में थे तो अनेक भक्तों को ज्ञान है कि आप अपने आप में लीन हो चुके थे। आपका चिंतन व आचरण इस प्रकार से निखर चुका था कि आप तीनों मनोदशाओं को जी रहे थें उनमें सर्वप्रथम थी **निर्भयी वृत्ति, मोहमुक्ति और कामना मुक्ति।** इस प्रकार आप सर्व प्रकार के भयों से मुक्त हो चुके थे।

आपकी संयम यात्रा इन क्षणों में पूर्ण सात्विक और संयममय बन चुकी थीं आपका एक मात्र लक्ष्य था शरीर और मन के विकारों से मुक्त होकर धर्म साधना करना एवं कर्मक्षय करना। शरीर की क्षुधा, पिपासा, क्रोध, आकांक्षाओं को शांत करते हुए विवेकपूर्वक धीरे-धीरे आत्म-विकास की उच्चतम ऊंचाईयों को छूना।

आपके शिष्य प्रशिष्य आवश्यक सेवाओं का अधिकाधिक ध्यान रख रहे थे तो भक्त श्रद्धालु आपके प्रति गहन भक्तिभाव रखते हुए आपके क्षण-क्षण को मूलयवान समझकर श्रद्धाभिभूत हो रहे थे, समस्त वातावरण में एक भावुकता सघन होती जा रही थी। लेकिन आत्मा सकल श्रद्धा के शिखर पर आरूढ़ थी। वो पके फल की भाँति समस्त विकल्पों से मुक्तों होती जा रही थीं। यही तो है सच्चा वैराग्य जो हर जगह उपलब्ध नहीं होता, जिस प्रकार पुष्प अपने खिलाव के क्षणों में अपनी सुगंध से सम्पूर्ण वातावरण में एक आत्म प्रिय अहसास का प्रसार करता रहता है। जैसे धूप, कपूर या दीप जिस तरह स्वयं जलकर अशेष होने तक अपना प्रकाश फैलाते हैं उसी प्रकार महान संत, सूरमा और धर्मज्ञ पुरुष, ज्ञानी और विद्वान सज्जन पुरुष प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन अपनी गति, मति, सम्मति के साथ जीते हैं।

संगीत की लय जैसे सुनते जाते समय मधुर लगती है, समय बीतने पर भी अपनी लयकारी से मोह लेती है। आनंदमय स्मृति छोड़ने में कामयाब होती है।

उत्तराध्ययन सूत्र में मरण के दो प्रकार बताए गए है - **सकाम मरण और अकाम मरण।** **सकाम मरण** को प्राप्त होने वालों में संत एवं राष्ट्रहित में बलिदान देने वाले सैनिकों एवं मानवता के लिये जीने वाले त्यागी दानवीरों की चमचमाती पांत आती है। यही कारण है कि ऋषि मुनि, श्रमण-श्रमणी शैय्या संतारक बिछाकर रात्रि में निद्रासीन होते हैं तो प्रतीकात्मक समाधिमरण का शुभ भाव लेकर सोते हैं। इनका यह सोना भी जागने के समान होता है।

होश हवास के साथ एक महान लक्ष्य मुक्ति और संकल्पबद्ध होकर मृत्यु शय्या पर सोना वीरों का काम है। कापुरुष, कायरों का नहीं। **श्रमण भगवान महावीर ने जिस जीवन दर्शन को संसार के समक्ष प्रस्तुत किया वो अपने आप में व्यापक होने के साथ-साथ बहुत ही वैज्ञानिक है।** महावीर कहते हैं- **जीव जिस दिन जन्म लेता है उसी क्षण से मृत्यु का प्रभाव प्रारंभ हो जाता है। वास्तव में मृत्यु की जीवन में उल्टी गिनती चलती है। इसी को अध्यात्म की भाषा में 'अविचिमरण' कहा जाता है।**

हमारे जैन संत इसी जीवन दर्शन की जीवंत

प्रयोगशाला हैं ये अपना प्रांरभ ही इस संकल्प के साथ करते हैं कि **"जीऊं हजारों बरस या मृत्यु आज इसी क्षण आ जाएं"**। ये संकल्प वीर पंथ का पथिक ही कर सकता है। पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. इस संकल्प के अग्रणी सैनानी थे। आपका निष्ठा सम्पन्न संत जीवन कठिन परीक्षाओं से प्रारंभ हुआ लेकिन कदम-कदम आगे बढ़ते हुए 'जंगम-तीर्थ' में बदल गया। आप जिस दिन दीक्षित हुए मोह की बेड़ियों को तोड़कर दीक्षित हुए थे, यही कारण हे कि अपनी अंतिम सांस तक जीवंत जीवन की मुस्कान को अधरों पर संजोए रहे।

आपका जीवन दर्शन परोपकार उद्धार और कृपा भाव में समाया हुआ है। जिसे उन भक्तों ने प्रत्यक्ष देखा है जो आपके दर्शन वंदन और से कृतार्थ हुए, लेकिन वे भी अभिभूत हैं, जिन्होंने आपको देखा नहीं वे इस कीर्ति कथा को सुनकर अनुकरण योगय मानकर अनुशरण कर रहे हैं। इन्हीं शब्दों के साथ शत् शत नमन्। ✧✧

शुभ की सम्पत्ति या पाप का संचय ...!

ज्ञानीजनों का कहना है - 'सम्यक् प्रतिपत्ति : - सम्पत्ति, अर्थात जो न्यायपूर्ण शुद्ध व सही तरीके से प्राप्त होती है, वहीं सच्वे मायनों में सम्पत्ति है, वही लाभदायी सिद्ध होती है। अन्याय व गलत तरीके से प्राप्त की जाने वाली सम्पत्ति-'सम्पत्ति' नहीं विपत्ति का कारण बनती है।

संसार में कल्याण मार्ग की व्याख्या करने वाले महापुरुषों ने कहा है कि जो लोग शुभ से जुड़े हैं, उनके जीवन में लाभ ही लाभ है। इसीलिए पुण्य को आराधना कहा गया है। जहाँ पापों की संलग्नता होती है, वहाँ पहले क्रोध आता है, फिर लोभ आता है, फिर अंर्तकलह आता है और अंत में परिणती स्वरूप जीवन दुःखों का समूह बन जाता है।

बुद्धिमान आदमी इनमें से किसे चुनेगा, शुभ की सम्पत्ति या पाप का संचय ।

पाप का संचय सफलता के रूप में दिखने में तो अत्यंत विशाल होता है, तमाम तरह के सांसारिक आडंबर, लोक लुभावन नारेबाजी औरों को नीचा दिखाने का घृणित कार्य, अपने ही लोगों को अपमानित करने की घृणित प्रवृत्ति ये ऐसी बातें हैं जो पाप के संचय को बढ़ावा देती हैं, पाप का पुण्य मानने का भ्रम पैदा करती हैं, अहंकार, ईर्ष्या और क्रोध से व्यक्ति को भर देती है। लेकिन जब शक्ति क्षीण होने लगती है, प्रारब्ध में, पुण्य में क्षय होने लगता है तो धीरे-धीरे ऐसे लोग जिन्होंने पाप की कमाई से अपना विशाल साम्राज्य खड़ा किया है वे देखते-देखते ध राशायी हो जाते हैं।

आध्यात्मिक जगत में इसीलिए पुण्य संचय का आग्रह सदैव बना रहता है। सदैव पाप से डरने की प्रेरणा दी जाती है, क्योंकि पाप की आयु किसी भी क्षण समाप्त हो सकती है। ऐसा दिखावटी संचय निश्चित रूप से दुःखों का कारण बनता है। हमारे संत-महात्मा त्याग की अनुमोदना करने के साथ-साथ सदैव यह प्रेरणा देते हैं कि हम सुकृत श्रम से कमाए धन से ही अपना जीवन निर्वाह करें, पाप की कमाई से बचें। ✧✧

81वीं जन्म जयंती पर विशेष ...

ज्ञान सिन्धु पू. गुरुदेव सौभाग्यमुनि जी म. 'कुमुद' : कोटि-कोटि नमन

- **ओंकार सिंह सिरोया जैन,** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

पूज्य गुरुदेव श्रमण संघीय महामंत्री, आध्यात्म सुमेरू, भारत विभुत ज्ञान सिन्धु पू. श्री सौभाग्यमुनि जी म. सा. 'कुमुद' का **जन्म 10 दिसम्बर 1936 को संवत् 1994 मगसर सुदी सप्तमी ग्राम आकोला, चितौड़गढ़ माता नाथ कुंवर गाँधी की कुक्षी से हुआ, आपके पिता प्रसिद्ध दानी श्रावक रत्न श्रीमान नाथूलाल जी गाँधी।** आप माता-पिता की चौथी संतान हैं। श्री नाथूलाल जी गाँधी मेवाड़ स्टेट में पटवारी थे। बहन सज्जन का विवाह हो चुका था। भाई गौरीलाल जी गाँधी युवा थे। बहन उगम कुंवर जी भी बड़ी हो गई थी। आपका बचपन का नाम 'सुजान' था। तीन चार वर्ष की आयु में ही पिता का स्वर्गवास हो गया। पुत्री उगम पुत्र गौरीलाल का विवाह कर दिया। उगमकुंवर के पति का भी स्वर्गवास हो गया। बालक सुजान (सौभाग्य मुनि जी) का मस्तिष्क अत्यधिक संवेदनशील और मार्मिक था। आप बहनोई जी की मृत्यु से बहुत प्रभावित हुए। उस समय महासती पू. श्री सोहन कुंवर जी म. आकोला आये और उन्होंने बहन उगम कुंवर को प्रतिबोधित किया। बहन संसार की निःसार भोग चुकी थी। अतः उसने साध्वी जीवन ही श्रेयस्कर समझा। बहन ने भाई से कहा 'सुजान' मैं दीक्षा लूंगी तेरा क्या विचार है? सुजान ग्यारह वर्ष का था बहन तुम साध्वी बनोगी तो मैं भी साधु बनूंगा।

उसी वर्ष मेवाड़ भूषण पूज्य श्री मोतीलाल जी म., पू. श्री भारमल जी म., पू. श्री अम्बालाल जी म. आदि ठाणा नौ वर्ष का वर्षावास आकोला में ही था। जब श्री नाथूलाल जी के बड़े भाई श्री गुलाब चंद जी गाँधी को दीक्षा के बारे में जानकारी मिली तो विरोध किया। काफी समझाने के बाद आपने माता नाथ कुंवर व बहन उगम कुंवर की दीक्षा को अनुमति दे दी। किन्तु 'सुजान' को बहन सज्जन देवी के वहां (बम्बोरा) ले गये। सुजान अपनी दीक्षा में आये व्यवधान से बहुत दुःखी थे, वहां से वह किसी तरह निकलकर ट्रेन से मारवाड़ जंक्शन आ गये। रास्ते में पुलिस ने तंग किया, किन्तु एक दयालु पुलिस वाले ने मदद की। वे वहां से मावली जंक्शन पहुंच गये। वहां से गुरुदेव का पता लगाकर खेरोदा पहुंच गये। पूज्य श्री मोतीलाल जी म. आदि मुनि मंडल वहां विराजित थे। यहां पर भी फिर संसारी रिश्तेदार पहुंच गये। हमको जान यह देलवाड़ा निवासी मोड़ीलाल जी आपको ले आये। वहां से रामा भेज दिया। तीन माह तक आप ग्राम रामा में रतन सिंह माण्डोत के पास रहे। **अंततः कडिया ग्राम में संवत् 2006 माघ सुद पूर्णिमा को एक वट वृक्ष के नीचे पांच सात भाईयों की उपस्थिति में चुपचाप जैन भगवती दीक्षा अंगीकार कर ली। वहीं गुरुदेव, पू. श्री अम्बालाल जी मा. ने 'सुजान' को 'सौभाग्यमुनि' के रुप में परिवर्तित कर दिया।** आपने संस्कृत, प्राकृत हिन्दी की परीक्षाएं उत्तीर्ण की। सौभाग्यमुनि जी की योग्यता की चर्चाएं घर-घर चलने लगी। गद्य-पथ की अनेक पुस्तकें पाठकों के कर कमलों में पहुंचने लगी। सेवामूर्ति 'अनाथमुनि' 'विष विजय' जैसे खण्ड काव्य साहित्य जगत में अप्रियतम महत्व रखते हैं, महावीर वृत विहार जिसका विस्तार पांच पदों में है।

आपके द्वारा आगम शास्त्र के अनुवाद का क्रम गतिमान है। इसके अंतर्गत विपाक् नंदी, अंतकृत उत्तराध्ययन आदि शास्त्रों का प्रकाशन हो चुका है। अनेक शास्त्रों का अनुवाद प्रगति पर है। ये शास्त्र पू. श्री घासीलाल जी म. की संस्कृत टीका से युक्त है।

अपनी कर्मठता के दर्शन हमें अपनी प्रेरणा से बनी विशाल संस्थाओं से होना है। **'धर्म ज्योति' परिषद, अम्बेश गुरु चिकित्सालय, अम्बेश गुरु स्वाध्याय सदन भीलवाड़ा में काम कर रही है। श्री अम्बेश गुरु शोध संस्थान उदयपुर में है।** जहाँ हजारों हस्तलिखित तथा प्रकाशित ग्रंथों का विशाल संग्रह है। गंगापुर में अम्बेश गुरु रेफरल हॉस्पीटल, भादसोडा में अम्बेश गुरु छात्रावास, नाथद्वारा में मान गुरु स्मृति भवन, कोशीथल में महासती सज्जन प्रेम संस्थान, आकोला में महासती नाथ कुंवर स्मृति संस्थान, फतहनगर में अम्बेश गुरु पावन धाम, अहमदाबाद-उदयपुर में शास्त्र प्रकाशन समिति मेवाड़ से मुंबई तक फैले हुए अनेक महिला मंडल मुंबई उपनगरों में बने हुए हैं। संस्थान (स्थानक भवन) मेवाड़ का गौरव 'मेवाड़ भवन' मेव गोरे गांव में बना हुआ विशाल स्थानक भवन है। इसके अलावा अनेक संस्थाएं कार्यरत हैं। मुनि श्री ने कभी भी किसी को कहीं भी दान राशि लिखने को नहीं कहा। भक्त गुरु भावना को पहचान कर कार्यरत रहते हैं। श्रमण संघ निर्माण के बाद मुनि श्री सर्वप्रथम युवाचार्य श्री मधुकर जी म. के सचिव रहे। फिर श्रमण संघ के महामंत्री और पूना सम्मेलन में आचार्य सम्राट पू. श्री आनन्दऋषि म. ने आपको श्रमण संघ का महामंत्री मनोनीत किया। आपका प्रशासनिक अनुभव बहुत गहरा और सूझ-बूझ वाला है। 28 वर्ष बाद इंदौर नगर में आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म. के सान्निध्य में लगभग 550 संत-सतियों का साधु सम्मेलन हुआ। उसमें अनेक प्रस्ताव पास हुए व भविष्य के लिये पू. श्री महेन्द्र ऋषि जी को श्रमण संघ का युवाचार्य मनोनीत किया। इसमें आपकी भूमिका अहम रही। आपने कुशलता पूर्वक आचार्यश्री जी के निर्देशानुसार सभी कार्य बहुत बड़ी अच्छी तरह से पूर्ण किये यह सब आपकी दूरदृष्टि विद्वतता व समन्वय का ही परिणाम है।

आज पूज्य गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. का सारे भारतवर्ष में एक गौरवशाली नाम है तो इनके पीछे परम गुरुभक्त पू. श्री सौभाग्यमुनि जी म. की मुख्य देन है। **आपने गुरु को जनता में भगवान की तरह स्थापित कर दिया है। गुरुभक्ति का इससे बड़ा ज्वलंत प्रमाण और कहीं नहीं मिलेगा।**

पूज्य गुरुदेव श्री सौभाग्यमुनि जी म. 'कुमुद' सचमुच एक पांव-पांव चलता सूरज है, समाज और लोक जीवन के प्रत्येक कोने को उजाला देने का आपका प्रयास रहा है। वीरवाल समाज इसका उदाहरण है। मुनि श्रीजी की उपलब्धियाँ इतनी है कि वे एक छोटे से लेख मे गिनाई नहीं जा सकती। महामंत्री प्रवचन के धनी इस संत रत्न के समाज को और भी अनेक आशाएं हैं। इनका स्वास्थ्य सही रहे, दीर्घायु हो वह लम्बे समय तक संघ व समाज को आपका नेतृत्व मिलता रहे। ऐसी शुभकमानाएँ करता हूँ।

✧✧

लोभ है, कितना अनर्थकारी ? ...

भगवान महावीर ने काम को कषाय से अलग नहीं गिना, उसे लोभ में ही समाविष्ट कर दिया। क्योंकि लोभ इतना बलवान है कि उससे शायद ही कोई बच पाएं। अध्यात्म पथ पर चलने वाले भी इस लोभ के वश हो जाते हैं। रामचरितमानस के महान रचयिता एवम् भारती समाज के सुधारक, चिन्तक, संत कवि तुलसीदासजी ने लिखा है - ' ज्ञानी, तापस, सूर, कवि, कोविद गुण आगार,

केहिकी लोभ विडंबना, किन्ह सिह संसार ।।

अर्थात् ज्ञानी, संत, सूरमा, कवि, गायक सभी गुण के आगार है, लेकिन लोभ से कोई-कोई ही वंचित रह पाता है।

✧✧

सहयोग बिना सुझाव व्यर्थ है

- महेन्द्र बोकरिया जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

प्राचीन समय में एक राजा थे। वे सदैव प्रजा के हित में कार्यरत रहते थे। एक दिन वे गुप्त रुप से नगर भ्रमण हेतु निकले तो जगह-जगह चौपाल लगा कर लोगों को अनावश्यक चर्चा में लगे हुए देखा। राजा ने आंखों देखा और कानों सुना कि "हमारे राजा के पास समझदार सुझाव देने वाले लोग नहीं हैं। तभी तो हमारे नगर में कई समस्याएं हैं।"

राजा ने उसी समय एक निश्चय कर लिया कि - मैं कल ही एक सूचना देता हूँ और ऐसे सभी लोगों से सहयोग लेता हूँ।

दूसरे दिन नगर नियोजन के संबंध में राजा ने सहयोगी एवं सुझाव कर्त्ता ऐसे दो बॉक्स मुख्य चौक में लगवा दिए और मुनादी करा दी कि **"सहयोग अपेक्षित है, सुझाव भी दे सकते है।"**

लेकिन वाग्वीरों ने सुझाव की दो पेटियाँ भर दी मगर सहयोगियों के नाम कम ही मात्रा में आएं। तो लोग सहयोग करने वाले थे, वे राजा से मिले और उन्होंने अपने अपने काम और काम करने के तरीके बताए, राजा ने सबको उनकी योग्यतानुसार काम पर लगा दिया।

अब एक नई बात हुई कि काम करने वाले काम कर रहे थे और जो सुझाव देने वाले थे, वे भीड़ लगाकर तमाशा देख रहे थे।

यह स्थिति तब भी थी और आज भी है। इसीलिए दुष्यंत नाम के कवि ने लिखा है कि

दुकानदार तो मेले में लुट गए यारों !
तमाशबीन दुकानें लगा के बैठ गए ।।

ये कितना बड़ा व्यंग है! हम इसे समझें आज की समस्त सामाजिक संस्थाओं में सहयोग देने वाले अत्यंत अल्प हैं तो सुझाव देने वालों की लिस्ट लम्बी है। अब आप कहेंगे कि समस्या तो आपने गिनवा दी मगर समाधान नहीं बताया, तो मेरे हिसाब से निम्न बातें सामाजिक संस्थाएं अपना लें और हर सदस्य अपना वास्तविक दें यह सुनिश्चित हो। **संस्था में सुझावों का आदर हो लेकिन जिनका नियमित सहयोग हो वे ही सुझाव दें, यह नियमतहः स्वीकार कर लिया जाएं।**

1. प्रत्येक सदस्य का क्या-क्या योगदान अनिवार्य है, ये कर्त्तव्य की श्रेणी में रखा जाएं। समय सीमा में सदस्य ने दायित्व पूर्ण किया कि नहीं, इसकी सतत् समीक्षा हो।

2. सहयोग देने वाले ही प्रौन्नत हों। संस्था में एक **'स्वस्थ प्रतियोगिता'** चलती रहे, जो सदस्य संस्था के हित में या संस्था के निर्धारित लक्ष्यों में सर्वाधिक योगदान दें उन्हें पुरुस्कृत किया जाए।

3. अधिकारों को, सुझावों को योगदान की तराजू में तोल कर आगे बढ़ाने या सुनिश्चित करने में समय समय पर चर्चा हो।

4. सहयोग बिना सुझाव व्यर्थ हैं, ये बात हर सदस्य को अच्छी तरह से पता हो, संस्था में संवाद की पूरी गुंजाइश हो सब की बात सुनी जाएं लेकिन उन्हीं बातों को प्राथमिकता प्राप्त हो जो सहयोग देने वालो ने अपने अनुभव से पूरी हार्दिकता से प्रस्तुत की हो।

मेरे मत में अब वो समय आ गया है। जब अधिकार संग कर्त्तव्य और सुझाव संग सहयोग का संतुलन बना कर समाज अपनी आस्था से जुड़ी बातों को सपनों से हकीकत में बदल कर संस्थाओं का भविष्य उज्जवल बनाया जाए।

जैन कॉन्फ्रेंस के सन्दर्भ में मेरे उक्त विचारों को माननीय पदाधिकारी गण एवं प्रत्येक सदस्य यदि आत्मसात् कर लें तो हमारी इस महान संस्था का बड़ा भला होगा।

oooo

बचपन और हम लोग

मशीनों से घिरा बचपनः एक गंभीर समस्या।

– शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू' राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

आधुनिकता के साथ हमारी दिनचर्या में काफी बदलाव आ गए हैं। लेकिन इसका सबसे अधिक प्रभाव बच्चों के जीवन पर पड़ रहा है। आज के दौर में बच्चे बाहरी खेल-कूद से दूर हो रहे हैं। और मशीनी उपकरणों से घिर गए हैं। जिससे न सिर्फ बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। बल्कि उनमें सामाजिक सरोकार की कमीं भी हो गई है। इलैक्ट्रानिक उपकरणों के बढ़ते इस्तेमाल के कारण इस तरह की समस्या बढ़ रही है। पार्क और खुले मैदान की कमी भी इसके लिए काफी हद तक जिम्मेदार है। उत्तरी दिल्ली के विभिन्न इलाकों में बच्चों के अभिभावकों की यह शिकायत है कि उनके बच्चे आउटडोर गेम से दूर हो रहे हैं। जिसके कारण उनका बचपन एक बंद कमरे में सिमट कर रह गया हे। अभिभावकों के साथ चिकित्सकों और शिक्षकों का भी यही मानना है कि यह एक गंभीर विषय है जिसके लिए सचेत होने की आवश्यकता है।

चिकित्सकों की मानें तो एक ओर अभिभावक अपने बच्चों की खुशी के लिए उनकी गलत आदतों को नजरअंदाज करते हैं, वहीं दूसरी ओर उनके स्वास्थ्य की चिंता भी करते हैं, लेकिन स्वस्थ जीवन के लिए स्वस्थ और संतुलित दिनचर्या को अपनाने से ही बच्चों से संबंधित इन परेशानियों को दूर किया जा सकता है। वहीं शिक्षक भी इसे लेकर चिंता जताते हुए इसमें बुनियादी बदलाव की अपेक्षा करते हैं ताकि बच्चों में सामाजिक शिष्टाचार और सरोकार के विकास के साथ स्वास्थ्य भी बेहतर बना रहे। इसके लिए आदतों में सुधार के साथ बच्चों को घर के बाहरी वातावरण में जीने के लिए प्रेरित करने की भी आवश्यकता है।

आज बहुत से बच्चे घर पर ही पूरा समय बिताते हैं। उन्हें आस-पड़ोस के मार्केट और अन्य जरुरी चीजों के बारे में भी जानकारी नहीं होती। बड़ों को नमस्ते करना भी नहीं आता। वाट्ससएप, कम्प्यूटर, मोबाइल और इलैक्ट्रानिक गेम जी उनकी दुनिया है। जन्मदिन भी ऑनलाइन ही मना लेते हैं। किसी भी बाहरी व्यक्ति से बात करने में उन्हें हिचक होती है। छुट्टियों में बच्चें घर से बाहर निकलना पसंद नहीं करते। निश्चित ही यह चिंता का विषय है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि इलैक्ट्रानिक गेम और कम्प्यूटर के प्रयोग बच्चों की बौद्धिक क्षमता को विकसित करते हैं। आधुनिकता से अवगत होना भी आवश्यक है, लेकिन इसे दिनचर्या बना लेना बेहद चिंता का विषय है। बच्चे की शारीरिक क्षमता अवरुद्ध होती है। शिष्टाचार की समझ नहीं पैदा होती। पढ़ाई से फुर्सत मिलते ही बच्चे पार्क में खेलने के बजाय कम्प्यूटर के सामने बैठ जाते हैं।

बच्चों के शारीरिक विकास के लिए उनका खेलना कूदना बहुत आवश्यक है। ऐसा नहीं करने से उनके हार्मोंस में गड़बड़ियां पैदा हो सकती है। लगातार बैठे रहने से बच्चें आलसी भी हो जाते हैं। इतना ही नहीं उनमें थॉयराइड, डायबीटीज़ और मोटापा जैसी बीमारियाँ भी घर बना सकती है। इसीलिए यह जरुरी है कि अभिभावक उन्हें शारीरिक श्रम वाले खेल को खेलने के लिए हमेशा प्रेरित करते रहें।

oooooo

श्री संघ में महासती चंदन बाला नारी शक्ति का प्रतीक है

- रुचिरा सुराणा जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा, जैन कॉन्फ्रेंस

मुझे एक बार पूज्य गुरुदेव श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' द्वारा लिखित एवं जैन प्रकाश में प्रकाशित एक लेख पढ़ने को मिला था । गुरुदेव ने लिखा था कि **महासती चंदन बाला को मत भूलो।** मैं इस लेख को पढ़कर बहुत प्रभावित हुई थी। वास्तव में महासती चंदन बाला जी ना केवल सौलह सतियों में बल्कि सम्पूर्ण नारी जगत में नारी शक्ति का प्रतीक है। यह सत्य है कि भारत की पुरुष प्रधान संस्कृति प्रांरभ से ही पुरुषों के नेतृत्व में संचालित होती रही है। लेकिन यहां नारी को भी सम्मानित स्थान सदैव प्राप्त रहा है।

मुझे दुःख होता है कि आज स्त्रियों के साथ दुरव्यवहार की अनेक घटनायें सुनने में आती हैं। परिवर्तित युग में एक ओर नारी जाति ने स्वयं अपनी सीमाओं को आधुनिकता के नाम पर तोड़ा है तो सौदर्य लोलुप कतिपय पुरुषों में भी नारी को पतित करने की होड़ सी लगी रहती है। यही कारण है कि नारी प्रतिभा का जितना सम्मान एवं जागरण होना चाहिए वह नहीं हो पा रहा है। एक स्वर उठता है कि राजनीति में महिलाओं को आरक्षित किया जाये। मैं इसका समर्थन करती हूं लेकिन साथ भी यह भी कहना चाहती हूं कि स्त्रियों को स्वयं भी राजनीति में, प्रबंध में, प्रशासन में कुशल होकर स्वयं को सिद्ध करना होगा। पूर्व में हमारी एक राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, वर्तमान में रक्षामंत्री एवं विदेश मंत्री के साथ-साथ लोकसभा की अध्यक्षा के रूप में भी नारी शक्ति अपने योगदान से देश को गौरवान्वित कर रही हैं। अन्य क्षेत्रों में भी आज की नारी ने कई बहु आयामी भूमिकाओं को सफलतापूर्वक देश-विदेश में सम्पन्न किया है। लेकिन पता नहीं क्यों कुछ ना कुछ कमी हमारे समाज की है कि हम नारी को उसकी सम्पूर्ण क्षमताओं के साथ स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। हम उसे माँ, बहन, बेटी और बहू से आगे की भूमिका में स्वीकार करने में हिचक दिखाते हैं। इस सोच में परिवर्तन होना चाहिए।

विशेषकर जैन समाज इस बात को ना भूले कि एक राजकुमारी वसुमति जब पददलित हुई तो उसे एक दासी के रुप में भी कष्ट उठाने पड़े। लेकिन सर्वज्ञ परमात्मा महावीर के मन में नारी जाति के प्रति जो विशिष्ट सम्मान था उसके कारण इसी पददलित वसुमति को चंदनबाला के रुप में श्रमणी संघ की प्रमुखा बनाकर अत्यंत श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया गया। प्रभु महावीर की इस परम्परा को आज पुनः अध्यात्म जगत में भी अपनाने की आवश्यकता है। वहीं हमारी केन्द्रीय सरकार द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान को जिस प्रकार से प्रोत्साहन दिया जाता रहा है ना केवल सराहनीय है, अनुकरणीय है बल्कि जीव दया के प्रति आग्रही जैन समाज को तो इसे मुख्य लक्ष्य के रूप में अपनाकर समाज में उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए।

इसी तरह वैदिक धर्म शासन में गार्गी, मदालसा, अनुसुया जैसी महान सन्नारियों का विशेष सम्मान रहा है। लेकिन धीरे-धीरे यह सम्मान क्षीण होता गया और सर्व साधारण समाज में नारी के प्रति वही सामंती रवैया अपनाया गया। जिसको लेकर सर्वत्र नारी प्रताड़ित हुई है। अतः मेरा आग्रह है कि जिस प्रकार चंदन बाला जी ने नारी शक्ति का गौरव बढ़ाते हुए भगवान के शासन की ध्वजा को फहराने का काम किया था उसी प्रकार हमारी संघ सेवा में जुड़ी हुई साध्वी जी महाराज एवं प्रत्येक घर में धर्म की प्रथम आराधक श्राविकाओं को भी धर्म-ध्वजा फहराने में भी योगदान देना चाहिए। सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जब तक नारी जाति की आवाज बुलंद नहीं होगी तब तक समाज में परिवर्तन को एक जन आन्दोलन बनाना संभव नहीं होगा। नारी को अब कर्त्तव्य के साथ-साथ अधिकार देने का भी समय आ चुका है। अतः नारी जाति की प्रतिभा को संवारने में समाज के अग्रणी समाज सेवियों को स्वयं पहल करनी चाहिए। आशा है मेरी आवाज़ को अन्यथा ना लेते हुए समय की मांग के रुप में अवश्य स्वीकार किया जायेगा क्योंकि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि महासती श्री चंदन बाला जी महाराज नारी शक्ति की प्रतीक है। ✧✧

मिथ्या आडम्बर से रहें , सौ कोसों दूर

- अतुल जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

रूढ़िवादिता, फैशनपरस्ती, दुर्व्यसन और अनाचार आदि न मालूम कितने हानिकारक अवगुण आज के सभ्य समाज में फैले हुए हैं। पर इनसे भी अधिक शक्तिशाली और अनेकों अवगुणों का जनक यह मिथ्या आडम्बर है। जब तक मनुष्य अपनी सही स्थिति को छुपाता नहीं तब तक यह सम्भव है कि उसे अधिक सम्मान न मिले, लोग उसे छोटा समझें। पर इतने से किसी प्रकार की हानि दिखाई नहीं देती। अपनी अल्पविकसित अवस्था में भी मनुष्य सुखी रह सकता है, संतोष प्राप्त कर सकता है। किन्तु जैसे ही मिथ्या आडम्बर और अपने को बढ़ा-चढ़ा कर प्रदर्शित करने की हीनभावना मनुष्य में प्रविष्ट हुई कि उसके जीवन में दुर्दशा प्रारम्भ हुई। सामाजिक जीवन में आज जो विश्रृंखलता दिखाई दे रही हैं उसका अधिकाँश कारण यही है कि मनुष्य अपना असली चेहरा छिपा कर नकली नकाब चढ़ाये बैठा है।

लोग समझते हैं कि जितना ही अधिक अपने आप को प्रदर्शित करेंगे उतनी ही हमारी औकात बढ़ेगी, सम्मान बढ़ेगा, मान और प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पर यह भूल जाते हैं कि हम जिस समाज में पलकर इतने बड़े हुए उससे हमारी वस्तु स्थिति छिपी नहीं है। कदाचित ऐसा भी हो जाए तो "काठ की हाँडी" कितने दिन आँच सहेगी। आखिर जिस दिन टूट गई उस दिन अभी तक जितना सम्मान नहीं मिला, उससे कही अधिक लज्जा, आत्मग्लानि, अविश्वास और उपहास का सामना करना पड़ेगा। पोल खुलती है तो मनुष्य अपना मुँह छिपाने लायक नहीं रहता फिर क्या आवश्यकता है कि हम मिथ्या आडम्बर प्रदर्शित करें। यह एक बहुत बड़ा अवगुण है कि लोग अपनी शक्ति के बाहर और स्थिति के बिल्कुल प्रतिकूल खर्च करते हैं। इस से लाभ तो कुछ होता नहीं। केवल एक महत्वाकाँक्षा के लिए कि लोग आपको अमीर समझें आप धन की होली जलाकर बैठ जाते हैं। परिणाम यह होता है कि आप कर्ज के बोझ से लद जाते हैं और विकास की सारी संभावनायें समाप्त हो जाती हैं। आज की गलती का परिणाम सारे जीवन भर भुगतना पड़ता है। इससे कोई स्थाई सम्मान ही मिलता तो भी एक बात थी पर आप विश्वास कीजिये कि आप समाज की आँखों में कभी धूल नहीं झोंक सकते हैं। मान लीजिये आप परिवार का भरण पोषण नहीं कर पाते हैं, फिर यदि आप केवल दिखावे के लिये बेकार खर्च करते हैं तो सिवाय बच्चों का पेट काटने के आप को और कौन सा रास्ता मिल गया? यदि लोग ऐसा न भी सोचें तो यह मानने में वे भूल न करेंगे कि कुछ धन आप अवैधानिक ढ़ंग से कमाते होंगे। ऐसी अवस्था में आप निन्दा, उपहास और छींटाकशी से बच जायेंगे यह हो नहीं सकता। अतः इससे आप जिस सम्मान या बड़प्पन की कामना किये बैंठे थे वह भी नहीं मिला, उलटे औरों की दृष्टि में नीचे गिरे और अपना भविष्य बर्बाद कर लिया सो अलग।

इस प्रकार के मिथ्या आडम्बर का परिणाम यह हुआ कि आज हजारों घर बरबाद हो गये हैं। अतः अपनी स्थिति से बढ़कर झूठे दिखावे की बात बुद्धि संगत नहीं की जा सकती है। बढ़ा-चढ़ाकर अपने आपको प्रदर्शित करने का एक ही अर्थ है कि आप अपना जीवन बर्बाद करने जा रहे हैं। इससे व्यक्तिगत हानि तो होती ही है साथ ही संक्रामक रोग की तरह सम्पूर्ण समाज भी इससे प्रभावित होता है। प्रतिद्वन्दिता की प्रतिस्पर्धा मनुष्य की एक विलक्षण विषेशता है। एक आदमी विवाह में लाखों का दाँव लगाता है तो उसका

श्री संघ में महासती चंदन बाला नारी शक्ति का प्रतीक है

- रूचिरा सुराणा जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा, जैन कॉन्फ्रेंस

मुझे एक बार पूज्य गुरुदेव श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' द्वारा लिखित एवं जैन प्रकाश में प्रकाशित एक लेख पढ़ने को मिला था । गुरुदेव ने लिखा था कि **महासती चंदन बाला को मत भूलो।** मैं इस लेख को पढ़कर बहुत प्रभावित हुई थी। वास्तव में महासती चंदन बाला जी ना केवल सौलह सतियों में बल्कि सम्पूर्ण नारी जगत में नारी शक्ति का प्रतीक है। यह सत्य है कि भारत की पुरुष प्रधान संस्कृति प्रांरभ से ही पुरुषों के नेतृत्व में संचालित होती रही है। लेकिन यहां नारी को भी सम्मानित स्थान सदैव प्राप्त रहा है।

मुझे दुःख होता है कि आज स्त्रियों के साथ दुरव्यवहार की अनेक घटनायें सुनने में आती हैं। परिवर्तित युग में एक ओर नारी जाति ने स्वयं अपनी सीमाओं को आधुनिकता के नाम पर तोड़ा है तो सौदर्य लोलुप कतिपय पुरुषों में भी नारी को पतित करने की होड़ सी लगी रहती है। यही कारण है कि नारी प्रतिभा का जितना सम्मान एवं जागरण होना चाहिए वह नहीं हो पा रहा है। एक स्वर उठता है कि राजनीति में महिलाओं को आरक्षित किया जाये। मैं इसका समर्थन करती हूं लेकिन साथ भी यह भी कहना चाहती हूं कि स्त्रियों को स्वयं भी राजनीति में, प्रबंध में, प्रशासन में कुशल होकर स्वयं को सिद्ध करना होगा। पूर्व में हमारी एक राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, वर्तमान में रक्षामंत्री एवं विदेश मंत्री के साथ-साथ लोकसभा की अध्यक्षा के रूप में भी नारी शक्ति अपने योगदान से देश को गौरवान्वित कर रही हैं। अन्य क्षेत्रों में भी आज की नारी ने कई बहु आयामी भूमिकाओं को सफलतापूर्वक देश-विदेश में सम्पन्न किया है। लेकिन पता नहीं क्यों कुछ ना कुछ कमी हमारे समाज की है कि हम नारी को उसकी सम्पूर्ण क्षमताओं के साथ स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। हम उसे माँ, बहन, बेटी और बहू से आगे की भूमिका में स्वीकार करने में हिचक दिखाते हैं। इस सोच में परिवर्तन होना चाहिए।

विशेषकर जैन समाज इस बात को ना भूले कि एक राजकुमारी वसुमति जब पदद्लित हुई तो उसे एक दासी के रुप में भी कष्ट उठाने पड़े। लेकिन सर्वज्ञ परमात्मा महावीर के मन में नारी जाति के प्रति जो विशिष्ट सम्मान था उसके कारण इसी पदद्लित वसुमति को चंदनबाला के रुप में श्रमणी संघ की प्रमुखा बनाकर अत्यंत श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया गया। प्रभु महावीर की इस परम्परा को आज पुनः अध्यात्म जगत में भी अपनाने की आवश्यकता है। वहीं हमारी केन्द्रीय सरकार द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान को जिस प्रकार से प्रोत्साहन दिया जाता रहा है ना केवल सराहनीय है, अनुकरणीय है बल्कि जीव दया के प्रति आग्रही जैन समाज को तो इसे मुख्य लक्ष्य के रूप में अपनाकर समाज में उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए।

इसी तरह वैदिक धर्म शासन में गार्गी, मदालसा, अनुसुया जैसी महान सन्नारियों का विशेष सम्मान रहा है। लेकिन धीरे-धीरे यह सम्मान क्षीण होता गया और सर्व साधारण समाज में नारी के प्रति वही सामंती रवैया अपनाया गया। जिसको लेकर सर्वत्र नारी प्रताड़ित हुई है। अतः मेरा आग्रह है कि जिस प्रकार चंदन बाला जी ने नारी शक्ति का गौरव बढ़ाते हुए भगवान के शासन की ध्वजा को फहराने का काम किया था उसी प्रकार हमारी संघ सेवा में जुड़ी हुई साध्वी जी महाराज एवं प्रत्येक घर में धर्म की प्रथम आराधक श्राविकाओं को भी धर्म-ध्वजा फहराने में भी योगदान देना चाहिए। सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जब तक नारी जाति की आवाज बुलंद नहीं होगी तब तक समाज में परिवर्तन को एक जन आन्दोलन बनाना संभव नहीं होगा। नारी को अब कर्तव्य के साथ-साथ अधिकार देने का भी समय आ चुका है। अतः नारी जाति की प्रतिभा को संवारने में समाज के अग्रणी समाज सेवियों को स्वयं पहल करनी चाहिए। आशा है मेरी आवाज़ को अन्यथा ना लेते हुए समय की मांग के रुप में अवश्य स्वीकार किया जायेगा क्योंकि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि महासती श्री चंदन बाला जी महाराज नारी शक्ति की प्रतीक है। ✧✧

मिथ्या आडम्बर से रहें , सौ कोसों दूर

- **अतुल जैन,** दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

रूढ़िवादिता, फैशनपरस्ती, दुर्व्यसन और अनाचार आदि न मालूम कितने हानिकारक अवगुण आज के सभ्य समाज में फैले हुए हैं। पर इनसे भी अधिक शक्तिशाली और अनेकों अवगुणों का जनक यह मिथ्या आडम्बर है। जब तक मनुष्य अपनी सही स्थिति को छुपाता नहीं तब तक यह सम्भव है कि उसे अधिक सम्मान न मिले, लोग उसे छोटा समझें। पर इतने से किसी प्रकार की हानि दिखाई नहीं देती। अपनी अल्पविकसित अवस्था में भी मनुष्य सुखी रह सकता है, संतोष प्राप्त कर सकता है। किन्तु जैसे ही मिथ्या आडम्बर और अपने को बढ़ा-चढ़ा कर प्रदर्शित करने की हीनभावना मनुष्य में प्रविष्ट हुई कि उसके जीवन में दुर्दशा प्रारम्भ हुई। सामाजिक जीवन में आज जो विश्रृंखलता दिखाई दे रही हैं उसका अधिकाँश कारण यही है कि मनुष्य अपना असली चेहरा छिपा कर नकली नकाब चढ़ाये बैठा है।

लोग समझते हैं कि जितना ही अधिक अपने आप को प्रदर्शित करेंगे उतनी ही हमारी औकात बढ़ेगी, सम्मान बढ़ेगा, मान और प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पर यह भूल जाते हैं कि हम जिस समाज में पलकर इतने बड़े हुए उससे हमारी वस्तु स्थिति छिपी नहीं है। कदाचित ऐसा भी हो जाए तो "काठ की हाँडी" कितने दिन आँच सहेगी। आखिर जिस दिन टूट गई उस दिन अभी तक जितना सम्मान नहीं मिला, उससे कही अधिक लज्जा, आत्मग्लानि, अविश्वास और उपहास का सामना करना पड़ेगा। पोल खुलती है तो मनुष्य अपना मुँह छिपाने लायक नहीं रहता फिर क्या आवश्यकता है कि हम मिथ्या आडम्बर प्रदर्शित करें। यह एक बहुत बड़ा अवगुण है कि लोग अपनी शक्ति के बाहर और स्थिति के बिल्कुल प्रतिकूल खर्च करते हैं। इस से लाभ तो कुछ होता नहीं। केवल एक महत्वाकाँक्षा के लिए कि लोग आपको अमीर समझें आप धन की होली जलाकर बैठ जाते हैं। परिणाम यह होता है कि आप कर्ज के बोझ से लद जाते हैं और विकास की सारी संभावनायें समाप्त हो जाती हैं। आज की गलती का परिणाम सारे जीवन भर भुगतना पड़ता है। इससे कोई स्थाई सम्मान ही मिलता तो भी एक बात थी पर आप विश्वास कीजिये कि आप समाज की आँखों में कभी धूल नहीं झोंक सकते हैं। मान लीजिये आप परिवार का भरण पोषण नहीं कर पाते हैं, फिर यदि आप केवल दिखावे के लिये बेकार खर्च करते हैं तो सिवाय बच्चों का पेट काटने के आप को और कौन सा रास्ता मिल गया? यदि लोग ऐसा न भी सोचें तो यह मानने में वे भूल न करेंगे कि कुछ धन आप अवैधानिक ढ़ंग से कमाते होंगे। ऐसी अवस्था में आप निन्दा, उपहास और छींटाकशी से बच जायेंगे यह हो नहीं सकता। अतः इससे आप जिस सम्मान या बड़प्पन की कामना किये बैंठे थे वह भी नहीं मिला, उलटे औरों की दृष्टि में नीचे गिरे और अपना भविष्य बर्बाद कर लिया सो अलग।

इस प्रकार के मिथ्या आडम्बर का परिणाम यह हुआ कि आज हजारों घर बरबाद हो गये हैं। अतः अपनी स्थिति से बढ़कर झूठे दिखावे की बात बुद्धि संगत नहीं की जा सकती है। बढ़ा-चढ़ाकर अपने आपको प्रदर्शित करने का एक ही अर्थ है कि आप अपना जीवन बर्बाद करने जा रहे हैं। इससे व्यक्तिगत हानि तो होती ही है साथ ही संक्रामक रोग की तरह सम्पूर्ण समाज भी इससे प्रभावित होता है। प्रतिद्वन्दिता की प्रतिस्पर्धा मनुष्य की एक विलक्षण विषेशता है। एक आदमी विवाह में लाखों का दाँव लगाता है तो उसका

पड़ोसी अससे अधिक खर्च करने में अपनी शान समझता है। इससे कम खर्च को वह अपना अपमान समझता है। यह कभी विचार नहीं करता कि हमारे पास साधन, परिस्थितियाँ और भविष्य के लिये भी कुछ शेष रहता है या नहीं। अज्ञानतापूर्वक केवल अपने मिथ्याभिमान के लिये यह अपव्यय दुःख और मुसीबतों का ही कारण बन सकता है।

जब तक समाज में यह अंधानुकरण का बोलबाला होगा तब तक समाज कभी सुखी नहीं रह सकेगा। समाज के जीवन की दुर्दशा का अधिकाँश कारण आज यही है कि लोग अपनी हैसियत से अधिक अपने आप को प्रदर्शित करना चाहते हैं। इसके लिये चाहे कितने अनैतिक अपराध करने पड़ें। भीतर-भीतर बढ़ते हुए इस प्रकार के अपराधों के कारण ही भ्रष्टाचार, दुराचार, और मिथ्याचार बुरी तरह बढ़ रहा है।

बाहरी सजधज को जो मान प्रतिष्ठा का आधार मानते हैं वे भ्रम में हैं। मनुष्य की शालीनता उसकी सादगी में होती है। सद्विचार और सादगी का परस्पर अत्यन्त निकट का सम्बन्ध होता है। जहाँ सादगी होगी वहीं सत्कर्म होंगे, जहाँ सत्कर्म होंगे वही सुख और सुव्यवस्था होगी। प्रेम, एकता और विकास के अनेकों साधन अपने आप मिलते चले जायेंगे। अपनी वास्तविक स्थिति में अन्त तक बिना दिखलावे के साथ बने रहना मनुष्य का नैतिक बल प्रदर्शित करता है। सम्भव है आज की परिस्थितियों में कुछ झिझक, संकोच या आत्मग्लानि सी उठे, किन्तु एक-सी स्थिति में सुखी व सन्तुष्ट जीवन बिताने के लिये यह सर्वश्रेष्ठ मार्ग है कि आप अपनी स्थिति का अतिक्रमण न करें। गरीब होना पाप नहीं है, किन्तु जब आप गरीबी छिपाने का प्रयत्न करने लगते हैं तो गरीबी तो ज्यों की त्यों बनी ही रहती है, अनेकों दूसरी प्रकार की विघ्न-बाधायें उठ खड़ी होती हैं। निर्धनता का उपहास कुछ दिन हो सकता हैं, किन्तु झूठे प्रदर्शन से जो दुष्परिणाम उपस्थित होते है उनसे सम्पूर्ण जीवन ही बर्बाद हो जाता है।

झूठ जब तक व्यक्तिगत रूप से बोलने-चालने तक ही सीमित रहता है तब तक उससे विशेष हानि की संभावना नहीं होती, किन्तु योजनाबद्ध झुठाई के परिणाम बड़े भयंकर होते हैं। मिथ्या आडम्बर एक प्रकार के झूठ का व्यवस्थित और शक्तिशाली रूप है। योजनाबद्ध झुठाई की लाग और लपेट भी बढ़ जाती है इसलिये व्यक्ति और समाज दोनों पर उसका प्रभाव पड़ता हैं। इसलिये हम जिस स्थिति में हैं अपने जीवन को उतने ही क्षेत्र में नियंत्रित रखें, इसी में अपनी और समाज दोनों की भलाई है।

✧✧

मिथ्यात्व या यथार्थ . . . !

आडंबर शब्द में डंबर शब्द का अर्थ ही उपयोगिता से बड़ा दिखाना है। जहाँ यथार्थ कम और दिखावा ज्यादा होगा, वहाँ अंततः दुःख ही होगा । फिर चाहें क्षेत्र अध्यात्म का हो, चाहे संसार का, आत्मा को हो या शरीर का ।

आज का युग दिखावे का युग है। लोग जमीनी स्तर पर जितने गहरे नहीं होते, उतने वायवी स्तर पर दिखावे के आग्रही होते हैं। यही कारण है कि आज के युग में कितना ही कमा लो पेट नहीं भरता। जब पेट और पेटी दोनों को संयुक्त मान लिया जाता है तो अंतहीन भूख जन्म लेती है, जो स्वयंभू मिथ्यात्व है। अतः मिथ्यात्व की चर्चा को यदि समाप्त करना है तो यथार्थ से जुड़ना ही होगा।

✧✧

काला नमक है लाजबाब है औषधीय गुणों से भरपूर

– डॉ. तेजेन्द्र कुमार (वरिष्ट चिकित्सा अधिकारी, पंचकर्म हॉस्पिटल)

काला नमक प्रत्येक शाकाहारी रसोई में प्रयुक्त होता ही है। हम इस साधारण सी वस्तु को यदि इसके गुण जानकर प्रयोग करेंगे तो निश्चित रूप से लाभ उठाने में सफल होंगे। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि काला नमक में अस्सी प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। जो शरीर को स्वस्थ रखने में अत्यंत कारगर है। आप इसे चाहे तो अपनी रोज की खुराक में शामिल कर सकते हैं। जैसे सुबह खाली पेट गुनगुने पानी में निम्बू का रस और एक चुटकी काला नमक मिलाकर रोज पीयें तो आप कब्ज और हाज़मे संबंधी बीमारी से मुक्त हो सकते हैं। पेट में गैस, जलन का नामोनिशान नहीं रहेगा। काला नमक मोटापे, उच्च रक्तचाप और जोड़ों के दर्द जैसी तमाम बीमारियों को दूर करने में काफी सहायक है।

नमक से ना केवल हमारा भोजन स्वादिष्ट बनता है बल्कि शरीर को सही ढंग से चलाने में भी नमक का प्रयोग सीमित मात्रा में आवश्यक है। इसमें मौजूद तत्व एवं खनिज पदार्थ रक्त संचार के साथ शरीर के अंदर से निकलने वाले विभिन्न विजातीय तत्वों को दुरुस्त करने में कामयाब रहता है।

कैसे बनता है काला नमक? : साधारण नमक के अलावा मुख्य रूप से सैंदा नमक का और काले नमक का इस्तेमाल हमारी रसोई में होता है। काला नमक ना केवल अपने देश में बल्कि दक्षिण एशिया के तमाम देशों में प्रयोग किया जाता है। इसे खानों के प्राकृतिक हेलाईट से प्राप्त किया जाता है। जो भारत, बंग्लादेश, नेपाल सहित कुछ हिमालयी क्षेत्रों में पाया जाता है। प्राकृतिक रूप से पाये जाने वाले इस नमक में सोडियम, क्लोराईड्, सल्फर, आयरन, हाईड्रोजन जैसे तत्वों के साथ सोडियम क्लोराईड्, सोडियम बाईसल्फेट, आयरन सल्फाईट जैसे अनेक तत्व पाये जाते हैं। इसका रंग कालिमा लिये हलका गुलाबी होता है। इसमें एक विशेष प्रकार की गंध होती है।

जोड़ों के दर्द को ठीक करता है काला नमक : चालीस साल की उम्र के पश्चात जोड़ों के दर्द को होना सामान्य सी बात है। कई लोगों को तो जोड़ों के दर्द तीस साल की आयु पार करते ही लग जाते हैं। आमतौर पर इन्हें गठिया कहा जाता है। इसमें गर्म पानी में काला नमक मिलाकर दर्द वाले हिस्से पर सिकाई करने से जोड़ो के दर्द मे आराम प्राप्त होता है। पन्द्रह-बीस दिन तक दिन में दो-तीन बार सिकाई करने पर दर्द में राहत मिलती है।

दिल का रखें ख्याल : आधुनिक जीवन शैली में हृदयरोग काफी तेजी से फैल रहा है। बढ़ता कोलोस्ट्रोल, उच्च रक्तचाप, शुगर, मोटापा आदि हमारे दिल के दुश्मन हैं। इन सभी को ठीक करने में काले नमक का प्रयोग नियमित रूप से करना फायदेमंद होता है। मोटापा दूर करने के लिए एक गिलास गुनगुने पानी में निम्बू और काला नमक ड़ालकर सुबह-शाम पीने से लाभ होता है। पन्द्रह-बीस मिनट तक टहलना भी आवश्यक है, इसके पश्चात पन्द्रह-बीस मिनट तक अन्य पानी ना पीयें।

खाँसी, सर्दी अस्थमा में कारगर : सर्दी, खाँसी अस्थमा के ईलाज में काला नमक काफी कारगर है। काले नमक से बने गर्म पानी की भाप से कफ, बलगम और खाँसी दूर करने में काफी सहायता मिलती है।

बालों की रुसी दूर करें : रुसी हमारे बालों के लिये काफी हानिकारक होती है। बालों के समय से पहले झड़ने, सफेद होने, रुखे-सूखे होने में रुसी एक महत्वपूर्ण कारण होता है। रुसी दूर करने के लिये लोग तरह-तरह के साबुन, शैम्पू का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन इन कैमिकल युक्त साबुन शैम्पुओं से दुष्प्रभाव अधिक होता है, इसकी जगह काला नमक, लाल टमाटर का मिश्रण अत्यंत उपयोगी होता है।

अच्छी नींद लाता काला नमक : काला नमक हमें अच्छी नींद लाने में भी काफी सहायक होता है। कोर्टीसोल और एंड्रलाइन जैसे दो खतरनाक हार्मोंस को यह कम करता है जिससे अच्छी नींद आती है।

शरीर को करें डिटॉक्स : शरीर को डिटॉक्स करने के लिये हम अनेक उपाय करते हैं। लेकिन कभी काले नमक को नहीं आजमाते। काले नमक में काफी मात्रा में खनिज पदार्थ होते हैं। इससे हमारे शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति प्राप्त होती है और मौजूदा खतरनाक कीटाणुओं का नाश होता है। स्मरण रहे कि कुछ लोगों को नमक से भी एलर्जी की शिकायत होती है। ऐसे में काले नमक का प्रयोग भी अपने चिकित्सक की सलाह पर ही प्रयोग में लायें।

श्रमण संस्कृति के महान् संत पू. श्री अम्बेश गुरु

- डॉ. रतन लाल मारू, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

मेवाड़ संघ शिरोमणि पू. प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी म. जैन जगत के एक विरल विभूति थे, जो जीवन भर लोकैशणा से दूर रहते हुए अध्यात्म साधना और लोक मंगल के लिए सदैव तत्पर रहे। वे श्रमण संस्कृति के एक महान संत थे जिनकी निश्छलता, सादगी और सरलता एवं सजगता आज भी हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन में प्रदर्षन नही ही अपितु दर्शन था, कृत्रिमता नही, वास्तविकता थी।

पू. प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी म. का जन्म ज्येष्ठ शु. 3, वि.सं. 1962 को थामला (मेवाड़) में पिता श्री किशोरी लाल जी सोनी एवं माता श्रीमती प्यारी बाई के यहां हुआ। बचपन का नाम था हमीर मल और बाद में नाम अम्बालाल रखा गया। आपका बाल्यकाल जीवन धार्मिक संस्कारों से युक्त था। वैरागी अम्बालाल ने दीक्षा से पूर्व अनेक उपसर्ग सहे, किन्तु वे दृढ़ संकल्प के धनी थे। वि.सं. 1982 मार्गशीर्ष शु. अष्टमी को मंगलवाड (चित्तौड़) में आपने मेवाड़ भूषण पू. श्री मोतीलाल जी म. व पू. श्री भारमल जी म. के सान्निध्य में भागवती दीक्षा प्राप्त कर ली। और रत्नत्रय की आराधना में जुट गये।

जैन आगमों के वे गंभीर विद्वान थे किन्तु सतत् जिज्ञासु भी थे। स्वयं पू. श्री देवेन्द्र मुनिजी म. ने जब आगम साहित्य के सम्बन्ध में कई बार आपसे जिज्ञासाएं प्रस्तुत की तो पाया कि उनके मन के कण-कण में आगम के प्रति गहरी निष्ठा थी। उनमें तर्क की नहीं किन्तु श्रद्धा की प्रमुखता थी। उन्होंने कहा **"हम संत हैं, हमारे चिंतन मनन का मूल स्रोत आगम है। इन पर पूर्ण श्रद्धा रखनी है। पण्डितों की भांति आगम की शल्य चिकित्सा करना हमारा काम नहीं है।"**

गुरु सेवा में आप बेजोड़ थे। मेवाड़ भूषण श्री मोती लाल जी म. का शरीर अत्यंत स्थूल था। आप बिना किसी संकोच के दिन रात उनकी सेवा मे लगे रहते थे। पू. श्री देवेन्द्र मुनि जब आपसे सन् 1957 में देलवाड़ा गांव में मिले तो उन्होंने उनसे छोटे संतो से सेवा कराने के लिए कहने पर प्रवर्तक श्री ने कहां- **'देवेन्द्र, हमे सेवा का उपदेश देकर नहीं अपितु सेवा का आचरण करके आदर्श उपस्थित करना चाहिए।"** आपकी सेवा निष्ठा पू. श्री नंदीशेण मुनि जी म. की याद दिलाती है। वस्तुतः उपदेश देना अथवा सेवा कराना सरल एवं सहज है पर सेवा करना अतीव कठिन है।

आप संघ एवं संगठन के लिए निरन्तर समर्पित रहे। मंत्री रहते हुए सन् 1963 में अजमेर शिखर अधिवेशन को सफल बनाने में आपका काफी योगदान रहा। यहीं से आप प्रवर्तक कहलाये। आप एक सम्प्रदाय मुक्त संत थे। उन्होंने समाज में एकता एवं संगठन की अलख जगायी। सन् 1952 में सादड़ी सम्मेलन में आप मेवाड़ के संतो का नेतृत्व करते हुए पधारे और श्रमण संघ के एकीकरण को मूर्त रुप देने में अहम् भूमिका निभायी।

वे करुणा मूर्ति थे। भक्त जनों के दुःख को देखकर द्रवित हो उठते थे। प्रवर्तक श्री अपने अमृतमयी प्रवचनों में सदैव स्वाध्याय पर जोर देते थे। स्वाध्याय अर्थात् आत्मा का अध्ययन, सफल जीवन की कुंजी है। श्री महावीर स्वाध्याय केन्द्र, कुंवारिया गुरुदेव जी के शुभ मार्गदर्शन का ही परिणाम है। आज इस केन्द्र से जुड़े स्वाध्यायी देश के कोने-कोने में पहुंचकर पर्युषण पर्वाराधना करते और करवाते हैं।

आप हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओ के प्रकाण्ड विद्वान थे। आपका विहार क्षेत्र राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, मुंबई, दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि मुख्य रहे। आपने प्रथम चातुर्मास वि.सं. 1983 में जयपुर और अंतिम चातुर्मास वि.सं. 2050 का मावली जंक्शन में किया। वि.सं. 2050, पौष शु. चतुर्थी की रात्रि के अंतिम प्रहर में गुरुदेव बड़े समाधि भाव के साथ फतहनगर में स्वर्गगामी हो गये।

आज सशरीर आपका पावन सान्निध्य प्राप्त नहीं है किन्तु आपके प्रभावशाली शिष्य रत्न श्रमण संघीय महामंत्री पू. गुरु श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' एवं महाश्रमण पू. प्रवर्तक श्री मदन मुनि जी म. 'पथिक' के द्वारा जो धर्म प्रभावना हो रही है, प्रतिपल आपकी याद दिलाती है। पू. प्रवर्तक श्री के 24वीं पुण्यतिथि पर वंदन नमन करते हुए हार्दिक श्रद्धा सुमन अर्पित करते है। ०

जीवन का आत्म मंथन

– मांगीलाल वीरवाल जैन, चित्तौढ़गढ़ (राजस्थान)

खुली आँखों से आज दिन के इस क्षण तक मैंने जगत को देखा, कौन कहाँ क्या कर रहा है, कौन अपना कौन पराया है, उसे जानने का प्रयास कियां मैंने सब कुछ जानने का प्रयास किया परंतु स्वयं के परिचय से में अपरिचित रहा है। इस क्षण तक जीवन के उस उद्देश्य को भी जान नहीं पाया हूँ, जहाँ मुझे अंतिम श्वास के बाद जाना है। मुझे इसी लक्ष्य को निर्धारित कर सांसारिक घुटबाजी से निकलकर अगली योनी को धर्ममय बनाना है। सर्वप्रथम अपने कर्म को क्षय करना है। जो कुछ भी इस देह को मिल रहा हैं यह मेरे उदय कर्म के अधीन मिल रहा है। बिना उदय कर्म के कोई भी व्यक्ति अरिहंत एवं स्वयं ईश्वर भी मुझे सुख या दुःख नहीं दे सकते। श्रीमद्भागवत गीता में भी स्वयं श्री कृष्ण ने अर्जुन को उसकी कर्मभूमि युद्ध क्षेत्र में कर्म की श्रेष्ठता का महत्त्व बताते हुए संसारिक जीव को आगाह कर अपना कल्याण करने का उपदेश-संदेश दिया। मैं/हम साधक देह रुप में साधना में सुद्धात्म रमण, चिंतन में विद्यमान रहकर जितनी पूँजी एकत्रित करेंगे, वही हमारी अपनी निज पूँजी है। संसार की तमाम मालकियत मेरी नहीं है। अगर ऐसा सोच है तो वह मिथ्यात्म। तुम मालिक हो स्वयं अनंत ज्ञान, आत्म गुणों के वही हमारा शाश्वत घर हैं मेरा तुम्हारा लक्ष्य स्वभाव को जाना देखना है, इसे देखते हुए चित को शांत करते हुए शून्य की स्थिति तक ले जाना है, किसी विचार को महत्त्व नहीं, यही आपका मेरा निज स्वभाव है, चूँकि देह जन्मों-जन्मों तक निन्द ले चुका है। आज देह का नही आत्मा का पोषण करना है। संसारिक कार्यों में आज तक मैंने बहुत से आश्रव के कार्य जीव योनियों में विचरने का एकमात्र कारण यही है कि मैंने स्वयं के परिधाम, स्वयं के सत्य को नहीं जाना है। मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, मैंने जाना कहाँ है? जिसमें आशक्ति है वो परिग्रह है, मूर्च्छा भी परिग्रह हैं परिग्रह है तो राग-द्वेष का बंधन है। इस बंधन को मुझे तोड़ना है। इस साधना में 'मेरे पन' को अलग करना है। इस साधना को गहरी कर आगे बढ़ना है। जीवन वह है जिसमें बोध का दीप जल रहा हो।

हे प्रभु! आपके कण-कण में जो धर्म है वह धर्म मेरे कण-कण में फैल जाए। में अपनी आने-जाने वाली प्रत्येक श्वास से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे मुक्ति के परमधन की प्राप्ति हो। मैं जब भी मुझे शीश झुकाऊं तो अंतःकरण से **'ऐसे भाव प्रत्येक श्वांस में आ जाय। यह मंगल भावना मेरी प्रत्येक श्वांस में रस-बस जाय'।** ✧✧

दुःख का मूल है आशा ...

हम सबने अनाथी मुनि की कथा सुनी है। भगवान महावीर के शासन के समय तब मगध में राजा श्रेणिक का राज्य था। राजगृही उसकी राजधानी थी। एक बार राजा मुंडिक कक्ष उद्यान में गये तो वहां एक तरुण तपस्वी को देखा! राजा ने कहा भगवन् आपने इस तरुण अवस्था में दीक्षा क्यों ली? तब अनाथी मुनि ने कहा –'राजन मैं अनाथ था ! मेरे जितने भी सहारे थे, वे सब निराधार निकलें। कोई मेरे काम नहीं आया । अब धर्म ने मेरी छाया बनकर मुझे शरण दी है, तो मेरी रक्षा निश्चित रूप से होगी।

इस पर राजा श्रेणिक ने कहा –'तो आज से ही मुझे अपना नाथ समझों, मेरे संरक्षण में आ जाओं' राजा की मूर्खता पर अनाथी मुनि को हंसी आ गई। वे बोले! 'मेरी तरह तुम भी झूठी आशा के कारण स्वयं को सनाथ समझ रहे हो। ध्यान रखना दुःख का मूल यही आशाएं हैं जो हमें सर्वत्र अकेला छोड़ देती हैं। ✧✧

इतिहास कथा

महान् कलाकार कौन?

- हुकमचंद जैन 'मेघ', नई दिल्ली

राजा नन्द अपने रथिक के विशेष कौशल पर एक बार अत्यन्त प्रसन्न हुआ। आशीर्वाद-मुद्रा में उसने वरदान माँगने के लिये कहा। रथिक कोशा के लावण्य पर मुग्ध था। वह यह भी जानता था कि कोशा राजमान्य है; अतः हर एक की ओर वह दृष्टि भी नहीं घुमाती अतः उसने राजा से निवेदन किया, कोशा के सम्पर्क का एक अवसर मुझे प्रदान किया जाये। बस यही वरदान चाहता हूँ।

रथिक की मनोभिलाषा की पूर्ति में राजा नन्द को कोई कठिनाई अनुभूत नहीं हुई। कोशा के पास राजा नन्द की ओर से संवाद भेज दिया गया। कुछ समय बाद रथिक भी उसके आवास पर पहुँच गया। कोशा के समक्ष जटिल पहेली उपस्थित हो गई क्योंकि **वह स्वयं पवित्र जीवन जीने के साथ रथिक को भी पवित्र जीवन की ओर प्रेरित करना चाहती थी।**

कोशा ने अपने कौशल का परिचय देते हुए रथिक के समक्ष **आचार्य स्थूलभद्र** के **ब्रह्मचर्य-व्रत** की साधना की मुक्त प्रशंसा की। रथिक को यह चर्चा अप्रासंगिक लगी। उसने प्रसंग को टालते हुए कोशा से प्रमोद वन में चलने का आग्रह किया। नाना प्रकार के सघन वृक्षों की मोहकता से वहां का वातावरण अत्यन्त कामुक था। कोशा तत्काल वहाँ चली आई। दोनों पलंग पर आम्र-वृक्ष के नीचे बैठे। अपनी कला को प्रदर्शित कर कोशा को आकर्षित करने के उद्देश्य से रथिक ने आम्र-वृक्ष के फल पर एक बाण छोड़ा। बाण फल पर जा लगा। उस बाण को दूसरे बाण से, दूसरे बाण को तीसरे बाण से, तीसरे बाण को चौथे बाण से, इस प्रकार इतने बाण बींधे जा चुके थे कि अन्तिम बाण का छोर रथिक के हाथ में था। रथिक ने एक हल्का-सा झटका दिया। आम्र-फल शाखा से टूट गया। बड़े प्यार से उसने वह आम्र फल कोशा को भेंट किया। वह सोच रहा था कि मेरे कौशल और प्यार से पिंघलकर कोशा अपना समर्पण कर देगी। किन्तु, वैसा नहीं हुआ !

क्योंकि कोशा स्वयं भी कौशल की पिटारी थी। उसने भी मुस्कान के साथ कहा - "अब थोड़ा मेरा कौशल भी देखें।" उसने तत्काल सरसों का ढ़ेर किया, उस पर उसने सूई रखी। सूई की नोंक पर फूल-पत्ते सजाएं और उन पर नृत्य आरम्भ किया। लम्बे समय तक उसका नृत्य चलता रहा। आश्चर्य यह रहा, न तो सूई उसके पैरों को बींध पाई और न सरसों का एक दाना कहीं अस्त-व्यस्त हुआ।

रथिक की आंखें चुंधिया गई। वह हर्षविभोर होकर बोला- "इस दुष्कर कला के समक्ष मेरी कला पराजित हुई है। मैं तेरे पर सब कुछ न्यौछावर करता हूँ। जो चाहे, मुझ से माँग ले। मेरा तो जीवन भी तेरे लिये प्रस्तुत है।"

कोशा शान्त भाव से बोली - "मैंने कुछ भी दुष्कर नहीं किया, जिससे तुम इतने अनुरक्त हो रहे हो। अभ्यास से कुछ भी दुष्कर नहीं होता। बाण के द्वारा आम्र-फल तोड़ना और सरसों के ढ़ेर पर सूई रखकर नृत्य करना कोई बड़ी कला नहीं है। **"कठिन कला तो मुनि स्थूलभद्र की थी।"**

रथिक बीच में ही बोल पड़ा - "मुनि स्थूलभद्र कौन हैं? और उन्होंने कौन-सा कठिन कार्य किया?"

कोशा ने गौरव के साथ कहा - "वे राजा नन्द के महामात्य शकडाल के पुत्र हैं। मेरे पास चित्रशाला में बारह वर्ष तक रंगीन रातें बिताते रहे। किन्तु पितृ-मरण से वे प्रबुद्ध हुए और आचार्य संभूति विजय के पास प्रवज्जित हो गये। स्नेह के बन्धन को उन्होंने सर्वथा काट डाला। **चातुर्मास-प्रवास-हेतु वे यहाँ आये। मेरे पास एकान्त में रहे। वर्षा ऋतु का समय, रस-भूत आहार, मनोहर चित्रशाला, मेरा अनुराग भरा निवेदन, उन सबके होते हुए भी वे अपनी साधना से तनिक भी नहीं खिसके। उनका ब्रह्मचर्य व्रत सर्वथा अखण्ड रहा।"**

वन्दनीय कला तो यह है। उनके समक्ष हम कितने क्षुद्र हैं? कोशा ने बलपूर्वक आगे कहा- "नेवले और बिल्ली जैसे प्राणी दूध को देखकर मचल उठते हैं, उसी प्रकार लावण्यमयी स्त्री का सान्निध्य पाकर बड़े-बड़े योगी भी विचलित हो जाते हैं। अग्नि के मध्य पहुँच कर सभी प्रकार की धातुऐं पिघल जाती हैं, पर वज्र पर उसका कोई प्रभाव नहीं होता।"

रथिक की विकार भावना शान्त हो गई। वह अन्तर्मुख हुआ। उसने करबद्ध होकर कहा - **"मैं भी उस घोर तपस्वी व्रतराज स्थूलभद्र का शिष्य बनना चाहता हूँ। जिस मार्ग का अवलम्बन उन्होंने किया है, वहीं मेरे लिए श्रेयस्कर है।"**

कोशा ने अपना अभिग्रह व्यक्त करते हुए कहा - **"जिस दिन मुनि स्थूलभद्र ने मेरे यहाँ चातुर्मास-प्रवास किया था, तब से मैंने अभिग्रह धारण हुआ है कि राजा द्वारा प्रेषित पुरुष के अतिरिक्त अन्य किसी के साथ क्रीड़ा नहीं करुंगी। पर, अब मन सर्वथा शान्त है, निर्विकार है और आगे से पूर्णतया पवित्र जीवन जीना चाहती हूँ।"**

रथिक ने आभार व्यक्त करते हुए कहा- "भद्रे! आओं पूर्णतया पवित्र जीवन जीयें। मैं महामना मुनि स्थूलभद्र के चरणों में प्रव्रजित होता हूँ। मेरे लिये वे ही चरण शरण हैं। इस प्रकार रथिक ने मुनि स्थूलभद्र के चरणों में प्रवज्जित होकर अध्यात्म में स्वयं को लीन कर लिया ।"

यह है संगत और संबोध का जादू जो हमें प्रेरित करता है कि - हम भी शांत, प्रशांत, निर्विकार और पवित्र बनें। मानव भव को सार्थक करें।

✧✧

यदि आपके पास भी कोई प्रेरक कहानी हैं, संस्मरण या प्रसंग है तो कृपया प्रकाशनार्थ भेजकर अनुग्रहित करें।

- सम्पादक

लो जी अब पुरुष भी कर सकेंगे गर्भ धारण.....!

अमरीका में फर्टिलिटी विशेषज्ञ रिचर्ड पॉलसन की मानें तो भविष्य में पुरुष भी गर्भ धारण कर सकेंगे। उनके मुताबिक जिस तरह महिलाओं में गर्भाशय प्रत्यारोपण तकनीक विकसित हुई है, उसके बाद ट्रांस वीमन यानी पुरुष से महिला बनने वाले लोगों के भी गर्भवती होने की संभावना मजबूत हुई है। **अब उनके शरीर में गर्भाशय भी प्रत्यारोपित किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि इससे पुरुष भी बच्चे पैदा कर सकेंगे और इसे खारिज करने का कोई वैज्ञानिक कारण नहीं है।** ऐसी खबरें पढ़ने को मिली हैं लिंग परिवर्तन के बाद लोगों के अंग सही काम कर रहे हैं।

ध्यानाग्नि सर्व कर्माणि भस्मसात कुरुते क्षणात्

- डॉ. लक्ष्मीचंद जैन, खरगोन (मध्य प्रदेश)

1. ध्यान विद्या पर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए; क्योंकि ध्यान रुपी अग्नि क्षण भर में सभी प्रकार के कर्मों को भस्म कर सकती है और व्यक्ति को वीतराग अवस्था में पहुंचा सकती है।

2. श्रमण संघ के ध्यान योगी, ध्यान गुरु, योगाचार्य गिनीज़ बुक में सम्मानित अंर्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिवाचार्य जी म. वर्तमान में सबसे अधिक ध्यान द्वारा पूरा ज्ञान की उपासना, आराधना कर रहे हैं। करवा रहे हैं। क्योंकि **'ज हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'** ज्ञान के समान कोई अन्य पवित्र विद्या नहीं है।

3. आप ध्यान शिविर के माध्यम से जन-जन में व्यक्ति विकास का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। **ध्यान में मुख्य रुप से आत्मा और देह की भिन्नता का अनुभव करना, हेय, गेय और उपादेय को समझना मौन में नमोक्कार मंत्र का स्मरण णमोक्कार मंत्र के एक बार भी उच्चारण करने से असंख्य कर्मों की निर्जरा होती है।** ध्यान के लिए प्रातःकाल का समय सर्वोत्तम है।

4. ध्यान करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(i) सामायिक की वेशभूषा धारण करें वो सबसे अच्छी बात क्योंकि ध्यान में सामायिक का भी लाभ संवर का लाभ एक घंटे का समय ध्यान को देना निश्चित हो जाता है।

(ii) आँखें बंद, प्राणायाम शुरु, आत्मचिंतन, पृथकता का अनुभव इससे दोहरा लाभ, आत्मा भी पवित्र, शरीर भी स्वस्थ। आत्मा की प्रतीति बढ़ना ध्यान का मुख्य उद्देश्य क्योंकि **'निर्ग्रन्थ प्रवचन'** का सार है कि जिसने **एग जाणउ से सव्व जाणउ**, जिसने एक अपनी आत्मा को जान लिया, उसने सब कुछ जान लिया। अर्थात कुछ जानना शेष नहीं रहना। नवतत्व में मुख्यतः जीव तत्व है। अपनी आत्मा का चिंतन अपने आपको पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा देता है। जितना धर्म कास पालन होने लगाता है। **"जयं पो जयं चिदे"** का का अर्थ समझ में आ जाता है। धर्म ध्यान की शुरुआत हो जाती है। ✧✧

स्वाध्यायान मा प्रमदे :

अर्थात् स्वाध्याय करने में असावधान मत रहना। दत्तचित्त होकर स्वाध्याय करना, स्वाध्याय करते रहना। यहाँ स्वाध्याय पर इतना बल क्यों दिया गया है। घर जाकर भी स्वाध्याय करों, धर्म-स्थान में भी स्वाध्याय करों, खाली बैठों तब भी स्वाध्याय करों, इतना ज़ोर स्वाध्याय पर क्यों है? क्योंकि स्वाध्याय सब दुःखों से मुक्त करने वाला हैं। स्वाध्याय से व्यक्ति का ज्ञानावर्णीय कर्म क्षय हो जाता है।

मुनि के लिए महाव्रती साधक के लिए तो स्वाध्याय कल्याणकारी औषणी के समान हैं। जो स्वाध्याय रहित है, स्वाध्याय विरत है, वह साधु ही नहीं है, ऐसा कहते हुए कहा गया है - "सज्झायरए स भिक्खू" अर्थात् साधु को साधु ही तब माना गया है जब उसने स्वाध्याय से स्वयं को जानने का पुरुषार्थ किया हो।

जन्म जयंति पर विशेष...

संयम-सेवा-साधना-साहित्य सृजन के पर्याय
गुरुदेव सौभाग्य मुनि जी म. "कुमुद"

प्रस्तुति - देवीलाल हींगड़ जैन, कांकरोली (राजस्थान)

गुरुदेव पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' का गुंफन अनेक तत्त्वों से हुआ। वे योगी-ज्ञानी -शास्ता-संयम-सेवा-साधना के महा पुरुष है। जीवन जीना सामान्य बात है, अध्यात्मपूर्ण जीवन जीना महत्त्वपूर्ण एवं विशिष्ट बात है। श्रद्धेय गुरुदेव बहुआयामी व्यक्तित्व से संपन्न महापुरुष है।

गुरुदेव श्री निर्मोह साधना के महान साधक हैं, संयोग-वियोग की स्थितियाँ उन्हें कम ही प्रभावित करती है। आपके जीवन में विरोध व अवरोध भी प्रचुर मात्रा में देखने को मिला, परंतु आपके साहस-शौर्य व सूझबूझ के सम्मुख प्रतिकूल स्थितियों को ही अपना रास्ता बदलना पड़ा।

एक उर्जस्वल व्यक्तित्व का नाम है **"सौभाग्य मुनि 'कुमुद'।"** बाहर से जितने आकर्षक हैं, भीतर से उतने ही पावन। एक बड़े समुदाय के सक्षम अधिशास्ता पर भीतर में अलौकिक आभा जितनी कल्पना-प्रवीणता उतनी ही सृजनशीलता आध्यात्म एवं धर्म संघ की मौलिक परंपरा के जितने संपोषक उतनी ही प्रयोग धर्मिता। प्रयोगों की विभिन्न भूमिकाओं में एक भूमिका है, साधना की। अल्पवय में जीवन भर संयम व साधना का संकल्प स्वीकारने वाले किशोर का मन कितना फौलादी रहा होगा। आपका तारूण्य समय की परतों से कभी आच्छादित नहीं हुआ। आपकी साधना में प्रौढ़ता का निखार पग-पग पर परिलक्षित होता रहा।

आपने अपने को धर्म गुरु कहलाने के बजाय साधना पुरुष कहलाना ज्यादा उपयुक्त माना। आपने अध्यात्म और साधना को सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठित करने का महानतम् कार्य किया।

मैंने गुरुदेव श्री सौभाग्य मुनि जी म. को निकटता से देखा एवं उनसे कई बार चर्चाएं की, उनके क्रियाशील जीवन को देखने एवं परखने का मुझे अवसर मिला। जन-जागरण एवं जन कल्याण को वे अपनी साधना का ही हिस्सा मानते हैं। आपकी साधना गिरिकन्दराओं में कैद न होकर मानव जाति के कल्याण एवं योग क्षेम के साथ जुड़ी हुई है, आपके स्वरों में कृत्रिमता नहीं, अपितृ हृदय की वेदना बोलती है और हृदय पर सीधी चोट करती है।

आपने अनेक संस्थाएं एवं रचनात्मक उपक्रम प्रारंभ किये हैं, जो आज जन कल्याण के कार्य में रत हैं। गुरुदेव पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म. सफल प्रयोक्ता हैं। इसलिये रुढ़ता उन्हें किसी भी क्षेत्र में पसंद नहीं है। आपने धर्म के क्षेत्र में अनेक प्रयोग किये हैं, आपका यह पक्का अभिमत है कि धर्म में अगर प्रयोग नहीं जुड़ेगें तो वह निष्प्राण और रूढ़ हो जायगा।

आपने अपने व्यक्तिगत जीवन से समस्त धर्म संघ एवं राष्ट्र को नई दिशा व नया आलोक प्रदान किया। आपने आगम संपादन, साहित्य सृजन, नैतिक उन्नयन के कई प्रयोग कर समाज के समाने रखे। आपने साम्प्रदायिकता, प्रांतीयता, जातिवाद, भाषाई विवाद, नैतिक मूल्यों की गिरावट, अशिक्षा, रूढ़िवादिता जैसी स्थितियों का अपनी ऊर्जा एवं साधना के बल पर समाधान किया।

आपका जीवन ज्ञान योग, कर्मयोग एवं भक्तियोग का समन्वय है, आपकी दिव्य वाणी व जादूई कलम ने हजारों लाखों लोगों को साधना के राजपथ

पर प्रस्थित किया। आपके जादूई हाथों के स्पर्श व मांगलिक ने न जाने कितने ही व्यक्तियों में नई चेतना का संचार किया।

तपस्वीयों की गहन तपस्या के परमाणु से अभिषिक्त यह भारत भूमि की माटी धन्य है। और धन्य है यहां की हवाएं जो साधना के शिखर पुरुषों की साक्षी है, इस माटी पर ऋषि महर्षियों की तपस्या साकार हुई तो कभी महावीर व बुद्ध एवं आध्य शंकराचार्य की साधना ने इस माटी को कृत्य-कृत्य किया है। भारत साक्षी है, विवेकानन्द की विवेक साधना का साक्षी है, अरविन्द की ज्ञान साधना का व साक्षी है महात्मा गांधी की कर्मयोग साधना का। योग साधना की यह मंदाकिनी न यहाँ कभी अवरूद्ध हुई न होगी। ऐसे ही साधना के सृजनता के महानायक हैं, पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद'। भारतीय परंपरा में सन्यस्त होता ही योग है। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है- "यं सन्यास मिति प्रादुर्योगं तं विद्धि पांडव" अर्थात् जो सन्यास है, वही योग है। आपने अपना लम्बा जीवन कालयोगी के रूप में जीया हैं।

आप मेरे गुरुदेव हैं, पथ प्रदर्शक हैं और मेरी हर प्रवृत्ति के प्रेरक भी। आपका प्रोत्साहन मेरे जीवन का पाथेय बन गया, आपने मुझे शिष्य ही नहीं बनाया अपितु आत्म विकास के अनेक उपक्रमों से परिचित भी कराया। आपका नाम मेरी जीवन पोथी के हर पृष्ठ पर अंकित है और रहेगा। प्रयत्न यही रहता है कि गुरुदेव की स्मृति सदा बनी रहे। मेरा हर सृजन व कार्य गुरुदेव की स्मृति एवं शक्ति से जुड़ा रहे। आपका आशीर्वाद मेरे जीवन का आलोक है।

अभिनंदन जग कर रहा,
करके जय-जयकार।
महामंत्री जी आपका मिले हमेशा प्यार।।
अम्बा गुरु से पाया अद्भूत ज्ञान।
जीवन क्या है, कर ली अपने पहचान।।
भाव सुमन अर्पण करूँ, कर लेना स्वीकार।
युग-युग तक मिलता रहे सत्य धर्म आधार।।
जन्म जयंति पर, हो घर-घर मंगलाचार।

✧✧

स्वघात ...

एक बार एक राजा ने सोचा कि वह अपनी राजधानी में एक अत्यंत खूबसूरत भवन बनवाए। अपने राज शिल्पी को बुलाकर हुक्म दिया कि एक ऐसा भवन बनाओ जो खूबसूरती और सहूलियत के लिहाज से राज्य भर में बेनजीर हो। भवन का निर्माण शुरू हो गया। उसके लिए राज शिल्पी को जब जितने धन की जरूरत होती, बिना ज्यादा पूछताछ किए राजकोष से निकाल कर उसे दे दिया जाता था। इतनी दौलत अपने कब्जे में देखकर शिल्पी की नियत बिगड़ गई उसने सोचा क्यों न घटिया और नकली सामग्री से ही भवन बना दूं। उसने ऐसा ही किया। कुछ समय बाद वह भवन बनकर तैयार हो गया। वह देखने में तो बहुत सुंदर और कला की दृष्टि से भी अद्भूत था। लेकिन भीतर से कमजोर था। उसे देखकर महाराज बहुत खुश हुए। भवन के उद्घाटन के दिन बड़ा उत्सव मनाया गया। समारोह में महाराज ने ऐलान किया आज मेरी एक बड़ी पुरानी अभिलाषा पूर्ण हुई है। इसमें दो राय नहीं कि यह शिल्पी की प्रतिभा और राजभक्ति की वजह से ही पूरी हुई है। इसलिए मैं उन्हें पुरस्कृत करना चाहता हूं। पुरस्कार तैयार है। मैं राज्य की इस सबसे खूबसूरत इमारत को ही राज शिल्पी को इनाम में देता हूं। वे जब तक राज शिल्पी रहेंगे, इसी भवन में रहें। हमारे अपने ही छल क्या हमें जीवन में इसी तरह नहीं छला करते?

✧✧

बोतलबंद पानी का बाजार ...

बोतलों से खूब बुझ रही है, मुनाफे की प्यास

देश में बोतलबंद पानी का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है और इस बिजनेस में उतर चुकी कंपनियों के लिए खूब मुनाफा उगल रहा है। प्रमुख मार्केटिंग कंसल्टिंग फर्म आइकॉन मार्केटिंग कंसल्टेंट्स की ओर से घरेलू बाजार में बोतलबंद पानी के कारोबार पर जारी ताजा रिपोर्ट में यह बात कही गई है। रिपोर्ट के मुताबिक वित्तवर्ष (2016-17) में बोतलबंद पानी का कारोबार 16,000 करोड़ रुपए रह सकता है। यह बिजनेस सालाना 19 फीसदी की रफ्तार से बढ़ रहा है।

"द इंडियन बोटल्ड वाटर मार्केट अनवीलिंग इट्स थर्स्ट" नाम से जारी इस रिसर्च रिपोर्ट में कहा गया है कि फिलहाल देश में बोतलबंद पानी का कारोबार करीब 10,000 करोड़ रुपये का है, जो चालू वित्तवर्ष के अंत तक 16,000 करोड़ रुपये तक पहुंच जाएगा। देश में बोतलबंद पानी का बाजार 2015 तक 15,000 करोड़ रुपये रहा और 2020 तक इस बाजार का आकार 36,000 करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। बोतलबंद पानी के वैश्विक बाजार का विस्तार और भी तेजी से हो रहा है और यह पिछले पांच साल में 40-45 फीसदी की रफ्तार से बढ़कर 85 से 90 अरब डॉलर तक पहुंच गया है।

बोतलबंद पानी के इस बाजार में तीन तरह के खिलाड़ी हैं। देशभर में मौजूदगी रखने वाले नेशनल ब्रांड्स की हिस्सेदारी करीब 4,000 करोड़ रुपये की है। क्षेत्रीय बाजारों में काम कर रहे लोकल ब्रांड्स की हिस्सेदारी 2400 करोड़ रुपये की है। असंगठित लोकल ब्रांड्स की हिस्सेदारी भी करीब 1600 करोड़ रुपये की है। देश में करीब 2500 ब्रांड्स हैं, जिनमें से 80.85 फीसदी लोकल है।

गैर परंपरागत (जैसे 5 लीटर से ज्यादा के बल्क पैक) वाली श्रेणी की हिस्सेदारी बाजार में 44 फीसदी है। आइकॉन के मुताबिक 20 लीटर वाले जार में पानी का बिजनेस करने वालों की हिस्सेदारी 3,500 करोड़ रुपये है और यह 28 फीसदी की रफ्तार से बढ़ रहा है। **घरों और संस्थागत क्षेत्र में बल्क पैक की मांग लगातार जोर पकड़ने से अगले 4-5 साल में बोतलबंद पानी का कारोबार और भी तेजी से बढ़ेगा।**

बाजार में ग्रामीण और शहरी भारत की हिस्सेदारी को देखें तो इसमें शहरी क्षेत्र की 84 फीसदी और ग्रामीण बाजार की 16 फीसदी हिस्सेदारी है, वहीं क्षेत्र के हिसाब से दक्षिण भारत की बोतलबंद पानी के बाजार में 50 फीसदी हिस्सेदारी है। इसके बाद पश्चिमी भारत की बारी आती है जहां कई नेशनल ब्रांड्स का दबदबा है। बोतलबंद पानी की मैन्यूफैक्चरिंग में जुटे 3300 रजिस्टर्ड प्लांट्स में से 48 फीसदी दक्षिणी राज्यों में हैं। देश में करीब 12,000 प्लांट गैर-पंजीकृत हैं जिनकी बाजार में 20 फीसदी हिस्सेदारी है। देश में एनर्जी ड्रिंक्स, स्पोर्ट्स ड्रिंक्स और अन्य पेय पदार्थों के साथ ही बोतलबंद पानी की बिक्री तेजी से बढ़ने से संगठित खुदरा बाजार की भूमिका काफी अहम है।

बाजार के बड़े खिलाड़ी : आसान उपलब्धता और जेब के मुताबिक होने के कारण फिलहाल एक लीटर जैसे छोटे पैक की बाजार हिस्सेदारी सबसे ज्यादा है। बिसलरी 36 फीसदी बाजार हिस्सेदारी के साथ कारोबार में सबसे आगे है। किनले की 25 और एक्वाफिना की करीब 15 फीसदी हिस्सेदारी बाजार में है। पार्ले एग्रो की बेली की करीब 6 फीसदी हिस्सेदारी है। किंगफिशर, ऑक्सीरिच आदि ब्रांड्स की हिस्सेदारी करीब 18 फीसदी है।

इस तरह हम देख सकते हैं कि पानी की बोतलें कैसे बड़े मुनाफे की प्यास बुझा रही है।

- सम्पादकीय विभाग

समाचार - प्रकाश

आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म. का रतलाम में भव्य मंगल प्रवेश

रतलाम (मध्य प्रदेश) : साधु बन जाओ, तपस्या कर लो, क्रिया पाल लो, उस से मोक्ष प्राप्त नहीं होगा, मोक्ष प्राप्ति के लिए मन में करूणा, वात्सल्य और मैत्री का भाव होना चाहिए, केवल महावीर का नाम या संतों के नाम रटने से उद्धार नहीं होगा। संत तो केवल निमित्त मात्र होते है पुरुषार्थ तो स्वयं करना पड़ता है। स्वयं भगवान महावीर स्वामी भी अपने परम शिष्य गौतम स्वामी का कल्याण नहीं कर सके। उन्होंने कहा कि अपना कल्याण चाहते हो तो मोह का त्याग कर स्वयं पुरुषार्थ करें। कोई किसी का संत नहीं, कोई किसी का श्रावक नहीं, सब भगवान महावीर के अनुयायी है, फिर क्यों संतों के नाम से रोटी सेकते हो। मन में राग-द्वेश करोगे तो उसका भुगतान कहा करोगे। प्रेम से बढ़कर दुनिया में कोई वस्तु नहीं है। **'सबका भला हो, सबका मंगल हो'**, की भावना से कार्य करे, कट्रता से केवल दूरियाँ बढ़ती है। नदी सब के लिए बहती है। वृक्ष सब के लिए फल देते है। चन्द्रमा और सूर्य सब को रोशनी देते है। जहां राग द्वेष है वहां धर्म नहीं है, जहां प्रेम है वहाँ धर्म है। उक्त बात श्रमण संघीय आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म. ने नीमचौक स्थानक पर विशाल पाडल में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कही। आचार्यश्री जी ने कहा कि **'स्वयं को जानो और स्वयं को समझो'**, यह शरीर तुम्हारा नहीं है, आत्मा तुम्हारी है। पद, प्रतिष्ठा के चक्कर में शरीर को महत्व नहीं दे। पद और प्रतिष्ठा यहीं रह जायेगी। स्वयं के भीतर अनंत ज्ञान का भण्डार है, उसे पहचाने। सोचो अपने जीवन का क्या लक्ष्य है, केवल खिलाना या पिलाना यह साथ नहीं जायेगा। साथ तो केवल हर जन्म में आत्मा ही रहेगी। आत्मा का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति का होना चाहिए।

पूज्य गुरुदेव श्रमण संघीय मंत्री पू. श्री शिरीष मुनिजी म. ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आचार्य भगवंत आये है, कल प्रवचन के बाद विहार करके चले जायेगे। आप उनसे क्या पायेगे। आपको अपने जीवन में क्या चाहिए। रतलाम में तो सेंव, साडी और सोना बहुत प्रसिद्ध है और आपके पास बहुत है। लेकिन हमें आचार्य भगवंत से क्या चाहिए। आचार्य श्री शांति ओर मैत्री का संदेश लेकर आये है, हमें नये कर्मो का बंधन नहीं हो, पुराने कर्मो के बंधन से मुक्त हो, ऐसी विधि हमें सिखना है। 'वसुदेव कुटम्ब' की भावना को वापस लाना है। प्रत्येक जीव सुखी हो, ऐसी भावना रखना है। पहले खेती करने वाला सबका ध्यान रखता था, लेकिन आज पूंजीपतियों के हाथों में व्यवस्था हो गई है। आज अहिंसक लोग सबसे ज्याद भ्रूण हत्या कर रहे है। तुम किसी के पालन हार नहीं हो, सब अपना पुण्य लेकर आते है, तुम उसको मारने वाले कोन होते हो, जीवन में विवेक रखो। आज पैसे के चक्कर में व्यक्ति ने पर्यावरण को दूषित कर दिया और हवा पानी का भी संकट पैदा हो गया है। अन्याय से कमाया हुआ धन ज्यादा दिन तक नहीं टिकता है और न्याय नीति से कमाये पैसे से शांति रहती है। मनोरंजन में सारी जिंदगी लगा दी, वहां शांति नहीं मिलेगी।

प्रवर्तक पू. श्री प्रकाश मुनिजी म. 'निर्भय' ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि नीम चौक का स्थानक जाना पहचाना है, मेरा यहां बचपन बीता है, यहां करुणा मूर्ति श्री कस्तुरचंदजी म. के दर्शन वंदन करने के लिए आता था। यह स्थान तीर्थ भूमि है। पूज्य गुरुदेव श्री शिवमुनिजी म. रतलाम में तीसरी बार पधारे है, उनका हार्दिक अभिनंदन और स्वागत जिस भाव भक्ति से आपने किया है यह सब उन गुरु भगवंतों का आशीर्वाद है जिन्होंने सबको प्रेम से साथ रहना सिखाया है जिसका पिता अच्छा होता है, उसका पुत्र भी अच्छा होता है और जिसका गुरु अच्छा होता है उसके शिष्य भी अच्छे होते है। जो समर्पण करता है वहीं निर्माण करता है, केवल शरीर को साफ करने से कुछ नहीं होगा, हमें मन को साफ रखना है। बेर की गाँठ बाधेंगे तो भोगना हमें ही है।

पूज्य श्री शुभम मुनिजी म.सा. ने कहा कि जीवन में खुश रहना है तो इन सूत्रों का ध्यान रखें - नो सजेशन, बिना मांगे किसी को सलाह न दें एवं हमेशा खुश रहे, मस्त रहे, आनंद में रहे और जब उन्होंने अपने भजन प्यारो-प्यारो लागे मालवा प्रस्तुत किया तो सारी धर्मसभा झूम उठी। पूज्य गुरु भगवंतों के प्रवचन के पूर्व आचार्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म. आदि ठाणा 10 प्रातः 6.45 बजे विहार कर जैन कालोनी स्थित संघ रत्न श्री इन्दरमलजी जैन के निवास स्थान पर पधारे एवं प्रातः 8.30 बजे श्री मांगीलालजी कटारिया के निवास स्थान से भव्य मंगल प्रवेश प्रांरभ हुआ जो शहर के विभिन्न मार्गों से होता हुआ नीमचौक स्थानक, रतलाम पर सम्पन्न हुआ। महिलाऐं केसरिया साड़ी में और पुरुष सफेद वस्त्र में, संघ एवं नवयुवक मण्डल के पदाधिकारी साफे बाँधकर आचार्य भगवंत की जय, शिवाचार्य की जय के जयकारे लगाते हुए चल रहे थे। मार्ग में जगह-जगह गुरु भगवंतों से श्रावक-श्राविका आशीर्वाद ले रहे थे। चल समारोह जब घांस बाजार पहुंचा तो सामने से आचार्य भगवंत पू. श्री विजय कीर्तियश सुरिश्वरजी म. अपने श्रीसंघ सहित पधार रहे थे। दोनों आचार्यश्री का बड़े ही मैत्रीपूर्ण भाव से मिलन हुआ, तो चारों ओर आचार्य भगवंत के जयकारों के नारों से शहर गुंजयमान हो गया।

पूज्य आचार्यश्री एवं संत मण्डल का नीम चौक स्थानक पर मंगल प्रवेश के पश्चात् संघ अध्यक्ष श्री ललित पटवा ने स्वागत उद्‌बोधन, बहुमण्डल अध्यक्ष श्री सोनू बाफना, कल्पना गाँधी, रिना गाँधी, राखी गांधी, समता पितलीया, कविता कटारिया, ज्योति बाफना, रितु कटारिया एवं महिला मण्डल की ओर से अनिता कटारिया ने स्तवन प्रस्तुत किया। नवकारसी का लाभ मांगीलालजी कटारिया द्वारा लिया गया। प्रभावना श्रीमती कमलाबाई श्री बसंतीलाल पटवा परिवार द्वारा वितरित की गई। जैन दिवाकर संगठन समिति के राष्ट्रीय कार्योध्यक्ष श्री इन्दरमल जैन ने आभार व्यक्त किया। जैन दिवाकर संगठन समिति के राष्ट्रीय महामंत्री श्री महेन्द्र बोथरा एवं संघ के कोषाध्यक्ष श्री अमृत कटारिया ने बताया कि आचार्य श्री डॉ. शिवमुनिजी म., आदि ठाणा 10 का नीम चौक से कल प्रातः 8.30 बजे विहार श्री सौभाग्य जनकल्याण परिसर, सागोद रोड़, रतलाम पर होगा जहां पर पूज्य गुरु भगवंतों के प्रवचन होगें।कार्यक्रम का संचालन संघ के महामंत्री विनोद बाफना ने किया।

प्रेषक : विनोद बाफना

आनंद चरण तीर्थ-चिचोंडी समर्पण समारोह का आयोजन 17 दिसम्बर को

अहमदनगर (महाराष्ट्र) : आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषि म. की जन्मभूमि चिचोंडी (शिराल), ता. पाथर्डी, जिला अहमदनगर यहाँ उपाध्याय प्रवर पू. श्री प्रवीणऋषि जी म. की प्रेरणा से गुरु आनंद फाउंडेशन द्वारा भव्य 21 एकड़ ज़मीन पर आनंद तीर्थ निर्माण का कार्य चल रहा है। आनंद तीर्थ के प्रथम चरण में, आनंद चरण तीर्थ, आनंदालय (ज्येष्ठ श्रावकों के लिए), तप साधनालय, सुधर्मा समवशरण सभागृह, भक्त निवास, गौतम प्रसादालय, सेवालय आदि काम पूरे हुए है।

आनंद तीर्थ के इस प्रथम चरण का समारोह एवं द्वितीय चरण का भूमि शुद्धि कार्यक्रम का भव्य समारोह रविवार दिनांक 17 दिसम्बर 2017 को रखा गया है। इस समारोह को महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी म., आनंद तीर्थ प्रेरक पूज्य श्री प्रवीणऋषि म. आदि ठाणा एवं 50-60 साधु-साध्वी उपस्थित रहने वाले हैं।

आवास निवास व्यवस्थाः- बाहर गाँव समारोह में पधारने वाले महानुभावों की आवास निवास की व्यवस्था रखी है। आपके आने की अग्रिम सूचना 10 दिसम्बर से पहले निम्नालिखित फोन नं पर दें ताकि आपकी व्यवस्था सुचारु रुप से हो। संपर्क सूत्र 9922580000, 9371000406, 9850714164, 8888289888.

बस व्यवस्थाः- पुणे शहर से आदिनाथ स्थानक भवन, शांती नगर, धनकवड़ी, वडगांव शेरी, कोथरुड़ शिवाजीनगर, औंध, चिंचवड़, भोसारी तथा अहमदनगर से पाथर्डी बोर्ड से मुफ्त में बस व्यवस्था रखी हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें। सम्पर्क सूत्र : 9970760760, 9823294329, 9822996905.

तीर्थ निर्माण के इस भव्य समारोह में आप सभी सपरिवार, श्री संघ आकर नवयुग निर्माण में सहभागी बनिये।

नोटः- **चिचोंडी (शिराल) अहमदनगर से 31 कि.मी., पुणे से 152 कि.मी., औरंगाबाद से 105 कि.मी. तथा पांढ़री पुल से 13 कि.मी. है।**

प्रेषक : संजय चोरडिया जैन

युगप्रधान आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. आदि ठाणा की संभावित विहार यात्रा रतलाम से उदयपुर

नई दिल्ली : श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पू. डॉ. शिव मुनि जी म. आदि ठाणा की संभावित आगामी विहार यात्रा इस प्रकार से है : -

09 दिसम्बर, 2017	जाव रोड नया गांव	10 कि. मी.	श्री अनिल जी जैन	09425106419
10-11 दिसम्बर, 2017	निम्बाहेड़ा	10 कि. मी.	श्री विजय कुमार लोढ़ा	09413161501
12 दिसम्बर, 2017	शम्भूपुरा	17 कि. मी.	श्री मिश्रीलाल कोठारी	0971069903
13-14 दिसम्बर, 2017	चित्तौड़गढ़ शहर	16 कि. मी.	श्री मदनलाल नाहर	09413883024
15 दिसम्बर, 2017	नारेला	11 कि. मी.		
16 दिसम्बर, 2017	सिंगपुर	11 कि. मी.		
17 दिसम्बर, 2017	गोराजी का निम्बाहेड़ा	10 कि. मी.	श्री लक्ष्मीलाल/ श्री भेरूलाल सांखला	
18 दिसम्बर,2017	कपासन	11 कि. मी.	श्री निर्मल जी सामला	09460040314
19 दिसमबर, 2017	भोपालसागर	12 कि. मी.	श्री दीपक जी चंडालिया	09782872424
20 से 20 दिसम्बर, 2017	फतेहनगर	13 कि. मी.	श्री बलवंत जी हींगड़	08824127111
23 दिसम्बर, 2017	मावली	13 कि. मी.	श्री बाबूलाल जी कुमठ श्री दलीचंद दिव्येश	09449903496 09928073049
24 दिसम्बर, 2017	असोलिया की मादड़ी	08 कि. मी.	श्री बाबूलाल जी कुमठ	09449903496
24 दिसम्बर, 2017	डबोक	14 कि. मी.	श्री कमलेश खोखावत	09460207839
25 दिसम्बर, 2017	नाकोड़ा नगर थाउजी की बावड़ी	13 कि. मी.	श्री सोहनलाल रांका	09460801881
26 दिसम्बर, 2017	आयड़, उदयपुर	08 कि. मी.	श्री शांतिलाल कोठारी	09460719476
27 दिसम्बर, 2017	नाई	10 कि. मी.	श्री नानालालजी कोठारी	09414193305 08104451008
28 दिसम्बर 2017	साधना स्थल	02 कि. मी.	श्री राजेश मेहता	09414155221

राष्ट्रीय महिला शाखा द्वारा आयोजित उड़ान हौंसलों की विदेश यात्रा
जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास में एक नया रिकार्ड बनाकर सफलता के साथ देश लौटी

मुंबई (महाराष्ट्र) : दिनांक 5 नवंबर 2017 को गोयंका हॉल, अंधेरी, मुंबई में सभी सम्मिलित यात्रियों को जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंद जी खरवड़ जैन, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन आदि मुख्य शाखा के पदाधिकारी तथा राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री शशिकुमारजी कर्नावट जैन, पूर्व राष्ट्रीय युवा महामंत्री श्री निमेशजी राठौड़ जैन आदि युवा शाखा, मुंबई महिला शाखा के सभी पदाधिकारी विदेश यात्रा के लिए शुभकामना देने के लिए उपस्थित हुए।

शुभकामना समारोह में उड़ान हौंसलों की पुस्तिका के विमोचन के पश्चात सभी यात्रियों को विदेश यात्रा के लिए एयरपोर्ट से विदा किया गया। शुभकामना समारोह के प्रायोजक पी. एच. जैन परिवार से श्री पारसजी मोदी जैन तथा विशेष सहायता श्री स्वरूपजी लोढ़ा जैन, श्री दिनेश जी सिंघवी द्वारा दी गई। **'न भूतो न भविष्यति'** ऐसी विदेश यात्रा संपन्न हुई। इस यात्रा के दौरान अनेक तपस्वीजन भी साथ में थे। काफी लोगों ने नवकारसी, चौविहार, एकासना, उपवास, पारणा आदि का भी लाभ लिया। सभी के लिए जैन भोजन तथा संस्कारित खाने का आयोजन महिला शाखा द्वारा किया गया। सिंगापुर, मलेशिया और क्रूज यात्रा के दौरान सभी जगह भव्य स्वागत हुआ। विशेष बात यह रही कि क्रूज तथा फ्लाइट में जैन भोजन उपलब्ध कराना पड़ा, जोकि जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित की जाने वाली उपलब्धि रही। राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रूचिराजी सुराणा जैन, राष्ट्रीय महिला कोषाध्यक्षा सौ. सुनंदाजी भंसाली जैन, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा सौ. मंजूजी दर्डा जैन, जीवन प्रकाश योजना राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. लाजवंती जी वड़ाला जैन, राष्ट्रीय मंत्री सौ. कविताजी सेठिया जैन आदि के कार्यों का सम्मान मलेशिया के संघ, ट्रस्टी, पदाधिकारी, महिला संध द्वारा किया गया। यात्रा के दौरा सम्मिलित यात्रियों को समय-समय पर सौ. रूचिराजी द्वारा परिवार में कैसे रहे, रिश्तों का मजंबूतीकरण आदि विषयों पर मार्गदर्शन एवं काउंसलिंग प्रदान की गई। सम्मिलित यात्रियों को भी महिला शाखा द्वारा विविध पुरस्कारों से नवाजा गया। छोटे से लेकर बड़े सभी यात्री खुश हुए। महिला शाखा के आयोजन को सेवा को, प्रेम को, सभी ने खूब सराहा। यात्रियों ने जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा को खूब-खूब आशीर्वाद दिया और हर्षोल्लास व समाधान के साथ 14 नवंबर 2017 को देश वापिस लौटे। **प्रेषक : मंजू दर्डा जैन**

सामाजिक आड़म्बरों के विरुद्ध जैन सम्मेलन

नई दिल्ली : जैन महासंघ दिल्ली जो कि दिल्ली स्थानकवासी समाज की 80 संस्थाओं की संयुक्त फेडेरेशन हैं तके तत्वाधान में एक खुला विचार सम्मेलन 12 नवम्बर, 2017 को सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में विवाह समारोहों में बढ़ते आड़म्बरों और धन प्रदर्शन पर रोक लगाने का प्रस्ताव पारित किया गया। सर्वसम्मति से निर्णय हुए कि विवाह समारोह रात्रि की बजाए दिन में किए जाएं। आतिशबाजी के प्रयोग तथा सड़क पर नाच बंद हो। निमंत्रण-पत्र सादे हों और वे वाट्सअप या ईमेल द्वारा भेजे जाए। विवाह के उपलक्ष्य में दो से ज्यादा सार्वजनिक समारोह न किए जाएं। सगाई इत्यादि समारोह में नकद रुप से मिलनी (शगुन) के लेन-देन पर पाबंदी लगे।

सम्मेलन में विवाह के कुछ समय बाद ही दम्पति में बढ़ते तनाव तथा परिवारों में बढ़ते कलह तथा इस कारण तलाक के केशों में वृद्धि पर विस्तृत चर्चा हुई। सम्मेलन के स्वर थे कि हमें अपने बच्चों को सुविध ाएं देने के साथ-साथ संस्कार भी देने चाहिएं। उन्हें सहिष्णुता और सामंजस्य का शिक्षणा और प्रशिक्षण देना

चाहिए। विवाह के पश्चात् मायके पक्ष का विशेष रूप से वधु की माँ का, अनावश्यक हस्तक्षेप बंद होना चाहिए। सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि ऐसे मामलों का समाज के स्तर पर समाधान करने के लिए सामाजिक समितियों का गठन किया जाना चाहिए।

महासंघ के महामंत्री प्रो. रतन जैन ने बताया कि इस अवसर पर संस्थाओं को सुचारु रुप से चलाने के लिये भी प्रस्ताव पारित हुए। रोहिणी सैक्टर-7 दिल्ली में आयोजित इस विचार सम्मेलन में जैन निगम पार्षद श्रीमती सरोज बाला एवं श्रीमती कनिका जैन का अभिनंदन किया गया। सम्मेलन की आध्यक्षता संस्था के कार्यकारी प्रधान श्री सुरेन्द्र जैन ने की और सैक्टर-7 के प्रधान श्री धर्मवीर जैन ने प्रतिनिधियों को स्वागत किया। सम्मेलन में दिल्ली स्थानकवासी समाज के लगभग 200 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

प्रेषक : प्रो. रतन जैन

श्री हीरालाल साबद्रा जैन को मलेशिया में डॉक्टरेट की पदवी ग्रहण की

मुंबई (महाराष्ट्र) : जैन समाज सेवक श्री हीरालालजी साबद्रा जैन को केमिकल इंजीनियर हैं और हाल में के. व्ही. फायर केमिकल्स के अध्यक्ष एवं निर्देशक हैं। उन्हें अंतर्राष्ट्रीय नामांकन संख्या CIAC-Cofederation International Accreditation Commission जागतिक आरोग्य सेवा संघ - CIHF - Confederation of International Health Care Foundation, विश्व शांति संघटना - WPDO World Peace & Diplomacy Organization और साऊथ कोरिया की अंतर्राष्ट्रीय KEISIE यूनिवर्सिटी संयुक्ता से 14 अक्टूबर 2017 को कुलालामपुर मलेशिया में आयोजित चौथी जागतिक शैक्षणिक सभा मंच पर डॉक्टरेट पदवी से सम्मानित किया।

श्री हीरालाल जी का सपना है **'जग आग से सुरक्षित हो'** और इसके लिये वे पूरी निष्ठा के साथ लगातार गत 50 वर्षों से अग्निशामक क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं। सभी प्रकार के अग्निशामक रसायनों को सर्वप्रथम भारत में विकसित और निर्मित कर उन्होंने देश के आयात को पर्याप्त दिया है और जागतिक नामांकन प्राप्त करके वम दुनिया के 45 से अधिक देशों में निर्यात कर रहे हैं। यह उनकी सेवा विशेषता एवं कुशल व्यवस्थापन के लिये उन्हें डॉक्टरेट की पदवी बहाल कर उनका अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान एवं सत्कार किया। यह हमारे देश के और जैन समाज के लिये बड़े गौरव की बात है। **प्रेषक : पारस मोदी जैन**

बाबूलाल जैन 'उज्जवल' को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस पुरस्कार

मुंबई (महाराष्ट्र) : समग्र जैन चातुर्मास सूची, गजेन्द्र संदेश, पोरवाल क्रांति आदि पत्रों के प्रधान संपादक बाबूलाल जैन उज्जवल मंबुई को श्रमण संघीय आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म. सा., युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा. आदि संत-सती मंडल की पावन निश्रा में इंदौर में विश्व विख्यात गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस का अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

यह पुरस्कार उज्जवल द्वारा विगत 39 वर्षों से नियमित समग्र जैन समाज की चारों संप्रदायों (श्वेताम्बर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगम्बर सम्प्रदाय) के 16405 साधु-साध्वियों की एक मात्र पूर्ण एवं प्रमाणिक विश्व विख्यात 'समग्र जैन चातुर्मास सूची' के उत्कृष्ट कार्य के लिये प्रदान किया गया है। सम्पूर्ण विश्व में हजारों की संख्या में विभिन्न धर्मावलम्बियों में अनेक आध्यात्मिक धर्म गुरु, महाराज, साधु-साध्वियां विद्यमान हैं, और वे वर्षावास में चातुर्मास भी करते रहते हैं, लेकिन उनके नाम, सम्पर्क सूत्र, फोन नं. सही

संख्या आदि की जानकारियां कहीं भी किसी के पास भी उपलब्ध नहीं है, वे सभी सिर्फ अनुमान ही लगा सकते है।। उज्जवल द्वारा प्रकाशित समग्र जैन चातुर्मास सूची सम्पूर्ण विश्व की एक मात्र एक ऐसी वृहद सूची पुस्तिका है, जिसमें सम्पूर्ण जेन समाज के चारों सम्पदायों (श्वेताम्बर मूर्तिपूजक 10,218, स्थानकवासी 4015, दिगम्बर 1460 तेरापंथी 712) कुल 16,405 के सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वियों के नाम, सम्पर्क सूत्र फोन नं. नई दीक्षा, स्वर्गवास, नई पदवियों आदि की एक से बढ़कर एक जानकारियां 39 वर्षों से प्रति वर्ष प्रकाशित की जाती है। ऐसी पुस्तिका सम्पूर्ण विश्व में अन्यत्र कहीं से भी प्रकाशित नहीं होती है।

स्मरण रहे उज्जवल द्वारा 39 वें वर्ष की समग्रजैन चातुर्मास सूची 2017 पृष्ठ 528 एवं मुंबई महानगर स्थानकवासी जैन चातुर्मास सूची पृष्ठ 400 का प्रकाशन किया गया है। उज्जवल को इस कार्य के लिये 'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस' पुरस्कार प्रदान किया गया है। **प्रेषक : बाबूलाल जैन**

जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा नई दिल्ली के द्वारा भव्य धार्मिक प्रश्न मंच का आयोजन

नई दिल्लीः जैन श्रावक संघ रोहिणी के तत्वावधन में आयोजित श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा नई दिल्ली के द्वारा भव्य धार्मिक प्रश्न मंच का आयोजन सरल स्वभावी पू. श्री सुयषा जी म. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में एवं महासती पू. श्री रश्मिजी म. एव महासती पू. श्री कौमुदीजी म. आदि साध्वीजी के सान्निध्य में रोहिणी जैन स्थानक में हुआ। इस आयोजन में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय युवाध्यक्ष श्री शशिकुमार 'पिंटु' कर्नावट जैन, दिल्ली प्रांतीय युवा महामंत्री श्री दीपकजी जैन, रोहिणी संघ के प्रधान श्री शेखरजी जैन, श्रीमती चंदनाजी जैन, श्री राजेशजी जैन, श्री नरेशजी जैन, श्री हेमजी जैन एवं जैन कॉन्फ्रेंस के युवा पदाधिकारी साथ श्री संघ के पदाधिकारीगण उपस्थित थे। **प्रेषक : गणेश सांखला जैन**

पू. डॉ. श्री राममुनि जी म. आदि ठाणा का आगामी चातुर्मास आगरा में होगा

नई दिल्ली : श्रमण संघीय सलाहाकार सिद्धांताचार्य पू. डॉ. श्री राममुनि जी म. 'निर्भय' व युवा मनीषी पू. श्री विकास मुनि जी म. आदि ठाणा का वर्ष 2018 का आगामी चातुर्मास आगरा श्रीसंघ की पुरजोर भावभीनी आग्रह पूर्वक विनती को दृष्टिगत करते हुए आगारा में होना घोषित हुआ है। स्मरण रहे कि बड़ोदरा, गुजरात एवं घाटकोपर संघ की भी पुरजोर विनती थी। गुरुदेव अभी दो माह मुंबई में विचरण करके एक जनवरी से अपनी विहार यात्रा आगरा चातुर्मास हेतु आरंभ करेंगे। **प्रेषक : दीपक जैन**

वीरवाल जैन समाज द्वारा तप, धर्म, आराधना

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) : प्रारंभ से ही त्यागी, तपस्वी, बहुश्रुत ज्ञानियों ने अपनाकर तीर्थंकरों, गणधरों, आचार्यो व स्थविरों ने इसे दान, शील, तप, भाव, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, धैर्य, क्षमा, सहनशीलता, शालीनता के उत्तमोत्तम अलंकारों से सुसज्जित कर अपने जीवन में कल्याणकारी माना है। संवत्सरी के ओज, प्रभाव व तेज के रहते हुए वहाँ पर क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, काम, हिंसा, झूठ, परिग्रह आदि कोई भी शत्रु आँख उठाकर नहीं देख सकता। इन्ही समभाव चारित्रों में स्थायित्व बनाये रखने एवं श्रमण भगवान महावीर स्वामी के उद्देश्यों को प्रतिपादन में पं. रत्न बाल ब्रह्मचारी श्री समीर मुनिजी म.सा. ने वीरवाल जैन प्रवृत्ति का सृजन किया। जिनकी बगीया देश के विभिन्न गाँव, कस्बो, शहरों, राज्यों में निवास करते हुए वर्ष 2017 के वर्षावास में विराजित साधु-साध्वी वृंद्धो के पावन सानिध्य में जाकर सामायिक, ऐकासन, उपवास, संवर, पौषद, चौला, पचौला, छः, सात, अठाई एवं मास खमण की उग्र तपस्याएँ कर जिन शासन देव की शान में अभिवृद्धि एवं कर्मो की निर्जरा की है। **प्रेषक : मांगीलाल वीरवाल जैन**

पू. श्री कमलमुनि जी म. 'कमलेश' का लखनऊ में राज्यकीय स्वागत

लखनऊ (उत्तर प्रदेश) : जैन दिवाकरीय राष्ट्रसंत पू. श्री कमलमुनि जी म. 'कमलेश' की लखनऊ आगमन पर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी जी ने उत्तर प्रदेश शासन को पलक पावडे बिछा कर स्वागत सेवा एवं धर्म प्रभावना के लिए पूर्ण समर्पित करने का आदेश सरकार के सचिव श्री मणि प्रसाद मिश्र जी ने लिखित रुप में पूरे उत्तर प्रदेश में डीजीपी आई जी, एसपी सभी के नाम 8 नवंबर को विशेष आदेश जारी करते हुए वीआईपी के रुप में राष्ट्र संत की सेवा के लिए आदेश कलेक्टर श्री सुबोध कुमार जी शाह कानपुर वालों को शिक्षा सचिवालय लखनऊ में सौंपा गया। जिसके प्रति उत्तर प्रदेश के सभी जिला अधिकारियों को फैक्स के द्वारा प्रेषित कर दी गई है। 'मुनि कमलेश के गौ सेवा ध्यान' के राष्ट्रीय स्तर के प्रयासों की सराहना करते हुए विश्व हिंदू परिषद के कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के सभी जिलों में एक एक बड़ी गौशाला जिसमें करीब 75 हजार गायों का गौशाला में पालन होगा।

प्रथम चरण में 35 जिलों में चालू करने का काम प्रारंभ हो गया है 75 जिलों के अंदर अति शीघ्र गौशाला चालू की जाएगी संवर्धन का काम होगा रिसर्च सेंटर बनेगा उत्तर प्रदेश से गौ मांस का निर्यात किसी कीमत पर नहीं होगा गौ संवर्धन को प्राथमिकता दी जाएगी। मुनि कमलेश ने मुख्यमंत्री योगी जी के प्रयासों की मुक्तकंठ प्रशंसा करते हुए कहा कि जिस दिन धरती पर गाय कि एक भी रक्त की बूंद नहीं गिरेगी उसी दिन राम राज्य का सपना साकार होगा।

आश्रम में सेवा करने वाले महंत जी का अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली की ओर से शाल ओढ़ाकर अभिनंदन किया गया जो गो सेवा और संत सेवा को लेकर पूरे क्षेत्र में लोकप्रिय बन चुके हैं। पूज्य श्री कौशल मुनि जी म., पूज्य श्री घनश्याम मुनि जी म., साधक मानेसर भी शासन की प्रभावना में निरंतर प्रयत्नशील है।

प्रेषक : डॉ. अशोककुमार पगारिया

मनुष्यता को बचाने के लिये अहिंसा जरुरी : अरूण मुनि

गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) : वसुधारा स्थित मेवाड़ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस में अरिहंत चेरिटेबल एजुकेशन ट्रस्ट द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समाराज एवं अहिंसा परमो धर्मः पर आधारित विचार संगोष्ठी और नाटक ने खूब समां बांधा। विचार संगोष्ठी के जरिया वक्ताओं ने वैश्विक स्तर पर फैल रही हिंसा के लिए मनुष्य को दोषी माना तो नाटक के जरिये घमंड से भी पनप रही हिंसा के प्रति चिंता व्यक्त की। इस मौके पर जैन धर्म के अहिंसापरक आदर्शों पर आधारित 'अभिनंदन' नामक स्मारिका का भी विमोचन किया गया।

समारोह में श्री अरुण कुमार जैन ने बतौर मुख्य अतिथि कहा कि हिंसा पर काबू पाकर ही हम मनुष्यता को बचा सकते हैं। मनुष्य जब अहंकारी हो जाता है तो उसके भाव, वाणी व काया के जरिये अहिंसा पैदा होती है, जो कि खतरनाक है। इससे बचना और मनुष्यता को बचाना बहुत जरुरी है। उन्होंने अहिंसा के प्रशिक्षण की आवश्यकता व्यक्त की। श्री सी.के. जैन और नवीन कुमार जैन ने कहा कि जीवित प्राणियों का सम्मान करना भी अहिंसा है। दिल्ली एनसीआर के स्कूली बच्चों के लिए अहिंसा विषय पर आयोजित की गई निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को नकद राशि, ट्रॉफी और प्रमाण-पत्र देकर पुरस्कृत किया गया है। डॉ. अलका अग्रवाल ने अपने सम्बोधन में ट्रस्ट व उसके उद्देश्ययों पर विस्तार से प्रकाश डाला। ट्रस्ट की ओर से 'अभिनंदन' नामक स्मारिका का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन पत्रकार व कवि श्री चेतन ने किया।

प्रेषक : बरूण कुमार सिंह

महासती पूज्य श्री कीर्तिसुधा जी म. का चातुर्मास नागदा में

नागदा (मध्य प्रदेश) : परम पूज्य साध्वी श्री कीर्तिसुधा जी म., पू. श्री नूतनप्रभा जी म., पू. श्री आराधनश्री जी म., पू. श्री भक्तिश्री जी म., पू. श्री आस्थाश्री जी म. का आगामी चातुर्मास नागदा में करने की स्वीकृति प्राप्त हुई है। स्थानकवासी जैन समाज के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द्र जी सांवरेवाला, मीडिया प्रभारी श्री महेन्द्रजी कांठेड़ ने बताया कि महासतीजी ने समाजजन ने शुजालपुर पहुंचकर इस संबंध में विनती की थी। चातुर्मास की स्वीकृति के लिए जैन कॉन्फ्रेंस के वरिष्ठ मार्गदर्शक श्री मनोहरलालजी कांठेड़ जैन, श्री राजेन्द्रजी कांठेड़, श्री प्रकाशचन्द्र जी सांवेरवाला, श्री चन्द्रप्रकाश जी कांठेड़ एवं श्री देवेन्द्र जी कांठेड़ के संघपति के नेतृत्व में शुजालपुर पहुंचकर संपूर्ण समाज की ओर से भावभरी विनती की गई। इस अवसर पर कई शहरों के संघ द्वारा भी अपने शहर में चातुर्मास की विनती की, लेकिन नागदा का प्रबल समर्थदन के चलते महासती पू. श्री कीर्तिसुधा जी म. ने समय की अनुकूलता व परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए आगामी वर्षावास नगर में करने की घोषण कर मांगलिक प्रदान की।

प्रेषक : मनोहरलाल कांठेड़ जैन

शांतिलाल मुथा फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री शांतिलालजी मुथा राष्ट्रपति जी द्वारा सम्मानित

पुणे (महाराष्ट्र) : प्रसिद्ध समाजसेवी, भारतीय जैन संघटना के प्रारंभिक संयोजक, संस्थापक अध्यक्ष श्री शांतिलालजी गुलाबचंदजी मुथा फाउंडेशन के माध्यम से महाराष्ट्र, और छात्रों के लिए मूल्यपरक क्षेत्र में विशेष योगदान दे रहे हैं, कोविंद ने राष्ट्रपति भवन में राजीव किया है। आपके अभिनंदन से बढ़ा है। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार भी हार्दिक शुभकामना व्यक्त करते हुए बधाई देता है।

जैन जो वर्तमान में शांतिलाल मुथा गोवा आदि राज्यों में नौनिहाल शिशुओं अभ्यास क्रम तैयार करके शिक्षा के उन्हें माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथजी गांधी पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित निश्चित रूपेण जैन समाज का गौरव अपने इस लाड़ले समाजसेवी के प्रति

प्रेषक : राहुल धोका जैन

जैन जगत के गौरव, प्रसिद्ध भामाशाह श्री रसिकलालजी धारीवाल जैन की श्रद्धांजली सभा एवम् महावीर प्रतिष्ठान में फोटो गैलरी का आयोजन

पुणे (महाराष्ट्र) : जैन जगत की औद्योगिक संस्था एवं सेवा कार्यों में अग्रणी संगठन जीतो के माध्यम से प्रसिद्ध श्रावक रत्न, जैन जगत के भामाशाह श्री रसिकलालजी धारीवाल जैन को उनके देवलोक गमन पर महावीर प्रतिष्ठान में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर उनके लोक हितैषी कार्यों की स्मृति को संजोते हुए एक फोटो गैलरी महावीर प्रतिष्ठान में संजोई गई। जिससे भावी पीढ़ी प्रेरणा लें और दान एवं सेवा के क्षेत्र में स्व. श्रीमान् रसिकलालजी धारीवाल जैन से प्रेरणा लेकर जीवन में और अधिक उपयोगी कार्य करें। इस अवसर पर श्रद्धांजली सभा में विरायतन से पधारी आचार्यश्री चंदनाजी म., आतंकवाद विरोधी अभियान के प्रमुख श्री मनिन्दरजीत सिंह बिट्टाजी, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री विजयकांत जी कोठारी जैन, जीतो के अध्यक्ष श्री विजयजी भण्डारी जैन, समाजसेवी श्री पोपटलालजी ओस्तवाल जैन, एडवोकेट श्री एस. के. जैन जी, श्री कृष्णकुमार गोयल जी, सौ. शर्मिलाजी ओस्तवाल, श्री अचलजी जैन, श्री राजेशजी सांखला जैन आदि ने अपने भावभीने उद्‌गार प्रकट किए। इस अवसर पर परिवार की तरफ से श्री प्रकाशजी धारीवाल जैन-घोड़नदी, सौ. शोभाजी धारीवाल जैन, सुश्री जान्हवी धारीवाल जैन आदि उपस्थित रहे। बड़ी संख्या में समाजसेवी एवं श्रीमान् धारीवाल जी प्रशंसक उपस्थित रहे।

प्रेषक : सुधीर सैनी

शोक समाचार

पू. श्री हसमुख मुनि जी म. का संथारा सहित महाप्रयाण

नई दिल्ली : पूज्य आचार्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. संदेशः ध्यान साधिका उज्ज्वलाताई जी, सादर हार्दिक धर्म संदेश। समाचारों से ज्ञात हुआ कि गौंडल सम्प्रदाय के वरिष्ठ संत ध्यान योगी पूज्य श्री हसमुख मुनि जी का 74 वर्ष की आयु में एवं 53 वर्ष की दीक्षा पर्याय में सागारी संथारे के साथ देवलोक गमन हो गया।

एक आत्मार्थी साधक का मनोरथ होता है कि अंतिम समय समाधि मरण प्राप्त हो। संथारे का अर्थ है देहाशक्ति छोड़कर आत्मा की अनुभूति करना। संथारा भेद-विज्ञान की उत्कृष्ट साधना है। आत्मा और शरीर की भिन्नता का अहसास करते हुए समतापूर्वक शरीर करे छोड़ना। आगमों में वर्णन आता है जिसका स्मयक् रुप से संथारा आ गया वह निकटभवी बन जाता है। मुनि जी का यह मनोरथ पूर्ण हुआ।

उनका जीवन अनेक गुणों से परिपूर्ण रहा। वे जप,तप, स्वाध्याय, ध्यान आदि में सैव संलग्न रहते थे। उन्होंने ध्यान साधना में अपने जीवन को पूर्णतः समर्पित किया था। बाल्यकाल से ही उनकी ध्यान साधना में विशेष रुची थी। वे एक आत्मार्थी संत थे। श्रमण संघ के प्रति उनका सैव आत्मीयता का व्यवहार रहा। हमारा उनसे आराधना उद्यान केन्द्र अंकाई में अनेक बार मिलन हुआ। ऐसे संत का देवलोक गमन जिन शासन के लिए एक अपूर्णीय क्षति है। मैं शासन देव से प्रार्थना करता हूं कि वे आपको इस शाश्वत सत्य को स्वीकार करने की शक्ति प्रदान करें।

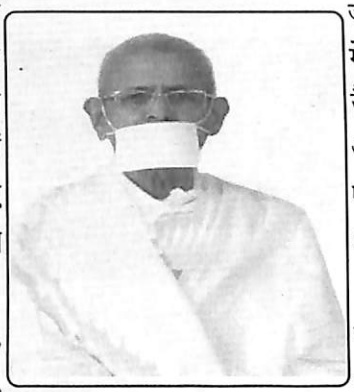

विराजित चेतनमुनि जी, महासाध्वी तरुलता जी, महासाध्वी किरण बाई एवं ज्योति बहन, पिन्टु बहन, केतकी बहन, हिम्मत बाई, राम भाई, जस्सी बहन, नानी बहन, सरसमासी जी आदि ने अंतिम समय तक सेवा कर उनकी साधना में सहभागी बने एतदर्थ हार्दिक कृतज्ञता। तत्र विराजित समस्त साधुवृंद साध्वी वृंद तथा पूर्व आराधना उद्यान परिवार के चित की अवस्था को महसूस करता हकुआ हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं। यहां विराजित प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनि जी म., श्री शुभममुनि जी म. आदि ठाणा 10 की ओर से हार्दिक संवेदनाएँ सहानुभूति स्वीकार करें।

पूज्य युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा. संदेशः- स्नेही आत्मप्रिय श्री चेतनमुनि जी, आत्मलक्ष्यी श्री तरुनलताबाई स्वामी, सेवामूर्ति श्री किरण बाई स्वामी, साधना सेवा की सकार प्रतिमा उजूताई तथा समस्त गुरुभक्त सादर सस्नेह स्मरण।

आज प्रात काल में ही अकस्मात आज्ञातजनक समाचार ज्ञज्ञत हु। श्रद्धेय समादरणीय महान ध्यान साधक श्री हसमुखमुनि जी म. इस नश्वर देह को त्यागकर हमसे अलविदा हो गयें सुनकर विहार को तत्पर हमारे कदम ठिठक से गये। पितृसम वात्सल्य, गुरु सम गाम्भीर्य, वरिष्ठ सम अनुभवी पू. मुनि जी सान्निध्य में व्यतीत पल स्मृति पटल पर उभरने लगे।

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री आनंदऋषि जी म. का विशेष स्नेह तथा आर्शीवाद आपको प्राप्त था।

गोंडल सम्प्रदाय के वर्तमान में वरिष्ठ संत के रुप में होने पर भी आपका व्यक्तित्व सम्प्रदायातीत था। आपकी साधना, आपके वचन सभी पंथ-धर्म के लोगों को समान रुप से आदेय, ग्राह्य और श्रद्धेय थे। आपकी निरंतर लगभग पैंतालीस वर्ष की अंकाई क्षेत्र में सम्पन्न साधना अद्‌भुत अनुपम थी।

हमारा यह सौभाग्य रहा कि इस वर्ष अप्रैल महीने में आपका स्नेहदिल पावन, सान्निध्य मिला। आपने साधना संघ सेवा तथा स्वाध्याय के संदर्भ में मौलिक मार्गदर्शन प्रदान किया। हजारों गुरुभक्त प्रतिवर्ष आपके नियत दिनचार्य वाले प्रार्थना, स्वाधय में सम्मिलित होकर स्वयं को कृतकृत्य अनुभव करते थे।

मुनि जी के देवलोकगमन से संघ समाज की, जिन शासन की अपूर्णीय क्षति हुई है। इसे निकट भविष्य में पूर्ति करना असंभव नहीं है। अंकाई में विराजमान संत-सतीमंडल के प्रति हार्दिक सहवेदना, दिवंगत आत्मा शीघ्रातिशीघ्र शाश्वत सुखों को प्राप्त करे, यही अन्तर मनीषा।

महाराज श्री की अंतिम डोल यात्रा में जैन कान्फ्रेंस की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाश जी चोरड़िया जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, श्री बालासाहेबजी चोरड़िया जैन, राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री श्री रिखबलालजी सांखला जैन, राष्ट्रीय युवाध्यक्ष श्री शशिकुमारजी 'पिंटू' कर्नावट जैन, जीवन प्रकाश योजना राष्ट्रीय मंत्री श्री लादुलालजी बाफना जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री सुनीलजी चोपड़ा जैन, श्री पारसजी मोदी जैन, श्री नंदकिशोरजी सांखला जैन, चतुर्थ जोन प्रांतीय अध्यक्ष श्री सतीशजी नारायणदासजी लोढ़ा जैन आदि पदाधिकारियों ने पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रेषक : सुधीर सैनी

महासाध्वी पू. श्री इंद्रप्रभाजी म.सा. संथारा व्रत पूर्णाहूती से महानिर्वाण

अहमदनगर (महाराष्ट्र) : पूज्य आचार्य श्री आनन्दऋषिजी म.सा. के साध्वी-समुदाय में महासती श्री विमलकुँवरजी म.सा. की शिष्या **साध्वी श्री इन्द्रप्रभाजी** म.सा. (कोटा वाले) का 17 नवम्बर 2017 शुक्रवार शाम सवा आठ बजे संथारा सहित देवलोकगमन हुआ। 80 वर्षीय साध्वीजी कई दिनों से अस्वस्थ थीं। उन्होंने 4 दिसम्बर 1993 को भरा-पूरा परिवार छोड़कर औरंगाबाद में दीक्षा ली थी और 24 वर्ष तक संयम पाला।

साध्वी पू. श्री इन्द्रप्रभाजी म. ने 14 नवम्बर सुबह 10 बजे पूर्ण सजग अवस्था में प्रबुद्ध विचारक पू. श्री आदर्शऋषिजी म. से संथारा ग्रहण किया। साध्वीजी ने संथारावस्था में चार दिनों तक निरन्तर धर्म श्रवण किया। महासती श्री पुष्पकुँवरजी ने सारे पापों की आलोचना करवाई और अतिचारों का शुद्धिकरण करवाया। आलोचना और आत्मशुद्धि के साथ नश्वर देह का त्याग किया।

साध्वी पू. श्री सत्यप्रभाजी म., पू. श्री डॉ. ज्योत्सनाजी म., पू. श्री त्रिशलाजी म., पू. श्री सुनंदाजी म., पू. श्री साधनाजी म., पू. श्री अर्चनाजी म., पू. श्री कीर्तिसुधाजी म. आदि अनेक साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने उन्हें संथाराकाल में निरन्तर धर्म सुनाया। 'साध्वी भवन' में यह पहला संथारा था। अहमदनगर श्रीसंघ अध्यक्ष श्री हस्तीमलजी मुणोत जैन, श्री संतोष बोथरा जैन, श्री संतोष गांधी जैन, श्री बाबुल जैन लोढ़ा सहित पूरे संघ की, सबकी सेवाएँ सराहनीय रहीं।

18 नवम्बर पूर्वाह्न 11 बजे उनकी पार्थिव देह अग्नि को समर्पित की गई। उनके संसारपक्षीय पुत्र श्री अशोककुमार बोरा ने मुखाग्नि दी। इस अवसर पर सभी सम्प्रदायों के बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। 18 नवम्बर अपराह्न 3 ३ बजे आनन्दधाम स्थित आनन्द समवसरण में श्रद्धांजलि सभा हुई। सबने उनके आत्मबल और

सजग संथारे की अनुमोदना की। साध्वी पू. डॉ. ज्योत्सनाजी म. ने बताया कि वे मालव-सिंहनी प्रवर्तिनी साध्वी पू. श्री रतनकुँवरजी म. की पौत्री-शिष्या थीं। साध्वीजी के संथारा-काल में पू. आचार्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म., युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म., उपाध्याय पू. श्री प्रवीण ऋषि जी म., प्रवर्तक पू. श्री कुन्दन ऋषि जी म., साध्वी पू. श्री प्रमोदकुँवरजी म., उपप्रवर्तिनी पू. श्री कीर्तिसुधाजी म., पू. श्री अमितज्योतिजी म. आदि अनेक साधु-साध्वियों के मंगलभावना संदेश पहुँचे।

प्रेषक : डॉ. दिलीप धींग

श्रीमती राजदुलारी जी जैन का देवलोक गमन

अम्बाला सिटी (हरियाणा) : धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती राजदुलारी जी जैन का दिनांक 3 नवम्बर 2017 को अल्प बिमारी के चलते 69 वर्ष की आयु में देवलोक गमन हो गया। आप एक धार्मिक, सुसंस्कारित और सेवा धर्म पालन करने वाली गृहिणी थी। वे हमेशा अवनी कलात्मक डिजाइनों से कपड़ों में जान डाल देती थीं।

वहीं परिवार के प्रति उनका समर्पण भाव सदैव अनुकरणीय रहेगा। आपका जन्म इलाहाबाद में 10 अक्टूबर 1948 को मूर्तिपूजक जैन समाज में हुआ था। वे सदैव भगवान पर भरोसा रखते हुए आत्मा, शांति, खुशी और आत्म निर्भर रहते हुए अपना शानदार जीवन जीकर गई, जिस पर हमें गर्व है। भगवान स्वर्गस्थ आत्मा को अपनों चरणों में स्थान दें, यही वीर प्रभु से मंगल मनीषा।

प्रेषक : अमन जैन

एक्सरे विशेषज्ञ डॉ. वी. एस. जैन का स्वर्गवास

रतलाम (मध्य प्रदेश) : साधार्मिक सेवा और कर्मठ कर्म के सुश्रावक एक्सरे एक्सरे एक्सपर्ट, चिकित्सक के क्षेत्र में मध्यम व निर्धनजनों को सहयोग कर विश्वनीय होकर जैन समाज के आदर्श रत्न, धर्मनिष्ठ, जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के जीवन प्रकाश योजना के आधार स्तम्भ, वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ नीम चौक, रतलाम के वरष्ठि कार्यकारिणी सदस्य, श्री जैन श्वे. स्थानकवासी ऋषि सम्प्रदाय स्थानक आनंद धाम के ट्रस्टी, शहर के गणमान्य चिकित्सक डॉ. वी.एस. जैन का (84) का अल्प बीमारी के पश्चात विगत शनिवार को उनके निवास पर देहांत हो गया। मूल शुजालपुर (मध्य प्रदेश) के निवासी डॉ. जैन ने गजराज मेडिकल कॉलेज से 1958 में एमबीबीएस कर सरकारी सेवा में प्रवेश किया। उनके निधन पर विभिन्न संगठनों ने शोक सभा आयोति कर उनहें श्रद्धांजलि दी।

प्रेषक : एस. सी. कटारिया

सुश्रावक श्री गेंदालाल जी जैन का स्वर्गवास

मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) : जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मार्गदर्शक एवं एस.एस. जैन सभा मुजफ्फरनगर के मंत्री श्री अरुण जैन के पिता श्री गेंदालाल जी पामेचा का 16 नवम्बर 2016 को स्वर्गवास हो गया। आप बहुत संघर्षशील, ऊर्जावान व दृढ़निश्चयी व्यक्ति थे। 82 वर्ष की उम्र में भी आप काफी सक्रिय थें मुजफ्फरनगर जैन समाज में आपकी ख्याति एक दिलेर व्यक्ति के रुप में थी। उन्होंने विशाल परिवार को धार्मिक एवं सेवा के संस्कारों से सम्पन्न किया। आप अपना सर्वस्व समाज के लिए न्यौछावर करने हेतु सदैव तत्पर रहते थे। शोक सभा में नगर एवं जैन कॉन्फ्रेंस के गणमान्य व्यक्तियों ने श्रद्धांजलि व्यक्त की एवं समाज हित हेतु आपके द्वारा किये गये कार्यों को याद किया।

प्रेषक : सुभाष जैन

दिवंगत आत्माओं के प्रति कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

एच एस रांका फॅमेली

द्वारा

स्थापित एवम संचालित

रांका फेमेली फाउन्डेशन्स

आध्यात्म एवम संस्कृति विकास तथा स्वास्थ्य एवम शिक्षा सेवार्थ

25 वर्षो से समर्पित (1992-2017)

- आचार्य श्री नानेश सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल - बेलापुर, नवी मुंबई
- आचार्य श्री नानेश बॉयज हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- आचार्य श्री रामेश गर्ल्स हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- आचार्य श्री रामेश डायलिसिस सेंटर - अंधेरी, मुंबई
- महासतीश्री यश वर्किंग वूमन्स हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- रांका भवन (आध्यात्म-विकास) - वर्ली सीफेस, मुंबई
- रांका सदन (जनसेवा-प्रकल्प) - वर्ली, मुंबई
- रांका निकेतन (संस्कृति-विकास) - वर्ली, मुंबई
- शंकर समता भवन (जैन-स्थानक) - भीलवाडा, राजस्थान-सहभागिता
- आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट - दांता, राजस्थान-सहभागिता
- अन्य समाज सेवी संस्थाओं में सहभागिता/ सहयोग एवम् संचालन

जनसेवा ही जिनेश्वर की सेवा है - स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश

RNI NO. - 2123/57
Date of Posting 07-08/12/2017
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
दिसम्बर 2017, प्रथम पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 04 December, 2017

जीवन प्रकाश योजना प्रमुख आधार स्तम्भ

श्री नवरतनमल जी गन्ना जैन

श्री नवरतनमल जी गन्ना जैन
एवं
श्रीमती कमलाबाई जी गन्ना जैन

कटार, आसीद, सांताक्रूज, मुंबई, महाराष्ट्र

श्रीमती कमलाबाई जी गन्ना जैन

श्रावकरत्न श्री नवरत्नमल जी गन्ना जैन एवं धर्मनिष्ठ श्राविका श्रीमती कमलाबाई गन्ना जैन का पूरा परिवार प्रारम्भ से ही धर्मकार्यों एवं समाजसेवा में अग्रसर है। समय–समय पर गन्ना परिवार ने जन–कल्याण के कार्यों को गतिमान रखने हेतु आत्मीय सहयोग प्रदान किया है। आप वर्तमान में भी 'जियो चैप्टर' सांताक्रूज जैन इंटरनैशनल ऑर्गेनाइजेशन के उपाध्यक्ष, तेरापंथ सभा, मुम्बई के कार्यकारिणी सदस्य, गोल्ड ज्वैलर्स एसोसिएशन, मुम्बई के सलाहकार, साहित्य संस्थान, टाडगढ़ के पूर्व कार्यकारिणी सदस्य एवं तेरापंथ युवक परिषद, सांताक्रूज के पूर्व अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

आपके सुपुत्र श्री विकास कुमार जी गन्ना एवं पुत्रवधु श्रीमती शिल्पा जी गन्ना, दूसरे सुपुत्र श्री जिनेश कुमार जी गन्ना एवं पुत्रवधु श्रीमती प्रियंका जी गन्ना हैं। आपके परिवार में सुपौत्र के रूप में श्री नीवेद्य, दिव्यम, सुपौत्री तनुष्का। आपकी सुपुत्री श्रीमती हेमलता–संजय जी गांधी, सरदारगढ़ वाले जो वर्तमान में मुम्बई में ही निवास करते हैं, के भी पुत्र एवं पुत्री श्री जैनम् गांधी एवं बियंका गांधी आदि हैं। आपका परिवार सम्प्रदाय मुक्त भावना से भगवान महावीर के संदेशों को आत्मसात करते हुए मानव सेवा के कार्यों में सतत योगदान देता रहता है।

प्रतिष्ठान

बाणगंगा ज्वैलर्स
मुम्बई

बाणगंगा ज्वैलर्स प्रा. लि.
मुम्बई

बाणगंगा डायमंडस्
मुम्बई

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा संचालित जीवन प्रकाश योजना में आप प्रमुख आधार स्तम्भ के रूप में परम सहयोगी बने हैं। हम आपका एवं आपके परिवार का आभार व्यक्त करते हुए हार्दिक बधाई सहित शुभकामना व्यक्त करते हैं।

मोहनलाल चोपड़ा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष) | डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन (राष्ट्रीय महामंत्री) | महेन्द्र बोकरिया जैन (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष) | संजय बोथरा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष जीवन प्रकाश योजना) | लादूलाल बाफना जैन (राष्ट्रीय मंत्री अध्यक्ष जीवन प्रकाश योजना)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली- 110 001 से प्रकाशित

RNI NO. - 2123/57
Date of Posting 07-08/12/2017
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
दिसम्बर 2017, प्रथम पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 04 December, 2017

जीवन प्रकाश योजना प्रमुख आधार स्तम्भ

श्री नवरतनमल जी गन्ना जैन

श्री नवरतनमल जी गन्ना जैन
एवं
श्रीमती कमलाबाई जी गन्ना जैन

कटार, आर्सीद, सांताक्रूज, मुंबई, महाराष्ट्र

श्रीमती कमलाबाई जी गन्ना जैन

श्रावकरत्न श्री नवरत्नमल जी गन्ना जैन एवं धर्मनिष्ठ श्राविका श्रीमती कमलाबाई गन्ना जैन का पूरा परिवार प्रारम्भ से ही धर्मकार्यों एवं समाजसेवा में अग्रसर है। समय–समय पर गन्ना परिवार ने जन–कल्याण के कार्यों को गतिमान रखने हेतु आत्मीय सहयोग प्रदान किया है। आप वर्तमान में भी 'जियो चैप्टर' सांताक्रूज जैन इंटरनैशनल ऑर्गेनाइजेशन के उपाध्यक्ष, तेरापंथ सभा, मुम्बई के कार्यकारिणी सदस्य, गोल्ड ज्वैलर्स एसोसिएशन, मुम्बई के सलाहकार, साहित्य संस्थान, टाडगढ़ के पूर्व कार्यकारिणी सदस्य एवं तेरापंथ युवक परिषद, सांताक्रूज के पूर्व अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

आपके सुपुत्र श्री विकास कुमार जी गन्ना एवं पुत्रवधु श्रीमती शिल्पा जी गन्ना, दूसरे सुपुत्र श्री जिनेश कुमार जी गन्ना एवं पुत्रवधु श्रीमती प्रियंका जी गन्ना हैं। आपके परिवार में सुपौत्र के रूप में श्री नीवेद्य, दिव्यम, सुपौत्री तनुष्का। आपकी सुपुत्री श्रीमती हेमलता–संजय जी गांधी, सरदारगढ़ वाले जो वर्तमान में मुम्बई में ही निवास करते हैं, के भी पुत्र एवं पुत्री श्री जैनम् गांधी एवं बियंका गांधी आदि हैं। आपका परिवार सम्प्रदाय मुक्त भावना से भगवान महावीर के संदेशों को आत्मसात करते हुए मानव सेवा के कार्यों में सतत योगदान देता रहता है।

प्रतिष्ठान

बाणगंगा ज्वैलर्स	बाणगंगा ज्वैलर्स प्रा. लि.	बाणगंगा डायमंडस्
मुम्बई	मुम्बई	मुम्बई

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा संचालित जीवन प्रकाश योजना में आप प्रमुख आधार स्तम्भ के रूप में परम सहयोगी बने हैं। हम आपका एवं आपके परिवार का आभार व्यक्त करते हुए हार्दिक बधाई सहित शुभकामना व्यक्त करते हैं।

मोहनलाल चोपड़ा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष) | डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन (राष्ट्रीय महामंत्री) | महेन्द्र बोकरिया जैन (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष) | संजय बोथरा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष जीवन प्रकाश योजना) | लादूलाल बाफना जैन (राष्ट्रीय मंत्री अध्यक्ष जीवन प्रकाश योजना)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली- 110 001 से प्रकाशित